0+2

Saurabh Rastogi
IX C

संस्कृत व्याकरण

डॉ॰ परमानन्द गुप्त

10+2

संस्कृत व्याकरण

प्रथम खण्ड

(नवम कक्षा के लिए)

(According to the latest Bifurcated Syllabi of C.B.S.E. and A.I.C.B.S.E.)

डा० परमानन्द गुप्त
रीडर, संस्कृत विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र

1986

प्रकाशक :

लक्ष्मी पब्लिकेशंज़

दिल्ली : नई दिल्ली : मद्रास : जालन्धर शहर

प्रकाशक :
लक्ष्मी पब्लिकेशंज़
2691, बारादरी, बल्लीमारान,
दिल्ली-110006.

फोन : {291 58 75
27 53 28

शाखाएँ :
7/21, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
37-A, मोतीलाल स्ट्रीट, टी० नगर, मद्रास।
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

नया संस्करण : अप्रैल, 1986

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित हैं।

मूल्य : 12 00 रुपये

मुद्रक :
नितिन प्रिंटिंग प्रेस
A 12/32C, विजय मोहल्ला, गली नं० 14,
मौजपुर (घोंडा), दिल्ली-53.

प्राक्कथन

सैण्ट्रल बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन तथा आल इण्डिया बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन के 10+2 के पाठ्यक्रम पर आधारित प्रस्तुत पुस्तक संस्कृत व्याकरण प्रथम खण्ड हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों माध्यमों से परीक्षा देने वाले नवम कक्षा के छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी है। इस पुस्तक में पूरे प्रश्नपत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन किया गया है। प्रारम्भ में व्याकरण भाग है जिसमें वर्ण-विभाजन, सन्धिनियम, शब्दरूप तथा उनके वाक्य प्रयोग, धातुरूप तथा उनके वाक्य प्रयोग हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि परीक्षार्थी को किसी भी प्रकार से प्रश्न पूछे जाने पर उत्तर देने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई का अनुभव न हो। व्याकरण भाग के लिए पाठ्यक्रम में केवल 25 अंक निर्धारित हैं। शेष 25 अंकों के लिए आवश्यक सामग्री की अपेक्षा को पूर्ण करने हेतु हिन्दी तथा अंग्रेजी के सरल अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद, साधारणपत्रों एवं प्रार्थनापत्रों को भी इस एक पुस्तक में उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है ताकि प्रश्नपत्र के प्रथम खण्ड को तैयार करने के लिए छात्र एकमात्र इसी पुस्तक को अपना आधार बना सकें। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास दिया गया है जिसमें अन्य प्रश्नों के अतिरिक्त गत वर्षों में परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों को भी सम्मिलित किया गया है।

आशा है कि यह पुस्तक छात्रों की सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूर्ण कर पाएगी तथा संस्कृत के अध्ययन के प्रति उनकी रुचि में भी वृद्धि करने में सहायक सिद्ध होगी। अध्यापक एवं आचार्यगण योग्य परामर्श देकर लेखक को अनुगृहीत करने की कृपा करें ताकि आगामी संस्करणों को और भी उपयोगी बनाया जा सके।

अन्त में मैं यह बताना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि इस पुस्तक में दिए गए पत्रों एवं प्रार्थनापत्रों आदि के लेखन में मेरी सहायता श्री सत्यदेव जी वर्मा, यमुनानगर ने की है जिनका मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

—परमानन्द गुप्त

अनुक्रमणिका

(क) व्याकरण भाग
(Grammar)

1. वर्ण परिचय तथा उच्चारण-स्थान (Alphabet and Organs of Speech) 1

2. सन्धि प्रकरण (Combination of Letters) 9

3. शब्द-रूप (Declension) 35

4. धातु-रूप (Conjugation) 72

(ख) अनुवाद-विधि (Translation) 121
सरल अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद

(ग) पत्र-लेखन (Letter Writing) 149
साधारण-पत्र एवं प्रार्थना-पत्र

परिशिष्ट 171
व्यावहारिक शब्द-कोष
(Practical Vocabulary)

सैकेण्डरी स्कूल परीक्षा 1985-86

पाठ्यक्रम

(कक्षा 9, खण्ड क, अंक 50)

1. व्याकरण अंक 25

(क) स्वर और व्यञ्जन का सार तथा उसके उच्चारण स्थान। 3

(ख) सन्धि नियम व सन्धि की परिभाषा। 6

(*i*) स्वर-सन्धि, दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् एवं अयादि।

(*ii*) व्यञ्जन-सन्धि, श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार।

(*iii*) विसर्ग-सन्धि, सत्व, उत्व, रुत्व, लोप।

(ग) शब्द-रूप 8

(*i*) स्वरान्त—बालक, फल, रमा, कवि, पति, वारि, नदी, शिशु, धेनु, मधु, वधु, पितृ, मातृ आदि।

(*ii*) व्यंजनान्त—राजन्, गच्छत्, भवत्, आत्मन्, विद्वस्, चन्द्रमस्, सम्राज्, वाच्।

(*iii*) सर्वनाम—सर्व, यत्, तत्, किम्, इदम्, (सभी लिङ्गों में), अस्मद्, युष्मद्।

(*iv*) संख्यावाचक शब्द—एक से दशम् तक।

(घ) धातु-रूप (निर्धारित पाँच लकार—लट्, लृट्, लोट्, लङ् व विधिलिङ्) 8

परस्मैपद—भू, पठ्, गम्, लिख्, पा, स्था, दृश्, अस्, भक्ष, कथ्, घ्रा, क्रुध्, हन्, श्रु, नृत्, तुद्, स्पृश्, चुर्, कथ्।

आत्मनेपद—लभ्, मुद्, याच्, सेव्।

उभयपद—कृ, हृ, ज्ञा, ग्रह्, शक् दा।

2. हिन्दी अथवा अंग्रेजी के सरल अनुच्छेदों का संस्कृत में अनुवाद। 15

3. संस्कृत में साधारणपत्र व प्रार्थनापत्र। 10

1

वर्ण परिचय तथा उच्चारण-स्थान

(ALPHABET AND ORGANS OF SPEECH)

वर्ण (Letter)

भावाभिव्यक्ति का प्रमुख साधन भाषा (Language) होती है। भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण या अक्षर (Letter) कहते हैं। वर्ण समुदाय को वर्णमाला (Alphabet) कहते हैं।

वर्ण की परिभाषा (Definitoin of Letter)

वर्ण उस छोटी-से-छोटी ध्वनि को कहते हैं जिसके फिर टुकड़े नहीं किए जा सकते। जैसे अ, इ, क्, प् इत्यादि।

विशेष--1. वर्ण या अक्षर भाषा की मूल ध्वनियाँ होती हैं। जैसे 'गच्छति' पद में ग्, अ, च्, छ्, अ, त् तथा इ—ये सात मूल ध्वनियाँ हैं जो वर्ण या अक्षर कहलाती हैं।

2. विशिष्ट वर्णों के समूह को पद कहते हैं, जैसे 'गच्छति' एक पद है। विशिष्ट पदों के समूह का नाम वाक्य है, जैसे—'रामः गृहं गच्छति' रामः, गृहं तथा गच्छति तीन पदों से मिलकर बना एक वाक्य है। भावों की अभिव्यक्ति प्रायः वाक्यों के द्वारा ही होती है।

3. वर्णों का उच्चारण मुख के जिह्वा, कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ तथा नासिक आदि भागों की सहायता से किया जाता है।

वर्ण के भेद (Types of Letters)

वर्ण दो प्रकार के होते हैं :

1. स्वर=अच् (Vowels)
2. व्यञ्जन=हल् (Consonants)

1. स्वर (Vowels)

स्वर या अच् वे ध्वनियाँ हैं जिनका उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना हो सकता है। स्वर का अर्थ है ऐसा अक्षर जिसका उच्चारण स्वयं होता है।

संस्कृत भाषा में सामान्यतः निम्न तेरह (13) स्वर पाए जाते हैं :

अ (a), आ (ā), इ (i), ई (ī), उ (u), ऊ (ū), ऋ (ṛ), ॠ ($\bar{ṛ}$), ऌ (ḷ), ए (e), ऐ (ai), ओ (o), औ (au).

स्वरों का वर्गीकरण (Classification of Vowels)

उच्चारण काल या मात्रा के आधार पर स्वर तीन प्रकार के होते हैं :

1. **ह्रस्व** (Short)—इनके उच्चारण में केवल एक मात्रा का समय (One Unit of Time) लगता है। ह्रस्व स्वर ये हैं—अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

ये पाँचों **मूलस्वर** भी कहलाते हैं तथा इनके उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है।

2. **दीर्घ** (Long)—इन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगना अर्थात् दो मात्राओं का समय (Two Units of Time) लगता है। दीर्घ स्वर ये हैं—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

विशेष—(क) उपर्युक्त दीर्घ स्वरों में प्रथम चार (आ, ई, ऊ तथा ॠ) का उच्चारण क्रमशः अ, इ, उ तथा ऋ के उच्चारण में दुगना समय लगाने मात्र से हो जाता है।

(ख) शेष चार स्वर (ए, ऐ, ओ, औ) **संयुक्त, मिश्र** या **सन्धि-स्वर** (Diphthongs) कहलाते हैं। ये दो भिन्न-भिन्न स्वरों के मेल से बनते हैं। जैसे—

अ + इ = ए
अ + उ = ओ
अ + ए = ऐ
अ + ओ = औ

3. **प्लुत** (Potracted)—जब किसी को दूर से पुकारते हैं तो अन्तिम स्वर को खींचकर लम्बा कर देते हैं तथा उसके उच्चारण में दो से अधिक मात्राओं का समय लगता है। प्लुत स्वरों को दिखाने के लिए तीन मात्राओं का द्योतक '३' का अंक प्रयोग में लाया जाता है। जैसे ओ३म् में ओ३ प्लुत स्वर है।

विशेष—(क) प्लुत स्वरों की संख्या नौ (9) है—अ३, इ३, उ३, ऋ३, ऌ३, ए३, ऐ३, ओ३ और औ३। ह्रस्व दीर्घ तथा प्लुत सबको मिलाने से संस्कृत भाषा के स्वरों की संख्या 22 (5 ह्रस्व, 8 दीर्घ, 9 प्लुत) हो जाती है। प्रायः ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरों का ही अधिक प्रयोग होने से स्वरों की संख्या 13 मानी जाती है।

(ख) उपर्युक्त सभी स्वर अनुनासिक हैं क्योंकि इनके उच्चारण में नासिका की सहायता नहीं ली जाती, किन्तु उपर्युक्त स्वरों के उच्चारण में मुख के अन्य भागों के अतिरिक्त नासिका का भी उपयोग करने से ये सभी स्वर अनुनासिक स्वर बन जाते हैं। जैसे—अँ (सँव्वत्सर), इँ, उँ इत्यादि। अनुनासिक के लिए अर्धचन्द्र और बिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाता है।

2. व्यञ्जन (Consonants)

जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्ण (अर्थात् स्वर) की सहायता के सहज में उच्चरित न हो सकें उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। व्यञ्जन वर्ण ये हैं :

क् (k), ख् (kh), ग् (g), घ् (gh), ङ् (ṅ)
च् (ch), छ् (chh), ज् (j), झ् (jh), ञ् (ñ)
ट् (ṭ), ठ् (ṭh), ड् (ḍ), ढ् (ḍh), ण् (ṇ)
त् (t), थ् (th), द् (d), ध् (dh), न् (n)
प् (p), फ् (ph), ब् (b), भ् (bh), म् (m)
य् (y), र् (r), ल् (l), व् (v)
श् (ś), ष् (ṣ), स् (s), ह् (h)

ऊपर जो व्यञ्जन दिए गए हैं वे स्वर-रहित हैं। इनके स्वर-रहित स्वरूप को बताने के लिए इनके नीचे हल् का चिह्न (्) लगाया जाता है, जब इनके साथ किसी स्वर का मेल हो जाता है तो हल् का चिह्न हट जाता है तथा इनके साथ स्वरों की मात्रा का संयोग हो जाता है। जैसे—

मात्राएँ

क् + अ = क + 0 = क (ka)
क् + आ = क + ा = का (kā)
क् + इ = क + ि = कि (ki)
क् + ई = क + ी = की (kī)
क् + उ = क + ु = कु (ku)
क् + ऊ = क + ू = कू (kū)
क् + ऋ = क + ृ = कृ (kṛ)
क् + ॠ = क + ॄ = कॄ (kṝ)
क् + ॡ = क + ॣ = क्लृ (kḷ)
क् + ए = क + े = के (ke)
क् + ऐ = क + ै = कै (kai)
क् + ओ = क + ो = को (ko)
क् + औ = क + ौ = कौ (kau)

व्यञ्जनों का वर्गीकरण (Classification of Consonants)

उच्चारण की विविधता के आधार पर व्यञ्जनों के निम्न तीन भेद हैं :

1. **स्पर्श** (Mute)—जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भाग का स्पर्श करती है तथा वायु कुछ क्षण के लिए रुक कर झटके के साथ बाहर निकलती है उन्हें स्पर्श (Mute) कहते हैं। 'क्' से 'म्' तक के 25 व्यञ्जन 'स्पर्श' कहलाते हैं। इन्हें निम्न पाँच वर्गों में बाँटा गया है :

(*i*) कवर्ग (कु)—क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

(*ii*) चवर्ग (चु)—च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

(*iii*) टवर्ग (टु)—ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

(*iv*) तवर्ग (तु)—त्, थ्, द्, ध्, न्

(*v*) पवर्ग (पु)—प्, फ्, ब्, भ्, म्

2. अन्तःस्थ (Semi Vowels)—जिन वर्णों का उच्चारण करने के लिए वायु को थोड़ा रोककर कम शक्ति के साथ छोड़ा जाता है, इन्हें अन्तःस्थ (Semi Vowels) कहते हैं। ये स्वर तथा व्यञ्जनों के मध्य (अन्तः) में स्थित हैं। इनकी संख्या चार है—य्, र्, ल्, व्। इन वर्णों को यण् भी कहा जाता है।

3. ऊष्म (Sibilants)—जिन वर्णों का उच्चारण करने के लिए वायु को धीरे-धीरे रोककर रगड़ के साथ निकाल दिया जाता है, उन्हें ऊष्म या घर्षक कहते हैं। इनकी संख्या भी चार है—श्, ष्, स्, ह्।

विशेष—उपर्युक्त वर्णों के अतिरिक्त निम्न चार वर्णों का प्रयोग भी संस्कृत में होता है तथा इन्हें अयोगवाह कहा गया है :

(*i*) अनुस्वार (ं)—अनुस्वार (ṁ) किसी स्वर के बाद न् या म् के स्थान पर आता है। जैसे—'गृहं गच्छति' में 'गृहम्' के 'म्' के स्थान पर उसके पूर्ववर्ती 'अ' स्वर के साथ अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

(*ii*) विसर्ग (:)—विसर्ग (ḥ) का प्रयोग किसी स्वर के बाद होता है तथा इसका पृथक् उच्चारण होता है। यह र् तथा स् के स्थान पर आता है। जैसे—नरः, हरिः, साधुः इत्यादि।

(*iii*) जिह्वामूलीय (× क्, × ख्)—क् तथा ख् से पूर्व अर्ध-विसर्ग के समान जिह्वामूलीय का प्रयोग होता है।

(*iv*) उपध्मानीय (⁀प्, ⁀फ्)—प् तथा फ् के पूर्व अर्ध-विसर्ग सदृश चिह्न को उपध्मानीय कहते हैं।

उच्चारण-स्थान
(Organs of Speech)

मुख के वे भाग जिनका प्रयोग वर्णों के उच्चारण हेतु किया जाता है, वर्णों के उच्चारण-स्थान कहलाते हैं।

वर्णों का उच्चारण करते समय वायु मुख के जिन भागों से टकरा कर बाहर निकलती है तथा जिह्वा मुख के जिन भागों का स्पर्श करती है अथवा जिन भागों के पास जाकर मुड़ती है और वायु को रोकती है, मुख के वे सब भाग वर्णों के उच्चारण-स्थान कहलाते हैं। वे स्थान ये हैं :

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका, कण्ठतालु, कण्ठोष्ठ, दन्तोष्ठ।

1. कण्ठ (Throat)—अ, आ, कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह् तथा विसर्ग का उच्चारण-स्थान कण्ठ है। (**अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः**)। कण्ठ से बोले जाने वाले इन वर्णों को **कण्ठ्य** (Gutteral) कहा जाता है। इन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा कण्ठ का स्पर्श करती है।

2. तालु (Palate)—इ, ई, चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य् तथा श् का उच्चारण-स्थान तालु है (**इचुयशानां तालुः**)। तालु से बोले जाने वाले इन वर्णों को **तालव्य** (Palatals) कहा जाता है। इनके उच्चारण में जिह्वा मुख के ऊपरी चिकने भाग 'तालु' का स्पर्श करती है।

3. मूर्धा (Roof of the Mouth)—ऋ, ॠ, टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र्, ष् का उच्चारण-स्थान मूर्धा है। मूर्धा से बोले जाने वाले वर्णों को **मूर्धन्य** (Cerebrals or Linguals) कहा जाता है (**ऋटुरषाणां मूर्धा**)। इनके उच्चारण में जिह्वा ऊपर के दाँतों के साथ वाले खुरदरे भाग 'मूर्धा' में स्पर्श करती है।

4. दन्त (Teeth)—लृ, तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल्, स्, का उच्चारण-स्थान दन्त है (**लृतुलसानां दन्तः**)। इन वर्णों को **दन्त्य** (Dentals) कहा जाता है। इनके उच्चारण में जिह्वा दाँतों में लगती है।

5. ओष्ठ (Lips)—उ, ऊ तथा पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) तथा उपध्मानीय का उच्चारण-स्थान ओष्ठ है (**उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ**)। इन वर्णों को **ओष्ठ्य** (Labials) कहा जाता है। इनके उच्चारण में जिह्वा के सहयोग से दोनों ओष्ठ परस्पर मिल जाते हैं।

6. नासिका (Nose)—ङ्, ञ्, ण्, न्, म् तथा अनुस्वार का उच्चारण-स्थान नासिका भी है (**ञमङणनानां नासिका**)। इन वर्णों को **नासिक्य** (Nasals) भी कहा जाता है। इनके उच्चारण में क्रमशः कण्ठ, मूर्धा, तालु, दन्त, ओष्ठ—इन पांच स्थानों पर स्पर्श से उत्पन्न होने वाली ध्वनियों के साथ नासिका से उत्पन्न ध्वनि भी मिल जाती है।

7. कण्ठतालु—ए, ऐ का उच्चारण-स्थान कण्ठतालु है तथा इन्हें **कण्ठतालव्य** कहा जाता है। अ तथा इ के संयोग से ए एवं अ तथा ए के संयोग से ऐ बने हैं, अतः इनके उच्चारण में कण्ठ और तालु दोनों का उपयोग होता है (**एदैतोः कण्ठतालु**)।

8. कण्ठोष्ठ—ओ (अ+उ) तथा औ (अ+ओ) का उच्चारण-स्थान कण्ठोष्ठ है, इसलिए इन वर्णों को **कण्ठोष्ठ्य** भी कहा जाता है (**ओदौतोः कण्ठोष्ठम्**)।

9. दन्तोष्ठ—'व' का उच्चारण-स्थान दन्तोष्ठ है तथा इसे **दन्तोष्ठ्य** कहा जाता है (**वकारस्य दन्तोष्ठम्**) तथा इसके उच्चारण के समय जिह्वा दाँतों में लगती है और होंठ भी कुछ मुड़ते हैं।

10. जिह्वामूल—जिह्वामूलीय का उच्चारण-स्थान जिह्वा का मूल भाग है (**जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्**)।

उच्चारण-स्थान तालिका (1)

स्थान	स्वर (13)	व्यञ्जन स्पर्श (25)	अन्तःस्थ (4)	ऊष्म (4)	अयोगवाह (4)	संज्ञा
कण्ठ	अ, आ	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्		ह्	:	कण्ठ्य
तालु	इ, ई	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	य्	श्		तालव्य
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	र्	ष्		मूर्धन्य
दन्त	ऌ	त्, थ्, द्, ध्, न्	ल्	स्		दन्त्य
ओष्ठ	उ, ऊ	प्, फ्, ब्, भ्, म्			)(	ओष्ठ्य
नासिका		ङ्, ञ्, ण्, न्, म्			ं	नासिक्य
कण्ठतालु	ए, ऐ					कण्ठतालव्य
कण्ठोष्ठ	ओ, औ					कण्ठोष्ठ्य
दन्तोष्ठ			व्			दन्तोष्ठ्य
जिह्वामूल					×	जिह्वामूलीय

उच्चारण-स्थान तालिका (2)

(Organs of Speech)

a अ	कण्ठ	k क्	कण्ठ	d द्	दन्त
ā आ	,,	kh ख्	,,	dh ध्	,,
i इ	तालु	g ग्	,,	n न्	,,
ī ई	,,	gh घ्	,,	p प्	ओष्ठ
u उ	ओष्ठ	ṅ ङ्	,,	ph फ्	,,
ū ऊ	,,	ch च्	तालु	b ब्	,,
ṛ ऋ	मूर्धा	chh छ्	तालु	bh भ्	,,
ṝ ॠ	,,	j ज्	,,	m म्	,,
ḷ ऌ	दन्त	jh झ्	,,	y य्	तालु
e ए	कण्ठतालु	ñ ञ्	,,	r र्	मूर्धा
ai ऐ	,,	ṭ ट्	मूर्धा	l ल्	दन्त
o ओ	कण्ठोष्ठ	ṭh ठ्	,,	v व्	दन्तोष्ठ
au औ	,,	ḍ ड्	,,	ś श्	तालु
ं ṁ	नासिका	ḍh ढ्	,,	ṣ ष्	मूर्धा
: ḥ	कण्ठ	ṇ ण्	,,	s स्	दन्त
× ḥ	जिह्वामूल	t त्	दन्त	h ह्	कण्ठ
)(ḥ	ओष्ठ (उपध्मानीय)	th थ्	,,		

अभ्यास (क)

(परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न)

1. निम्नलिखितानां वर्णानामग्रे कोष्ठकेषु द्वे द्वे उच्चारणस्थाने लिखिते, तेषु यानि अशुद्धानि तानि तिर्यक्-रेखया अङ्कयत :

निम्नलिखित वर्णों के आगे कोष्ठकों में दो-दो उच्चारण-स्थान लिखे हैं, उनमें से जो-जो अशुद्ध हैं, उन्हें टेढ़ी रेखा से काट दीजिए :

A set of two organs of speech is given against each of the following letters. Strike off the incorrect ones by means of an oblique line :

(क) (*i*) य् (कण्ठ/तालु);
(*ii*) ष् (मूर्धा/दन्त);
(*iii*) इ (तालु/दन्त);
(*iv*) फ् (तालु/ओष्ठ);
(*v*) ग् (कण्ठ/मूर्धा);
(*vi*) ओ (कण्ठतालु/कण्ठोष्ठ)।

(ख) (*i*) क् (कण्ठ/तालु);
(*ii*) ज् (मूर्धा/तालु);
(*iii*) र् (दन्त/मूर्धा);
(*iv*) स् (ओष्ठ/दन्त);
(*v*) ए (कण्ठोष्ठ/कण्ठतालु);
(*vi*) व् (दन्तोष्ठ/कण्ठोष्ठ)।

(ग) (*i*) ह् (तालु/कण्ठ);
(*ii*) र् (मूर्धा/दन्त);
(*iii*) उ (कण्ठ/ओष्ठ);
(*iv*) म् (नासिका/तालु);
(*v*) व् (कण्ठोष्ठ/दन्तोष्ठ);
(*vi*) ऐ (कण्ठतालु/कण्ठोष्ठ)।

(घ) (*i*) ग् (तालु/कण्ठ);
(*ii*) ष् (दन्त/मूर्धा);
(*iii*) ल् (ओष्ठ/दन्त);
(*iv*) व् (कण्ठ/ओष्ठ);
(*v*) ओ (कण्ठोष्ठ/कण्ठतालु);
(*vi*) न (ओष्ठ/नासिका)।

2. कण्ठस्थानीयान् वर्णान् लिखत।
कण्ठ से उच्चारित वर्णों को लिखें।
Write down the gutterals.

3. स्पर्शाः केचन ?
स्पर्श कौन-कौन-से हैं ?
What are the mutes ?

4. तालुस्थानीयान् अन्तःस्थान् च वर्णान् लिखत।
तालव्य और अन्तःस्थ वर्णों को लिखिए।
Write down the Palatals and semi-vowels.

अभ्यास (ख)

(अन्य प्रश्न)

5. निम्नलिखित वर्गों में से किन्हीं चार-चार वर्णों का उच्चारण-स्थान लिखिए :

(क) इ, क्, ष्, द्, भ्, ण् ।
(ख) अ, च, ट्, त्, प्, न् ।
(ग) आ, ओ, ट्, म्, च्, न् ।
(घ) इ, उ, क्, र्, स्, व् ।
(ङ) अ, फ्, श्, ज्, त्, क् ।
(च) औ, स्, चं्, ट्, र्, व् ।
(छ) आ, ट्, च्, न्, क्, म् ।
(ज) अ, ए, ऋ ज्, द्, प् ।

6. नासिक्याः केचन ?
नासिक्य कौन-कौन-से हैं ?
What are the nasals ?

7. स्पर्शानाम् उच्चारणस्थानानि लिखत ।
स्पर्शों के उच्चारण-स्थान लिखिए ।
Write down the organs of speech of mutes.

8. ऊष्माः केचन ?
ऊष्मा कौन-कौन-से हैं ?
What are the sibilants ?

9. स्वर-भेदान् दर्शयत ।
स्वरों के भेद दिखाइए ।
Write down the different types of vowels.

10. निम्नलिखितेषु केषांचित् त्रयाणाम् उच्चारणस्थानानि लिखत :
निम्नलिखित में से किन्हीं तीन वर्णों के उच्चारण स्थान लिखें :
Write down the place of origin of any three of the following :
अ, श्, ल्, प्, व ।

—o—

2

सन्धि प्रकरण

(COMBINATION OF LETTERS)

अत्यन्त समीपवर्ती दो वर्णों के मेल को सन्धि (Combination of Letters) कहते हैं। जैसे 'विद्यालयः' में विद्या व आलयः पदों के दो अत्यन्त समीपवर्ती आ वर्णों का मेल होकर एक आ हो गया है। सन्धि को संहिता भी कहते हैं।

सन्धि के नियम

निकट होने के कारण दो वर्णों में कभी सुविधा की दृष्टि से तो कभी शीघ्रता के परिणामस्वरूप परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन कई प्रकार का होता है, जैसे—

(1) कभी दोनों के स्थान पर एक नया वर्ण बन जाता है:
रमा+ईशः=रमेशः
(आ तथा ई के मेल से ए एक नया वर्ण बन गया है।)

(2) कभी पूर्व वर्ण में परिवर्तन होता है:
इति+आदि=इत्यादि
(इति के अन्तिम इ को आ परे होने पर य् हो गया है।)

(3) कभी दूसरे वर्ण का लोप (पूर्वरूप) हो जाता है:
वने+अत्र=वनेऽत्र
(ए और अ का मेल होने पर अ का पूर्वरूप हो गया।)

(4) कभी पहले वर्ण का लोप (पररूप) हो जाता है:
प्र+एजते=प्रेजते
(अ और ए का मेल होने पर अ का पररूप हो गया।)

(5) कभी दोनों वर्णों के बीच में एक नया वर्ण आ जाता है:
गज+छाया=गजच्छाया
(अ और छ के बीच में नया वर्ण 'च्' आ गया है।)

(6) कभी किसी वर्ण को द्वित्व हो जाता है:
पठन्+आलपति=पठन्नालपति
(न् को द्वित्व हो गया है।)

व्याकरण में इस तरह के परिवर्तनों को देखकर कुछ नियम निश्चित कर दिए गए हैं जिन्हें सन्धि के नियम (Rules of Sandhi) कहते हैं।

सन्धि की नित्यता

वाक्य के पदों में सन्धि वक्ता की इच्छा पर निर्भर रहती है, किन्तु एक पद के अन्दर, उपसर्ग और धातु में, तथा समस्त पद में आने वाले वर्णों में यदि सन्धि बन रही हो तो सन्धि नित्य होती है :

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

उदाहरण के रूप में एक पद होने के कारण भो+अति में नित्य सन्धि होकर 'भवति' रूप बन जाएगा, उप-उपसर्ग तथा अहसत् धातुरूप मिलकर 'उपाहसत्' रूप बन जायेगा एवं पीत+अम्बरः का समस्त पद सन्धियुक्त 'पीताम्बरः' बनेगा। वाक्य में वक्ता 'रामः गच्छति' तथा 'रामो गच्छति' दोनों तरह से कह सकता है।

सन्धि के भेद
(Types of Sandhi)

सन्धि निम्न तीन प्रकार की होती हैं :

1. स्वर-सन्धि या अच् सन्धि (Combination of Vowels)

यदि दो समीपस्थ स्वरों में परिवर्तन हो तो उसे स्वर-सन्धि कहते हैं। जैसे—रजनी+ईशः=रजनीशः (यहाँ ई तथा ई दोनों स्वरों में सन्धि की गई है)।

2. व्यंजन-सन्धि या हल् सन्धि (Combination of Consonants)

यदि दो व्यंजनों में सन्धि की जाती है तो उसे व्यंजन-सन्धि कहेंगे। जैसे—जगत्+जननी=जगज्जननी (यहाँ त् तथा ज् व्यंजनों में सन्धि की गई है)। यदि पहला वर्ण व्यंजन हो और दूसरा वर्ण स्वर, तो व्यंजन में परिवर्तन होने के कारण इसे भी व्यंजन-सन्धि ही कहा जाता है, जैसे—जगत्+ईशः=जगदीशः (यहाँ त् व्यंजन तथा ई स्वर में सन्धि की गई है)।

3. विसर्ग-सन्धि (Visarga Sandhi)

यदि पहला वर्ण विसर्ग है और बाद का वर्ण स्वर अथवा व्यंजन में से कोई भी है, तब विसर्ग में परिवर्तन होने के कारण इसे विसर्ग-सन्धि कहा जाता है। जैसे—रामः+उवाच=राम उवाच। रामः+वदति=रामो वदति (यहाँ पहले उदाहरण में विसर्ग का लोप, दूसरे उदाहरण में विसर्ग का उ हो जाता है)।

स्वर-सन्धि के भेद
(Types of Vowel Combination)

स्वर-सन्धि के अनेक भेद होते हैं—यथा दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् तथा अयादि इत्यादि।

(क) दीर्घ सन्धि (Dirgha Sandhi)

समान वर्ण परे होने पर अक् (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ) वर्णों के स्थान पर एक समान वर्ण, किन्तु दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ॠ) आदेश हो जाता है।

1. अ से परे अ हो तो दोनों के स्थान पर आ हो जाता है—अ+अ=आ। जैसे—

मुर+अरिः=मुरारिः	क्व+अपि=क्वापि
प्र+अभवत्=प्राभवत्	सुख+अन्तः=सुखान्तः
एक+अक्षरः=एकाक्षरः	शक+अरिः=शकारिः
लाभ+अलाभौ=लाभालाभौ	दैत्य+अरिः=दैत्यारिः
जय+अजयौ=जयाजयौ	सुर+असुराः=सुरासुराः
हिम+अंशुः=हिमांशुः	शश+अंकः=शशांकः

2. अ (ह्रस्व) से परे आ (दीर्घ) हो तो दोनों के स्थान पर आ हो जाता है—अ+आ=आ। जैसे—

देव+आलयः=देवालयः	तव+आशा=तवाशा
पुस्तक+आलयः=पुस्तकालयः	मम+आशा=ममाशा
हिम+आलयः=हिमालयः	तव+आदरः=तवादरः
शिव+आलयः=शिवालयः	परम+आनन्दः=परमानन्दः
घन+आदेशः=घनादेशः	पद्म+आकरः=पद्माकरः
रत्न+आकरः=रत्नाकरः	राम+आश्रयः=रामाश्रयः

3. आ (दीर्घ) से परे अ (ह्रस्व) हो तो दोनों के स्थान पर आ हो जाता है—आ+अ=आ। जैसे—

तथा+अपि=तथापि	विद्या+अरण्यः=विद्यारण्यः
सा+अपि=सापि	महा+अर्घः=महार्घः
विद्या+अर्थी=विद्यार्थी	सीता+अस्ति=सीतास्ति
महा+असुरः=महासुरः	लता+अत्र=लतात्र
रमा+अगच्छत्=रमागच्छत्	का+अद्य=काद्य

4. आ (दीर्घ) से परे आ (दीर्घ) हो तो दोनों के स्थान पर आ (दीर्घ) हो जाता है—आ+आ=आ। जैसे—

घोरा+आकृतिः=घोराऽऽकृतिः (घोराकृतिः)

सीता+आगता=सीतागता	विद्या+आलयः=विद्यालयः
दया+आनन्दः=दयानन्दः	महा+आशयः=महाशयः
विद्या+आतुरः=विद्यातुरः	सुधा+आकरः=सुधाकरः

5. इ (ह्रस्व) के बाद इ (ह्रस्व) होने पर दोनों को मिलाकर दीर्घ ई हो जाता है—इ+ई=ई। जैसे—

इति + इव = इतीव
मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः
कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः
रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
अभि + इष्टः = अभीष्टः

6. इ (ह्रस्व) के परे ई (दीर्घ) होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ ई हो जाता है—इ + ई = ई। जैसे—

मुनि + ईशः = मुनीशः
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
कपि + ईशः = कपीशः
अभि + ईप्सितम् = अभीप्सितम्
अपि + ईक्षते = अपीक्षते
परि + ईक्षा = परीक्षा
क्षिति + ईशः = क्षितीशः
कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः

7. ई (दीर्घ) के परे इ (ह्रस्व) होने पर दोनों के स्थान में दीर्घ ई होता है—ई + इ = ई। जैसे—

लक्ष्मी + इन्द्रः = लक्ष्मीन्द्रः
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः
नदी + इव = नदीव
देवी + इयम् = देवीयम्
राज्ञी + इह = राज्ञीह
महती + इच्छा = महतीच्छा

8. ई (दीर्घ) के परे ई (दीर्घ) हो तो भी दोनों के स्थान पर ई (दीर्घ) आदेश हो जाता है—ई + ई = ई। जैसे—

श्री + ईशः = श्रीशः
लक्ष्मी + ईश्वरः = लक्ष्मीश्वरः
मही + ईशः = महीशः

9. उ (ह्रस्व) के परे उ (ह्रस्व) होने पर दोनों के स्थान पर ऊ (दीर्घ) आदेश हो जाता है—उ + उ = ऊ। जैसे—

भानु + उदयः = भानूदयः
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
इन्दु + उदयः = इन्दूदयः
सु + उक्तिः = सूक्तिः
पृथु + उदकः = पृथूदकः
लघु + उपदेशः = लघूपदेशः

10. उ (ह्रस्व) के परे ऊ (दीर्घ) होने पर दोनों के स्थान पर ऊ (दीर्घ) आदेश हो जाता है—उ + ऊ = ऊ। जैसे—

लघु + ऊर्मि = लघूर्मिः
सिन्धु + ऊर्मिः = सिन्धूर्मिः
साधु + ऊचुः = साधूचुः
विधु + ऊर्ध्वम् = विधूर्ध्वम्

11. ऊ (दीर्घ) के परे उ (ह्रस्व) होने पर दोनों के स्थान पर ऊ (दीर्घ) हो जाता है—ऊ + उ = ऊ। जैसे—

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः
वधू + उपदेशः = वधूपदेशः
वधू + उपरि = वधूपरि
वधू + उक्तिः = वधूक्तिः

12. ऊ (दीर्घ) के परे ऊ (दीर्घ) होने पर दोनों के स्थान पर ऊ (दीर्घ) हो जाता है—ऊ + ऊ = ऊ। जैसे—

भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्
चमू + ऊर्जः = चमूर्जः

13. ऋ, ॠ (ह्रस्व या दीर्घ) से परे ऋ, ॠ (ह्रस्व या दीर्घ) होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ ॠ हो जाता है—ऋ या ॠ+ऋ या ॠ=ॠ। जैसे—

मातृ+ऋणम्=मातॄणम्　　　　पितृ+ऋद्धिः=पितॄद्धिः

विशेष—ऋ से परे यदि लृ हो तो वहाँ भी दोनों के स्थान में दीर्घ ॠ हो जाती है। जैसे—

होतृ+लृकारः=होतॄकारः (होत्लृकारः, होतृलृकारः भी रूप बनता है।)

परन्तु ह्रस्व ऋ से ह्रस्व ऋ के परे होने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ ॠ विकल्प से होती है। जैसे—

पितृ+ऋणम्=पितॄणम्, पितृणम्।

होतृ+ॠकारः=होतॄकारः, होतृकारः।

दीर्घ-सन्धि अपवाद—

कुल+अटा=कुलटा　　　　मार्त+अण्डः=मार्तण्डः

सीम+अन्तः=सीमन्तः　　　　सार+अङ्गः=सारङ्गः

शक+अन्धु=शकन्धुः　　　　कर्क+अन्धुः=कर्कन्धुः

(ख) गुण सन्धि (Guṅa Sandhi)

अ या आ के अनन्तर ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, लृ आवें तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल्, आदेश हो जाते हैं (अ, ए, ओ गुण स्वर कहलाते हैं इसलिए इस सन्धि को गुण सन्धि कहते हैं)।

1. ह्रस्व अ के बाद ह्रस्व इ परे होने पर दोनों के स्थान पर ए आदेश होता है—अ+इ=ए। जैसे—

नर+इन्द्रः=नरेन्द्रः　　　　तव+इति=तवेति

उप+इन्द्रः=उपेन्द्रः　　　　मम+इव=ममेव

हित+इच्छुः=हितेच्छुः　　　　तस्य+इति=तस्येति

धीर+इन्द्रः=धीरेन्द्रः　　　　वीर+इन्द्रः=वीरेन्द्रः

मृग+इन्द्रः=मृगेन्द्रः

2 ह्रस्व अ के बाद दीर्घ ई परे होने पर दोनों के स्थान पर ए आदेश होता है—अ+ई=ए। जैसे—

नर+ईशः=नरेशः　　　　परम+ईशः=परमेशः

तव+ईशः=तवेशः　　　　मम+ईप्सितम्=ममेप्सितम्

सुर+ईशः=सुरेशः　　　　राम+ईश्वरः=रामेश्वरः

3. दीर्घ आ के पश्चात् ह्रस्व इ होने पर दोनों के स्थान पर ए आदेश होता है—आ+इ=ए। जैसे—

महा+इन्द्रः=महेन्द्रः　　　　सखा+इति=सखेति

रमा+इच्छा=रमेच्छा　　　　सखा+इव=सखेव

रमा + इति = रमेति गंगा + इति = गङ्गेति
यथा + इष्टः = यथेष्टः लता + इव = लतेव

4. दीर्घ आ के परे दीर्घ ई होने पर भी दोनों के स्थान पर ए आदेश होता है—आ + ई = ए। जैसे—

महा + ईशः = महेशः रमा + ईशः = रमेशः
यथा + ईप्सितम् = यथेप्सितम् महा + ईश्वरः = महेश्वरः

5. ह्रस्व अ के परे ह्रस्व उ होने पर दोनों के स्थान में ओ (गुण) आदेश हो जाता है—अ + उ = ओ। जैसे—

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः हित + उपदेशः = हितोपदेशः
नर + उत्तमः = नरोत्तमः पुरुष + उत्तमः = पुरुषोत्तमः
सर्व + उदयः = सर्वोदयः चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः

6. ह्रस्व अ के पश्चात् दीर्घ ऊ होने पर दोनों के स्थान में ओ (गुण) आदेश हो जाता है - अ + ऊ = ओ। जैसे—

जल + ऊर्मिः = जलोर्मिः कृष्ण + ऊरुः = कृष्णोरुः
सुयोधन + ऊरुः = सुयोधनोरुः नव + ऊढा = नवोढा

7. दीर्घ आ के पश्चात् ह्रस्व उ होने पर दोनों के स्थान में ओ (गुण) आदेश हो जाता है—आ + उ = ओ। जैसे—

गंगा + उदकम् = गंगोदकम् परीक्षा + उत्सुकः = परीक्षोत्सुकः
यथा + उच्चकैः = यथोच्चकैः यथा + उचितम् = यथोचितम्

8. दीर्घ आ के पश्चात् दीर्घ ऊ होने पर भी दोनों के स्थान में ओ (गुण) आदेश होता है—आ + ऊ = ओ। जैसे—

महा + ऊरुः = महोरुः गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः
दया + ऊर्मिः = दयोर्मिः

9. ह्रस्व अ से परे ऋ होने पर दोनों के स्थान पर अर् आदेश हो जाता है—अ + ऋ = अर्। जैसे—

कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः देव + ऋषिः = देवर्षिः
वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः
सप्त + ऋषिः = सप्तर्षिः हेमन्त + ऋतुः = हेमन्तर्तुः

10 दीर्घ आ से परे ऋ होने पर भी दोनों के स्थान पर अर् आदेश होता है—आ + ऋ = अर्। जैसे—

महा + ऋषिः = महर्षिः वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः
महा + ऋद्धिः = महर्द्धिः राजा + ऋषिः = राजर्षिः

11. अ (ह्रस्व) के बाद लृ होने पर दोनों के स्थान में अल् आदेश होता है—अ + लृ = अल्। जैसे—

तव + लृकारः = तवल्कारः मम + लृकारः = ममल्कारः

12. दीर्घ आ के बाद लृ होने पर दोनों के स्थानों में अल् आदेश होता है—आ+लृ=अल्। जैसे—

माला+लृकारः=मालल्कारः

गुण सन्धि के अपवाद

अक्ष+ऊहिनी=अक्षौहिणी (न→ण) प्र+ऊढः=प्रौढः
उप+ऋच्छति=उपार्च्छति प्र+ऋच्छति=प्रार्च्छति
सुख+ऋतः=सुखार्तः (तृतीय तत्पुरुष समास होने पर)
दुःख+ऋतः=दुःखार्तः (,,) पिपासा+ऋतः=पिपासार्तः

(ग) वृद्धि सन्धि (Vṛddhi Sandhi)

अ अथवा आ के अनन्तर यदि ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है और यदि ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है। इस सन्धि को वृद्धि सन्धि कहते हैं (ऐ तथा औ वृद्धि स्वर कहलाते हैं) :

1. अ+ए=ऐ
एक+एकशः=एकैकशः कृष्ण+एकत्वम्=कृष्णैकत्वम्
तव+एव=तवैव तेन+एकः=तेनैकः

2. आ+ए=ऐ
तथा+एव=तथैव मया+एव=मयैव
सा+एव=सैव सदा+एव=सदैव
तदा+एव=तदैव

3. अ+ऐ=ऐ
मत+ऐक्यम्=मतैक्यम् देव+ऐश्वर्यम्=देवैश्वर्यम्
इन्द्र+ऐरावती=इन्द्रैरावती परम+ऐश्वर्यम्=परमैश्वर्यम्
राम+ऐश्वर्यम्=रामैश्वर्यम्

4. आ+ऐ=ऐ
महा+ऐरावतः=महैरावतः तथा+ऐश्वर्यम्=तथैश्वर्यम्
धारा+ऐक्यम्=धारैक्यम् महा+ऐश्वर्यम्=महैश्वर्यम्

5. अ+ओ=औ
च+ओघबलात्=चौघबलात् भव+ओषधम् भवौशधम्
जल+ओघः=जलौघः जन+ओघः=जनौघः

6. आ+ओ=औ
महा+ओघः=महौघः विद्या+ओजः=विद्यौजः
महा+ओषधम्=महौषधम् महा+ओषधिः=महौषधिः

7. अ+औ=औ
धर्म+औत्सुक्यम्=धर्मौत्सुक्यम् तव+औदार्यम्=तवौदार्यम्

8. आ+औ=औ

महा+औदार्यम्=महौदार्यम् विद्या+औत्सुक्यम्=विद्यौत्सुक्यम्

वृद्धि सन्धि के अपवाद

प्र+एजते=प्रेजते (पररूप)

उप+ओषति=उपोषति (पररूप)

अधर+ओष्ठः=अधरोष्ठः, अधरौष्ठः

बिम्ब+ओष्ठः=बिम्बोष्ठः, बिम्बौष्ठः

(घ) यण् सन्धि (Change into Semi-vowels)

ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, लृ के अनन्तर कोई असवर्ण स्वर आये तो इ, उ, ऋ, लृ के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल्, (यण्) आदेश हो जाते हैं।

1. इ+असमान वर्ण (इ, ई से भिन्न स्वर)=य्+असमान वर्ण

यदि+अपि=यद्यपि इति+आदि=इत्यादि

इति+उवाच=इत्युवाच इति+ऊचुः=इत्यूचुः

इति+ऋषिः=इत्यृषिः प्रति+एकम्=प्रत्येकम्

मुनि+ऐक्यम्=मुन्यैक्यम् वारि+ओघः=वार्योघः

इति+औदार्यम्=इत्यौदार्यम्

2. ई+असमान वर्ण (इ, ई से भिन्न स्वर)=य्+असमान वर्ण

नदी+अत्र=नद्यत्र

नदी+आकृतिः=नद्याकृतिः

देवी+उवाच=देव्युवाच

पृथ्वी+ऊर्ध्वम्=पृथ्व्यूर्ध्वम्

देवी+ऋद्धिः=देव्यृद्धिः

मही+एका=मह्येका

महती+एषणा=महत्येषणा

देवी+ऐक्यम्=देव्यैक्यम्

गोदावरी+ओघः=गोदावर्योघः

सखी+औदार्यम्=सख्यौदार्यम्

सरस्वती+औत्सुक्यम्=सरस्वत्यौत्सुक्यम्

सुधी+उपास्यः=सुध्युपास्यः

3. उ+असमान वर्ण (उ, ऊ से भिन्न स्वर)=व्+असमान वर्ण

मधु+अरिः=मध्वरिः

अनु+अयः=अन्वयः

गुरु+आदेशः=गुर्वादेशः

सु+आगतम्=स्वागतम्

साधु + इति = साध्विति
रिपु + ईशः = रिप्वीशः
गुरु + ऋद्धिः = गुर्वृद्धिः
गच्छतु + एकः = गच्छत्वेकः
अनु + एषणम् = अन्वेषणम्
गुरु + एकत्वम् = गुर्वेकत्वम्
धेनु + ऐश्वयम् = धेन्वैश्वयम्
सिन्धु + ओघः = सिन्ध्वोघः
शत्रु + औदार्यम् = शत्र्वौदार्यम्

4. ऊ + असमान वर्ण (उ, ऊ से भिन्न स्वर) = व् + असमान वर्ण
वधू + आदेशः = वध्वादेशः
चमू + आगमनम् = चम्वागमनम्
वधू + आज्ञा = वध्वाज्ञा

5. ऋ + असमान वर्ण (ऋ, ॠ से भिन्न स्वर) = र् + असमान वर्ण
भ्रातृ + अंशः = भ्रात्रंशः
मातृ + अंशः = मात्रंशः
मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा
पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा
दातृ + ईशः = दात्रीशः
धातृ + औदार्यम् = धात्रौदार्यम्

6. लृ + असमान वर्ण (लृ से भिन्न स्वर) = ल् + असमान वर्ण
लृ + आकृतिः = लाकृतिः
लृ + आकारः = लाकारः

(ङ) अयादि सन्धि (Change into अय् etc.)

ए, ओ, ऐ, औ (एच्) के अनन्तर कोई भी स्वर (अच्) हो तो ए, ओ, ऐ, औ (एच्) के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् (अयादि) हो जाते हैं।

1. ए + कोई स्वर = अय् + कोई स्वर :
ने + अति = न् + अय् + अति = नयति
हरे + ए = हर् + अय् + ए = हरये

2. ओ + कोई स्वर = अव् + कोई स्वर :
भो + अति = भ् + अव् + अति = भवति
पो + अनः = प् + अव् + अनः = पवनः
विष्णो + ए = विष्ण् + अव् + ए = विष्णवे

3. ऐ + कोई स्वर = आय् + कोई स्वर :
नै + अकः = न् + आय् + अकः = नायकः
ग्लै + अति = ग्ल् + आय् + अति = ग्लायति

4. औ + कोई स्वर = आव् + कोई स्वर :
(न् को ण् भी हो जाता है)

रौ+अनः=र्+आव्+अनः=रावणः
पौ+अकः=प्+आव्+अकः=पावकः
द्वौ+अपि=द्व्+आव्+अपि=द्वावपि
नौ+इकः=न्+आव्+इकः=नाविकः
भौ+उकः=भ्+आव्+उकः=भावुकः

उपर्युक्त अयादि सन्धि के अन्तर्गत एक और नियम आता है जिसके अनुसार किसी पद के अन्त में य्, व् हों और उनसे ठीक पहले अ या आ हो और बाद में अश् (=सभी स्वर ह्, य्, र्, ल्, व्, वर्गों के तीसरे, चौथे तथा पांचवें वर्ण) हों तो य् और व् का लोप हो जाता है किन्तु यह लोप विकल्प से होता है। जैसे—

हरे+इह=हर्+अय्+इह (अयादेश)=हर्+अ+इह=हर इह, हरयिह
अस्यै+इमानि=अस्या इमानि या अस्यायिमानि
ते+आगच्छन्ति=त आगच्छन्ति या तयागच्छन्ति
श्रियै+उत्सुकः=श्रिया उत्सुकः या श्रियायुत्सुकः
द्वौ+अपि=द्वा अपि या द्वावपि
वटो+ऋक्षः=वट ऋक्षः या वटवृक्षः
गुरो+आयाहि=गुर आयाहि या गुरवायाहि
ऋतौ+अन्नम्=ऋता अन्नम् या ऋतावन्नम्
रात्रौ+आगतः=रात्रा आगतः या रात्रावागतः

किन्तु यदि ओ या औ के अनन्तर ऐसा प्रत्यय हो जिसका आदि वर्ण य् हो तो ओ, औ के स्थान पर अव्, आव् हो जाते हैं। जैसे—

गो+यम्=गव्यम् नौ+यम्=नाव्यम्

(च) पूर्वरूप सन्धि

यह अयादि सन्धि का अपवाद है। इसके अनुसार पदान्त (पद के अन्त) में ए या ओ होने पर और उसके बाद ह्रस्व अ होने पर अयादि सन्धि का नियम लागू नहीं होता अपितु अ को पूर्वरूप हो जाता है। पूर्वरूप होने पर वह अ पहले शब्द के अन्तिम स्वर में बिना परिवर्तन के मिल जाता है तथा उसकी सूचना मात्र के लिए ऽ (अवग्रह) चिह्न लगा दिया जाता है। जैसे—

हरे+अव=हरेऽव (हे हरि, रक्षा कीजिए)
को+अत्र=कोऽत्र (यह कौन है?)
अरण्ये+अगच्छत्=अरण्येऽगच्छत् (वन में गया)

(छ) पररूप सन्धि

यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद ऐसी धातु आये जिसके आदि में ए, ओ हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ (पररूप) हो जाता है। जैसे—

प्र+एषयति=प्रेषयति
अव+ओषति=अवोषति

(ज) प्रकृतिभाव

जहाँ सन्धि हो सकती हो किन्तु वहाँ सन्धि न की जाए तो उसे प्रकृतिभाव कहते हैं। प्लुत स्वर और प्रगृह्य संज्ञा वाले वर्णों के अनन्तर यदि कोई स्वर हो तो प्रकृतिभाव होता है। वहाँ सन्धि नहीं होती। प्रगृह्य संज्ञा के लिए नीचे पाँच नियम दिए जाते हैं :

(*i*) द्विवचन के ई, ऊ, ए की प्रगृह्य संज्ञा होती है। यह नियम सुबन्त (शब्द-रूप) व तिङन्त (धातु-रूप) सब पर लागू होता है। जैसे—

कवी + इमौ = कवी इमौ
गिरी + एतौ = गिरी एतौ
साधू + आगच्छताम् = साधू आगच्छताम्
विष्णू + एतौ = विष्णू एतौ — गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू
पचेते + इमौ = पचेते इमौ — लते + एते = लते एते
सेवेते + एतौ = सेवेते एतौ — फले + अवपततः = फले अवपततः

(*ii*) अदस् शब्द के अमी या अमू रूपों की भी प्रगृह्य संज्ञा होती है। जैसे—

अमी + ईशाः = अमी ईशाः (ये स्वामी हैं)
अमी + आहूतवन्तः = अमी आहूतवन्तः (इन सबने बुलाया)
अमू + आगच्छतः = अमू आगच्छतः (ये दोनों आते हैं)

(*iii*) एक स्वर वाले अव्ययों (इ, उ आदि) की प्रगृह्य संज्ञा होती है, किन्तु आङ् की प्रगृह्य संज्ञा नहीं होती। जैसे—

इ + इन्द्र = इ इन्द्रः — उ + उमेशः = उ उमेशः

(*iv*) ओकारान्त अव्यय की भी प्रगृह्य संज्ञा होती है। जैसे—

अहो + ईशाः = अहो ईशाः

(*v*) सम्बोधन के ओ की विकल्प से प्रगृह्य संज्ञा होती है। जैसे—

शम्भो + आयाहि = शम्भो आयाहि, शम्भ आयाहि

इसी प्रकार दूर से पुकारने में अन्तिम स्वर प्लुत हो जाता है। उसकी भी प्रगृह्य संज्ञा होती है। अतः प्रकृतिभाव होने से सन्धि नहीं होती है। जैसे—

हरे३ आगच्छ, प्रभो३ अवेहि।

अभ्यास (क)

1. निम्नलिखित सन्धियों का लक्षण बताकर दो-दो उदाहरण दीजिए :
अधोलिखितानां सन्धीनां लक्षणानि दत्त्वा द्वे, द्वे उदाहरणे लिखत :
Define following Sandhis with two examples of each Sandhi :
दीर्घ सन्धि, यण् सन्धि, वृद्धि सन्धि, अयादि सन्धि, पररूप सन्धि, प्रकृतिभाव।

2. निम्नलिखित शब्द-रूपों में सन्धि कीजिए :
अधोलिखितेषु सन्धिर्विधीयताम् :
Give the Sandhi in the following :

सीम + अन्तः, मृग + अङ्कः, इति + अत्र, तौ + ऊचतुः, मार्त + अण्डः, तथा + एव, ते + ऊचुः, गुरु + आदेशः, छात्रा + एवा, गुरू + आगतौ, विधु + उदयः, सु + आगतम्, देव + ऐश्वर्यम्, जल + ओघः, देव + ऋषयः, केन + इदानीम्, वन + एकदेशे, न + एषा, इति + उक्त्वा, कवी + इमौ, पितृ + आज्ञा, तव + औदार्यम्, तौ + अपि, परि + ईक्षा, यदि + अत्र, तव + अनुजः, अद्य + अपि, महा + ईश्वरः, सदा + एव, वाणी + एका, कवि + इन्द्रः, ते + अपि, विद्या + अर्थी, न + अन्यः।

कपि + ईशः, रक्त + उत्पलम्, नील + उत्पलम्, चन्द्र + उदयः, उमा + ईशः, देव + ऋषिः, सप्त + ऋषिः, नर + ईशः, देव + इन्द्रः, नदी + आपः, मति + अनुकूलम्, यदि + अपि, मधु + अस्ति, इति + आदि, भर्तृ + आदेशः, मुनी + इमौ, अमी + उपायाः, कवी + एतौ, साधू + आगच्छतः, गङ्गे + अत्र, लते + इमे, शे + अनम्, न + अनम्, हरे + ए, प्रभो + अत्र, गुरो + ए, कौ + अत्र, नै + अकः, गुरौ + आगते, रमायै + अयम्, देव + ऐश्वर्यम्, गंगा + ओघः।

3. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए :
अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत :
Disjoin Sandhi in the following :

चोपपन्नम्, पावकः, प्रभ्वाज्ञा, प्रत्येकम्, गङ्गोदकम्, पुरुषर्षभः, कृष्णैकत्वम्, अक्षौहिणी, गजस्याननम्, वहन्त्यश्वाः, महैश्वर्यम्, इत्युक्त्वा, चैतत्, पावकः, प्रत्यागतः, गिरीशः, तावेतौः, अत्याचारः, सूक्तिः, भानूदयः, सुखार्तः, सप्तर्षिः, नरोत्तमः, मात्रादेशः, तवाग्रहः।

उपर्युपरि, महोत्साहः, तस्यैवः, अस्त्येषः, चरस्यैतस्य, परीक्ष्यैव, दैत्यारिः, यथौषधम्, मैनम्, खल्वावृत्तः, रात्रावस्ताचलम्, इत्युक्त्वा, तदत्रैव, सुखोपायेन, तस्यालयम्, चैकाग्रनीत्, द्वावपि, शास्त्रोक्तः, वटवृक्षः।

व्यंजन (हल्) सन्धि
(Consonant Sandhi)

व्यंजन (हल्) का किसी व्यंजन (हल्) के साथ अथवा स्वर (अच्) के साथ मेल होने पर व्यंजन में जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन (हल्) सन्धि कहते हैं। जैसे—तत् + चित्रम् = तच्चित्रम्, तत् + टीकते = तट्टीकते। इन उदाहरणों में त् + च् मिलने से प्रथम अक्षर त् के स्थान पर च् तथा त् + ट् मिलने से प्रथम अक्षर त् के स्थान पर ट् हो गया है।

व्यंजन सन्धि के अनेक भेद हैं। उनमें से कुछ भेद नीचे दिए जा रहे हैं।

1. पदान्त न् से परे यदि च् या छ् हो तो न् के स्थान पर अनुस्वार तथा श् दोनों हो जाते हैं। जैसे—

कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्	श्रीमान् + चकास्ति = श्रीमांश्चकास्ति
बालकान् + च = बालकांश्च	हसन् + चलति = हसंश्चलति

वृक्षान् + छिन्धि = वृक्षांश्छिन्धि महान् + छेदः = महांश्छेदः
श्रीमान् + छदयति = श्रीमांश्छदयति विद्वान् + छात्रः = विद्वांश्छात्रः
धावन् + छांगः = धावंश्छांगः

2. पदान्त न् से परे ट् या ठ् हो तो अनुस्वार और ष् हो जाते हैं। जैसे—
महान् + टंकारः = महांष्टंकारः एतान् + ठक्कुरान् = एतांष्ठक्कुरान्
श्रीमान् + टीकते = श्रीमांष्टीकते श्रीमान् + ठकारम् = श्रीमांष्ठकारम्
वेदान् + टीकस्व = वेदांष्टीकस्व

3. पदान्त न् से परे यदि त्, थ् हो तो न् के स्थान पर अनुस्वार के साथ 'स्' हो जाता है। जैसे—
भवतान् + तारय = भवतांस्तारय अस्मिन् + तडागे = अस्मिंस्तडागे
चक्रिन् + त्रायस्व = चक्रिंस्त्रायस्व श्रीमान् + त्रायते = श्रीमांस्त्रायते
श्रीमान् + थर्वति = श्रीमांस्थर्वति राजन् + थकारः = राजंस्थकारः

नियम क्र० 1, 2, 3 के अन्तर्गत सभी उदाहरणों में अनुस्वार वाले रूप के साथ-साथ अनुनासिक वाला रूप भी बनता है।

4. पद के अन्दर रहने वाले न् और म् से परे वर्गों के पहले वर्णों तथा श्, ष्, स्, ह् में से कोई वर्ण आ जाने पर न् और म् को अनुस्वार हो जाता है। जैसे—
यशान् + सि = यशांसि मन् + स्यते = मंस्यते
रम् + स्यते = रंस्यते आक्रम् + स्यते = आक्रंस्यते

5. अपदान्त अनुस्वार के अनन्तर यय् (वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण और य्, र्, ल्, व्) वर्णों में से कोई एक हो तो उसे अनुस्वार के आगे आने वाले वर्ण के वर्ग का पाँचवाँ अक्षर (परसवर्ण) हो जाता है। जैसे—
सं + जयः = सञ्जयः
अं + कितः = अङ्कितः
कं + ठः = कण्ठः
गं + गा = गङ्गा
व्यं + जनम् = व्यञ्जनम्
शां + तः = शान्तः
दं + डः = दण्डः
अं + कः = अङ्कः
पं + चमः = पञ्चमः

6. सम् पुम् और कान् के म्, न् स्थान पर अनुस्वार के अनन्तर 'स्' हो जाता है। जैसे—
सम् + कर्ता = संस्कर्ता, सँस्कर्ता
पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, पुँस्कोकिलः
कान् + कान् = कांस्कान्, काँस्कान्

7. पदान्त् 'म्' से परे कोई भी व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है। जैसे—

हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे
मधुरम्+हसति=मधुरं हसति
सत्वरम्+याति=सत्वरं याति

किन्तु पदान्त के स्थान पर होने वाले अनुस्वार से परे यदि किसी वर्ग का कोई वर्ण आता है तो उस अनुस्वार को उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण विकल्प से हो जाता है। जैसे—

अयम्+कथयति=अयं कथयति, अयङ्कथयति
अयम्+ख्याति=अयं ख्याति, अयङ्ख्याति
अयम्+गदति=अयं गदति, अयङ्गदति
अयम्+घोषति:=अयं घोषति, अयङ्घोषति
अयम्+ङवते=अयं ङवते, अयङ्ङवते
अयम्+चकास्ति=अयं चकास्ति, अयञ्चकास्ति
अयम्+छदयति=अयं छदयति, अयञ्छदयति
अयम्+जयति=अयं जयति, अयञ्जयति
अयम्+झर्चति=अयं झर्चति, अयञ्झर्चति
अयम्+ञकारम्=अयं ञकारम्, अयञ्ञकारम्
अयम्+टीकते=अयं टीकते, अयण्टीकते
अयम्+ठकारम्=अयं ठकारम्, अयण्ठकारम्
अयम्+डमति=अयं डमति, अयण्डमति
अयम्+ढौकते=अयं ढौकते, अयण्ढौकते
अयम्+णकारम्=अयं णकारम्, अयण्णकारम्
अयम्+त्रायते=अयं त्रायते, अयन्त्रायते
अयम्+थर्वति=अयं थर्वति, अयन्थर्वति
अयम्+ददाति=अयं ददाति, अयन्ददाति
अयम्+धन्य:=अयं धन्य:, अयन्धन्य:
अयम्+नयति+अयं नयति, अयन्नयति
अयम्+पाति=अयं पाति, अयम्पाति
अयम्+फलति=अयं फलति, अयम्फलति
अयम्+बुध्यते=अयं बुध्यते, अयम्बुध्यते
अयम्+भाति=अयं भाति, अयम्भाति
अयम्+मन्यते=अयं मन्यते; अयम्मन्यते
त्वम्+करोषि=त्वं करोषि, त्वङ्करोषि
जलम्+पिबति=जलं पिबति, जलम्पिबति
नदीम्+तरति=नदीं तरति, नदीन्तरति

सम्+गच्छध्वम्=सं गच्छध्वम्, सङ्गच्छध्वम्

पुष्पम्+चिनोति=पुष्पं चिनोति, पुष्पञ्चिनोति

8. श्चुत्व—स् और तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के साथ श् और चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) में से कोई वर्ण आ रहा हो तो स् और त्, थ् द्, ध्, न् के स्थान पर क्रमशः श्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ् हो जाते हैं। जैसे—

मनस्+शान्तिः=मनश्शान्तिः	कस्+चित्=कश्चित्
रामस्+शेते=रामश्शेते	रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति
सत्+चित्=सच्चित्	तत्+च=तच्च
सत्+चरित्रम्=सच्चरित्रम्	तत्+चित्रम्=तच्चित्रम्
तत+छत्रम्=तच्छत्रम्	विपद्+जालम्=विपज्जालम्
सत्+जनः=सज्जनः	उद्+ज्वलः=उज्ज्वलः
यज्+नः=यज्+ञः=यज्ञः	भूभृद्+चकास्ति=भूभृच्चकास्ति
भूभृद्+छदयति=भूभृच्छदयति	भूभृद्+जयति=भूभृज्जयति
भूभृद्+झर्चति=भूभृज्झर्चति	भूभृद्+जकारम्=भूभृज्जकारम्
श्रीमान्+जयति=श्रीमाञ्जयति	श्रीमान्+झषः=श्रीमाञ्झषः
शार्ङ्गिन्+जयः=शार्ङ्गिञ्जयः	तत्+छत्रम्=तच्छत्रम्

अपवाद—श् के परे तवर्ग को चवर्ग नहीं होता। जैसे—

विश्+नः=विश्नः, प्रश्+नः=प्रश्नः आदि।

9. ष्टुत्व—स् और तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के साथ यदि ष् और टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्) में से कोई हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः ष् और टवर्ग आदेश हो जाते हैं। जैसे—

रामस्+षष्ठः=रामष्षष्ठः	पेष्+ता=पेष्टा
इष्+तः=इष्टः	कृष्+तः=कृष्टः
उत्+डीनः=उड्डीनः	तत्+टीकते=तट्टीकते
तत्+डमरुः=तड्डमरुः	तत्+ढौकते=तड्ढौकते
द्विट्+धि=द्विड्ढि	षष्+थः=षष्ठः
चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे	

परन्तु कुछ अवस्थाओं में यह नियम लागू नहीं होता। जैसे, यदि पद के अन्त में टवर्ग हो और उसके पश्चात् न् के अतिरिक्त तवर्ग का वर्ण अथवा स् हो तो उसके स्थान पर टवर्ग नहीं होता। जैसे—

षट्+सन्तः=षट् सन्तः (यहाँ स् का ष् नहीं होगा)

किन्तु न् को ण् होने के उदाहरण मिलते हैं। यथा—

षड्+नवतिः=षण्णवतिः षड्+नाम्=षण्णाम्

षड्+नगर्यः=षण्णगर्यः

इसी प्रकार तवर्ग के किसी वर्ण के पश्चात् मूर्धन्य ष् हो तो तवर्ग के वर्ण के स्थान पर टवर्ग का वर्ण नहीं होता। जैसे—सन्+षष्ठः=सन् षष्ठः

10. जशत्व—किसी शब्द के अन्त में यदि झल् अर्थात् वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण तथा श्, ष्, स्, ह् हों तथा उनके अनन्तर कोई भी अन्य वर्ण हो तो झलों को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण (जश्=ग्, ज्, ड्, द्, ब्) हो जाता है। नियम व्यापक रहने पर भी भाषा में उदाहरण ऐसे ही मिले हैं जिनमें क्, च्, ट्, त्, प् यदि पद के अन्त में होते हैं और उनके अनन्तर में कोई वर्ण होता है तो इन्हें क्रमशः ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जाता है। जैसे—

दिक्+अम्बरः=दिगम्बरः	क्→ग्
दिक्+गजः=दिग्गजः	क्→ग्
वाक्+अर्थौ=वागर्थौ	क्→ग्
वाक्+दानम्=वाग्दानम्	क्→ग्
बृहत्+रथः=बृहद्रथः	त्→द्
वाक्+ईशः=वागीशः	क्→ग्
अच्+अन्तः=अजन्तः	च्→ज्
षट्+आननः=षडाननः	ट्→ड्
षट्+देवाः=षड्देवाः	ट्→ड्
जगत्+ईशः=जगदीशः	त्→द्
महत्+दानम्=महद्दानम्	त्→द्
सत्+आचारः=सदाचारः	त्→द्
चित्+आनन्दः=चिदानन्दः	त्→द्
सुप्+अन्ताः=सुबन्ताः	प्→ब्
अप्+जः=अब्जः	प्→ब्

11. जशत्व—जब उपर्युक्त झल् (वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे व चौथे वर्ण तथा श्, ष्, स्, ह्) पद के बीच में हों (पदान्त में न हों) तथा उनके बाद झश् (वर्ण का तीसरा व चौथा वर्ण) में से कोई वर्ग हो तो झलों को जश् (वर्ग का तृतीय वर्ण) आदेश हो जाता है। इनमें भी झलों के स्थान पर वर्गों के चतुर्थ वर्णों के उदाहरण मिलते हैं जिन्हें तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे—

बुध्+धः=बुद्धः	वृध्+धः=वृद्धः
लभ्+धः=लब्धः	क्रुध्+धः=क्रुद्धः
सिध्+धिः=सिद्धिः	दुध्+धम्=दुग्धम्

12. वर्ग के पहले चार अक्षरों से परे यदि 'ह्' आ जाए, तो ह् को विकल्प से उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है और पहले वर्ण को अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—

वाक्+हरिः=वाग्घरिः (क्→ग्, ह्→घ्), वाग्हरिः
तत्+हितम्=तद्धितम् (त्→द्, ह्→ध्), तद्हितम्
अप्+हरणम्=अब्भरणम् (प्→ब्, ह्→भ्), अब्हरणम्

13. क्, च्, ट्, त्, प् से परे यदि कोई अनुनासिक वर्ण आ जाए तो उसे विकल्प से अपने वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है अर्थात् उसके स्थान पर तीसरा तथा पाँचवाँ दोनों होते हैं। जैसे—

दिक्+नागः=दिङ्नागः, दिग्नागः
षट्+मुखः=षण्मुखः, षड्मुखः
षट्+मासाः=षण्मासाः षड्मासाः
जगत्+नाथः=जगन्नाथः, जगद्नाथः
एतत्+मुरारिः=एतन्मुरारिः, एतद्मुरारिः

अपवाद—'मय' और 'मात्र' प्रत्यय परे रहते पाँचवाँ वर्ण नित्य होता है। जैसे—

वाक्+मयम्=वाङ्मयम्; चित्+मयम्=चिन्मयम्
तत्+मयम्=तन्मयम्; वाक्+मात्रम्=वाङ्मात्रम्

14. चर्त्व—किसी वर्ग के तीसरे या चौथे वर्ण से परे यदि किसी वर्ग का पहला, दूसरा तथा श्, ष्, स् में से कोई वर्ण हो तो तीसरे और चौथे वर्ण को अपने वर्ग का पहला वर्ण हो जाता है। जैसे—

शरद्+सु=शरत्सु	द्→त्
विपद्+सु=विपत्सु	द्→त्
ककुभ्+सु=ककुप्सु	भ्→प्
छेद्+ता=छेत्ता	द्→त्

15. पद के अन्त के ङ्, ण्, न् से पहले यदि ह्रस्व स्वर हो और उससे परे कोई भी स्वर आ जाए तो ङ्, ण्, न् को द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा	गच्छन्+एव=गच्छन्नेव
सुगण्+ईशः=सुगण्णीशः	तस्मिन्+एव=तस्मिन्नेव
कुर्वन्+एव=कुर्वन्नेव	पठन्+उवाच=पठन्नुवाच

16. वर्ग के पहले चार वर्णों के पदान्त होने पर और उससे परे श वर्ण होने पर श् को विकल्प से छ् हो जाता है। पहला वर्ण यदि त् हो तो उसे नियम के अनुसार च् हो जाता है।

तत्+श्रुत्वा=तच्छ्रुत्वा, तच्श्रुत्वा
तत्+श्लोकेन=तच्छ्लोकेन, तच्श्लोकेन
तत्+शिवः=तच्छिवः, तच्शिवः
सत्+शीलः=सच्छीलः, सच्शीलः
एतत्=श्रुत्वा=एतच्छ्रुत्वा, एतच्श्रुत्वा
महान्+शूरः=महाञ्छूरः, महाञ्शूरः

17. ह्रस्व स्वर से परे छ् हो तो उसके पहले च् जोड़कर उसे च्छ् कर दिया जाता है। जैसे—

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
स्व + छन्दः = स्वच्छन्दः
स्व + छत्रम् = स्वच्छत्रम्
शिव + छाया = शिवच्छाया
गज + छाया = गजच्छाया
स्निग्ध + छाया = स्निग्धच्छाया

18. पदान्त दीर्घ से परे यदि छ् हो तो छ् से पहले विकल्प से च् जोड़ा जाता है। जैसे—

लता + छाया = लताच्छाया, लताछाया
लीला + छत्रम् = लीलाच्छत्रम् लीलाछत्रम्
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया

19 ल् के परे रहने पर तवर्ग को ल् हो जाता है। परन्तु यदि न् से परे ल् हो तो अनुनासिक ल् होता है, अर्थात् न् को ल् होने पर न् से पहले स्वर के ऊपर अनुनासिक चिह्न (ँ) लगा दिया जाता है। जैसे—

उत् + लेखः = उल्लेखः
तत् + लयः = तल्लयः
विद्युत् + लता = विद्युल्लता
विद्वान् + लिखति = विद्वाँल्लिखति
महान् + लाभः = महाँल्लाभः
भवान् + लघुः = भवाँल्लघुः
उत् + लिखितम् = उल्लिखितम्
तत् + लीनः = तल्लीनः
तडित् + लता = तडिल्लता
तत् + लयः = तल्लयः
भवान् + लभते = भवाँल्लभते

अभ्यास (ख)

1. अधोलिखितेषु संधिं कुरुत :
निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए :
Join the Sandhi in the following :

मनस् + रथः, उद् + लङ्घते, वाक् + मधुरः, सम् + वादः, सम् + गच्छते, सम् + कर्ता, पद + छाया, पद + छेदः, तस्मिन् + एतत्, सन् + अस्ति, भारम् + वहति, तत् + हानिः, अप् + हारः, उद् + स्थानम्, उत् + स्तम्भनम्, महत् + यानम्, अप् + भक्षः. सम्राट् + गच्छति, तत् + छत्रम्, सत् + चित्, उत् + लेखः, उत् + हरणम्, महान् + लाभः, तत् + लुनाति।

2. अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत :
निम्न शब्दों में सन्धिच्छेद करो :
Disjoin Sandhi in the following :

नृत्यंश्चकार, चलंष्टिट्टिभः, पतंस्तरुः, शार्ङ्गिश्छिन्धि, पुंस्कोकिलः, अञ्चितः, कुण्ठितः, गुम्फितः, युञ्जन्ति, वासांसि, आक्रंस्यते, प्रणंस्यते, यशांसि, प्राङ्षष्ठः, एतच्छान्तम्. तस्मिन्निति, तच्छलोकेन, ककुब्भासः, संपद्धानिः, षड्ढलानि, अज्झृस्वः, कुर्शांल्लिखति, उल्लेखः, महाँल्लाभः, तन्मात्रम्, तद्रूपः, वागीशः।

विसर्ग सन्धि
(Visarga-sandhi)

विसर्ग से परे स्वर या व्यंजन के होने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन को

विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे—

राम:+आगच्छति=राम आगच्छति में राम: के विसर्ग का लोप हो गया है क्योंकि विसर्ग के बाद दीर्घ आ स्वर पड़ा है (लोप)।

देव:+गच्छति=देवो गच्छति। यहाँ गच्छति का ग् विसर्ग से परे है, अतः देव: के स्थान पर देवो रूप बन गया है तथा विसर्ग के स्थान पर हुआ उ देव के अकार में मिलकर ओ हो गया है (उत्व)।

विसर्ग सन्धि के भी अनेक भेद हैं। यहाँ कुछ प्रसिद्ध भेदों का ही विचार किया जायेगा।

1. यदि पदान्त 'र्' के परे वर्गों का पहला, दूसरा तथा श्, ष्, स् में से कोई वर्ण हो या अन्त का 'स्' हो तो उनके स्थान पर विसर्ग हो जाता है। जैसे—

पुनर्+पतितः=पुनः पतितः   हरि+स्=हरिः

राम+स्=रामः

2. सत्व—विसर्ग से च्, छ् परे होने पर विसर्ग का श् हो जाता है, ट्, ठ् परे होने पर ष् हो जाता है तथा त्, थ् परे होने पर 'स' हो जाता है। जैसे—

रामः+चलति=रामश्चलति   देवः+चचाल=देवश्चचाल

तस्याः+छागः=तस्याश्छागः   रामः+टीकते=रामष्टीकते

धनुः+टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः

रामः+ठक्कुरः=रामष्ठक्कुरः   रामः+तरति=रामस्तरति

बालः+थूत्करोति=बालस्थूत्करोति   विष्णुः+त्राता=विष्णुस्त्राता

नमः+ते=नमस्ते   नमः+तुभ्यम्=नमस्तुभ्यम्

3. विसर्ग के बाद श्, ष्, स् हों तो विसर्ग को श्, ष्, स् विकल्प से होंगे। जैसे—

रामः+स्थाता=रामःस्थाता, रामस्स्थाता

हरिः+शेते=हरिःशेते, हरिश्शेते

रामः+षष्ठः=रामः षष्ठः, रामष्षष्ठः

निः+सारः=निःसारः, निस्सारः

हरिः+स्फुरति=हरिःस्फुरति, हरिस्स्फुरति

दुः+स्थः=दुःस्थः, दुस्स्थः

प्रथमः+सर्गः=प्रथमःसर्गः, प्रथमस्सर्गः

4 विसर्ग के स्थान पर स् होने का एक अवसर तब आता है जब विसर्ग के बाद पाश, कल्प, कम् तथा काम्य हों। जैसे—

पयः+पाशम्=पयस्पाशम्   यशः+कल्पम्=यशस्कल्पम्

यशः+कम्=यशस्कम्   यशः+काम्यति=यशस्काम्यति

विसर्ग से पहले इ, ई, उ, ऊ हों तो विसर्ग को ष् होगा (यदि पाश आदि बाद में होंगे तो) किन्तु अव्यय के साथ विसर्ग का श्, स्, ष् नहीं होगा। जैसे—प्रातः कल्पम् में प्रातः अव्यय होने से विसर्ग को स् नहीं हुआ। सर्पिष्पाशम्, सर्पिष्कल्पम्,

सर्पिष्कम् तथा सर्पिष्काम्यति आदि रूप शुद्ध हैं।

5. रुत्व—विसर्ग से पहले अ तथा आ को छोड़कर यदि कोई और स्वर हो और विसर्ग से परे कोई स्वर, वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण हो तो उस विसर्ग को र् हो जाता है। जैसे—

मुनिः + अयम् = मुनिरयम् देवीः + उवाच = देवीरुवाच
शिशुः + हसति = शिशुर्हसति वधूः + आयाति = वधूरायाति
साधुः + गच्छति = साधुर्गच्छति कैः + उक्तम् = कैरुक्तम्
हरेः + इदम् = हरेरिदम् गौः + अयम् = गौरयम्
भानोः + अयम् = भानोरयम्

6. धनुः, निः, हविः, सर्पिः, आदिः, बहिः, दुः, प्रादुः, चतुः आदि शब्दों के विसर्ग को समास में क्, ख्, प्, फ् इनमें से किसी भी वर्ण के परे होने पर 'ष्' हो जाता है। जैसे—

धनुः + पाणिः = धनुष्पाणिः
धनुः + कपालम् = धनुष्कपालम्
निः + कामः = निष्कामः
निः + प्रत्यूहम् = निष्प्रत्यूहम्
निः + पीडा = निष्पीडा
निः + फलम् = निष्फलम्
हविः + पात्रम् = हविष्पात्रम्
सर्पिः + पात्रम् = सर्पिष्पात्रम्
आविः + कृतम् = आविष्कृतम्
बहिः + कृतम् = बहिष्कृतम्
दुः + कृतम् = दुष्कृतम्
प्रादुः + कृतम् = प्रादुष्कृतम्
चतुः + पथम् = चतुष्पथम्
आयुः + कामः = आयुष्कामः

7. उत्व विधि—यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो और परे भी ह्रस्व 'अ' ही हो तो विसर्ग को उ हो जाता है तथा विसर्ग पूर्व अ के साथ मिलकर 'ओ' हो जाता है। परवर्ती अ का पूर्वरूप हो जाता है और उसके स्थान में ऽ चिह्न रख दिया जाता है। जैसे—

पुरुषः + अस्ति = पुरुषोऽस्ति देवः + अयम् = देवोऽयम्
रामः + अत्र = रामोऽत्र कः + अत्र = कोऽत्र
एषः + अब्रवीत् = एषोऽब्रवीत् सः + अपि = सोऽपि
शिवः + अर्च्यः = शिवोऽर्च्यः प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः

8. उत्व—यदि विसर्ग के पूर्व अ हो, किन्तु विसर्ग के अनन्तर किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या पाँचवाँ वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व् तथा ह् में से कोई वर्ण हो तो

विसर्ग सहित अ को ओ हो जाता है। जैसे—

राम:+गच्छति=रामो गच्छति
राम:+घोषति=रामो घोषति
राम:+ङवते=रामो ङवते
राम:+जयति=रामो जयति
राम:+झर्चति=रामो झर्चति
राम:+ञकारम्=रामो ञकारम्
राम:+डमति=रामो डमति
राम:+ढौकते=रामो ढौकते
राम:+णकारम्=रामो णकारम्
राम:+ददाति=रामो ददाति
राम:+धन्य:=रामो धन्य:
राम:+नयति=रामो नयति
राम:+बुध्यते=रामो बुध्यते
राम:+भाति=रामो भाति
राम:+मन्यते=रामो मन्यते
राम:+यजते=रामो यजते
राम:+रोचते=रामो रोचते
राम:+लसति=रामो लसति
राम:+वेत्ति=रामो वेत्ति
राम:+हृष्यति=रामो हृष्यति
शिव:+वन्द्य:=शिवो वन्द्य:
मन:+रथ:=मनोरथ:
मन:+हर:=मनोहर:
मन:+गत:=मनोगत:

अपवाद—(क) अह:+अह:=अहरह: अह:+गण:=अहर्गण:

(ख) मूलभूत र् के स्थान में होने वाले विसर्ग को पुन: र् हो जाता है। जैसे—

प्रात:+गच्छति=प्रातर्गच्छति   पुन:+अपि=पुनरपि

9. **विसर्ग लोप**—यदि पूर्व नियम की भाँति ह्रस्व अ के अनन्तर विसर्ग हो, किन्तु विसर्ग के पश्चात् अ से भिन्न कोई और स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

राम:+आगच्छति=राम आगच्छति
बालक:+इच्छति=बालक इच्छति
राम:+ईष्टे=राम ईष्टे
संजय:+उवाच=संजय उवाच
सूर्य:+उदेति=सूर्य उदेति
कवय:+ऊहन्ति=कवय ऊहन्ति
चन्द्र:+उदेति=चन्द्र उदेति
राम:+ऋणाति=राम ऋणाति
राम:+ऋच्छति=राम ऋच्छति
मनुष्य:+एति=मनुष्य एति
राम:+लृकारम्=राम लृकारम्
राम:+ऐधत=राम ऐधत
ऋषय:+एते=ऋषय एते
राम:+औहत=राम औहत
राम:+ओणति=राम ओणति

10 **विसर्ग लोप**—यदि विसर्ग से पूर्व 'आ' हो और परे कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह्, इन वर्णों में से कोई हो तो वहाँ पर विसर्ग का लोप हो जाता है। और विसर्ग का लोप होने पर यदि कोई सन्धि प्राप्त हो तो वह नहीं होती।

सुमना:+अस्ति, आसीत्, इच्छति, ईष्टे, उज्झति, ऊहते, ऋच्छति, ऋणाति, लृकारम्, एधते, ऐधत, ओणति, औहत, गदति, घोषति, ङवते, जयति, झर्चति, ञकारम्, डमति, ढौकते, णकारम्, ददाति, धन्य:, नयति, बुध्यते, भाति, मन्यते, यजते,

रोचते, लसति, वेत्ति, हृष्यति=सुमना अस्ति, आसीत्……………इत्यादि (हृष्यति पर्यन्त)।

अश्वा:+इमे=अश्वा इमे	देवा:+गच्छन्ति=देवा गच्छन्ति
छात्रा:+धावन्ति=छात्रा धावन्ति	देवा:+एते=देवा एते
छात्रा:+नमन्ति=छात्रा नमन्ति	नृपा:+अत्र=नृपा अत्र
पुरुषा:+यान्ति=पुरुषा यान्ति	पुरुषा:+हसन्ति=पुरुषा हसन्ति
नृपा:+जयन्ति=नृपा जयन्ति	वाता:+वान्ति=वाता वान्ति
नरा:+आगच्छन्ति=नरा आगच्छन्ति	जना:+इच्छन्ति=जना इच्छन्ति
बाला:+उपयान्ति=बाला उपयान्ति	देवा:+इह=देवा इह

11. अ, इ, उ के अनन्तर (विसर्गों के स् के रु का) र् विद्यमान् हो तथा उसके पश्चात् भी र् हो तो पहले (विसर्ग के) र् का लोप हो जाता है। लोप होने पर अ, इ, उ को दीर्घ भी हो जाता है। जैसे—

पुन: (पुनर्)+रमते=पुना रमते
हरि: (हरिर्)+राजते=हरी राजते
शम्भु:+राजते=शम्भू राजते
शम्भु: (शम्भुर्)+रम्य:=शम्भू रम्य:
अन्त: (अन्तर्)+राष्ट्रिय:=अन्ता राष्ट्रिय:
गुरु:+रुष्ट:=गुरू रुष्ट:
निस्+रोग:=नीरोग:

12. स: और एष: के पश्चात् कोई व्यंजन हो तो इनके विसर्गों का लोप हो जाता है। जैसे—

स: पठति=स पठति
एष: विष्णु:=एष विष्णु:

यदि स:, एष: के पश्चात् ह्रस्व अ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो उसका भी लोप हो जाता है। जैसे—

स: एति=स एति
एष: एति=एष एति

किन्तु यदि स:, एष: के परे ह्रस्व अ हो तो विसर्ग सहित अ को ओ हो जाता है। जैसे—

स:+अस्ति=सोऽस्ति एष:+अपि=एषोऽपि

इसी प्रकार भो:, भगो: के विसर्गों का भी लोप हो जाता है यदि विसर्ग से परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ तथा य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण हो। जैसे—

भो:+लक्ष्मी=भो लक्ष्मी
भगो:+नमस्ते=भगो नमस्ते

अधो:+याहि=अधो याहि

नमः, पुरः, तिरः शब्दों के विसर्ग को क् या प् के परे होने पर स् हो जाता है। जैसे—

नमः+कारः=नमस्कारः पुरः+कारः=पुरस्कारः
तिरः+कारः=तिरस्कारः अयः+कारः=अयस्कारः

णत्व तथा षत्व विधान

1. णत्व विधान—एक पद में र्, ष् के बाद न् आए तो ण् हो जाता है। जैसे—

चतुर्णाम्, पुष्णाति, जीर्णः इत्यादि।

यदि ऋ के बाद भी न् आवे तो उसके स्थान पर भी ण् हो जाता है। जैसे—
नृणाम्, पितृणाम्, चतसृणाम् आदि।

ऋ, र्, ष् तथा न् के बीच में कोई स्वर अथवा कवर्ण, पवर्ण तथा ह्, य्, व्, र् या अनुस्वार हो तो भी न् के स्थान पर ण् हो जाता है। जैसे—

रामेण, मूर्खेण गुरुणा, रामाणाम्, मूर्खाणाम्, हरिणा आदि; किन्तु दृढेन, रसेन, अर्थेन, रसानाम् में ण नहीं होता क्योंकि यहाँ र्, ऋ तथा न् के बीच उपर्युक्त अक्षर के अतिरिक्त अक्षर आते हैं।

पदान्त के न् का ण् नहीं होता। जैसे—

देवान्, रामान्, हरीन्, गुरून् आदि।

2. षत्व विधान—अ, आ को छोड़कर शेष स्वर तथा ह्, य्, व्, र्, ल् एवं कवर्ग के बाद में आने वाले अपदान्त प्रत्यय और आदेश के स् के स्थान पर ष् हो जाता है। जैसे—

रामेषु, हरिषु, सर्वेषाम्, मातृषु, वधूषु, चतुर्षु इत्यादि।

यदि उपर्युक्त वर्णों तथा स् के माध्यम में अनुस्वार, विसर्ग और श्, ष्, स् का व्यवधान भी हो तो भी स् के स्थान पर ष् हो जाता है। जैसे—

धनूंषि, आयूंषि, आशीःषु, चक्षुःषु, हवींषि।

अभ्यास (ग)

1. अधोलिखितेषु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नलिखित शब्दों की सन्धि करके लिखो :

Join the Sandhi in the following :

कविः+धन्यः,	मुनिः+नयति,	यतिः+पाति,	ऋषि+फलति,
कविः+टीकते,	कृष्णः+ठक्कुरः,	शिशु+तरति,	देवः+पठः,
साधुः+गच्छति,	प्रातः+अपि,	मनः+वदति,	एषः+आयाति,
एषः+याति,	निर्+रसः,	अपः+कुम्भः,	अपः+पात्रम्,
दिवः+पतिः,	शिरः+पदम्,	पुनः+रमते,	भ्रातः+एहि

2. अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत :

निम्नलिखित शब्दों में सन्धिच्छेद कीजिए :

Disjoin Sandhi in the following :

धनुष्पाणिः, आविष्कारः, निष्कामः भो ईश्वरः, तिरस्कारः, अयस्करः, राम आगच्छति, हरिर्याति, नृपैरुक्तम्, श्वेतस्सर्पः, तस्याश्छागः, बालश्शेते, शिष्या यान्ति, कविष्ठकारम्, राम औहत, निष्प्रत्यूहम्, शिवोऽर्च्यः, विप्रोऽहम् शिवो वन्द्यः, देवा इह, छात्रा आगच्छन्ति, नीरोगः, स शम्भुः ।

अभ्यास (घ)

(परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न)

3. (क) अधोलिखितानाम् केषुचित् त्रिषु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन में सन्धि कीजिए :

Form Sandhi in any three of the following :

देवाः+इह, अहः+अहः, पौ+अकः, शिव+छाया

(ख) अधोलिखितानां केषुचित् त्रिषु सन्धिविच्छेदं कुरुत :

निम्नलिखित में किन्हीं तीन में सन्धि-विच्छेद कीजिए :

Disjoin Sandhi in any three of the following :

उपेन्द्रः, कृष्णर्द्धिः, पुना रमते, एतन्मुरारिः ।

4. अधोलिखितेषु त्रिषु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नांकित में से तीन में सन्धि कीजिए :

Join the Sandhi in any three of the following :

भानु+उदयः ; मधु+अरिः ; पितृ+आज्ञा; तत्+लयः ; पुनर्+रमते ; शिशुः+हसति ।

5. (क) अधोलिखितानाम् केषुचित् त्रिषु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नलिखित में किन्हीं तीन में सन्धि कीजिए :

Form Sandhi in any three of the following :

हरिः+शेते, कृष्ण+ऋद्धिः, देव+आलयः, लक्ष्मी+छाया ।

(ख) अधोलिखितानां केषुचित् त्रिषु सन्धिविच्छेदं कुरुत :

निम्नलिखित में किन्हीं तीन में सन्धि या सन्धिविच्छेद कीजिए :

Disjoin Sandhi in any three of the following :

महर्षिः, संस्कर्ता, नायकः, सच्चित् ।

कवीश्वरः, यद्यपि, सदैव, तच्छ्रुत्वा, जगदीशः ।

6. अधस्तनेषु यथापेक्षं सन्धिं तद्विच्छेदं वा विधत्त :

निम्नलिखित में अपेक्षानुसार सन्धिविच्छेद कीजिए :

Join or disjoin Sandhi in the following :

(*i*) गच्छन्+एव ; (*ii*) राजर्षिः ; (*iii*) तडित्+लता ; (*iv*) मतैक्यम्; (*v*) भ्रातृ+अंशः ; (*vi*) गुरुः+रुष्ट ।

7. अधोलिखितेषु केषांचित् त्रयाणां यथास्थानं सन्धिः सन्धिच्छेदो वा विधीयताम् :

निम्नलिखित में किन्हीं तीन में आवश्यकतानुसार सन्धि या सन्धिच्छेद कीजिए :

Join or disjoin Sandhis in any three of the following :

(क) हरिम्+वन्दे ; शिवः+वन्द्यः ; तथापि ; सुरेशः ; सज्जनः ।

(ख) पुनर्+रमते, तत्+लयः, पावकः, रमेशः, हरिवन्दे ।

8. अधोलिखितेषु त्रिषु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नांकित में से तीन में सन्धि कीजिए :

Join the Sandhis in any three of the following :

(*i*) राज्ञी+इह ; (*ii*) गुरु+आदेशः ; (*iii*) विद्वान्+लिखति ; (*iv*) वाक्+ईशः ; (*v*) शिवः+अर्च्यः ।

9. अधोलिखितेषु केषांचित् त्रयाणां सन्धिः सन्धिच्छेदो वा विधीयताम् :

निम्नलिखित में किन्हीं तीन में सन्धि या सन्धिच्छेद कीजिए :

Join or disjoin Sandhis in any three of the following :

विष्णुः+त्राता ; वाक्+ईशः ; नायकः ; इत्यादि ; तल्लयः ।

10. अधोलिखितेषु त्रिषु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नलिखित में किन्हीं तीन में सन्धि कीजिए :

Join the Sandhis in any three of the following :

(क) (*i*) गंगा+उदकम् ; (*ii*) पितृ+आदेशः ; (*iii*) वाक्+जालम् ; (*iv*) विद्युत्+लता ; (*v*) शम्भुः+राजते ।

11. अधोलिखितेषु पञ्चसु सन्धिर्विधीयताम् :

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच में सन्धि कीजिए :

Join in any five of the following :

(*i*) महती+इच्छा ; (*ii*) सप्त+ऋषिः ; (*iii*) पितृ+आज्ञा ; (*iv*) जगत्+नाथः ; (*v*) तत्+लयः ; (*vi*) सः+अपि ; (*vii*) मनः+रथः ; (*viii*) चन्द्रः+उदेति ।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच में सन्धि कीजिए :

लक्ष्मी+ईश्वरः, तस्मिन्+एव, नौ+इकः, तरु+छाया, निर्+रसः, प्रथमः+अध्यायः, सूर्यः+उदेति, सत्+जनः ।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच में सन्धिच्छेद कीजिए :

गणेशः, महर्षिः, इत्यादि, नमस्ते, महाल्लाभः, प्रथमस्सर्गः, अतएव, मनोहरम् ।

14. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए :

(क) सदा + एव, रमा + ईशः, प्रथमः + सर्गः, छात्राः + आगच्छन्ति, उत् + लेखः, जगत् + नाथः, निर् + रोगः, तत् + हितम् ।

(ख) दैत्य + अरिः, इति + आदि, महा + ईशः, सत् + जनः, हरिम् + वन्दे, नमः + ते, हरिः + शेते, तत् + लीनः ।

15. निम्नलिखित वर्गों में से किन्हीं पाँच-पाँच में सन्धि कीजिए :

(क) सुधा + आकरः, मृग + इन्द्रः, महा + ऋषिः, तदा + एव, यदि + अपि, वाक् + ईशः, तत् + चित्रम्, निस् + रोगः ।

(ख) देव + ऋषिः, महा + ईशः, प्रति + एकम्, राम + ऐश्वर्यम्, सत् + चरित्रम्, नौ + इकः, प्रथमः + अध्यायः, तस्मिन् + एव ।

16. निम्नलिखित में से पाँच में सन्धि-विच्छेद कीजिए :

धनुष्टङ्कारः, रामेश्वरः, देवर्षिः, विद्यालयः, नमस्तुभ्यम्, मनोहरः, तच्छ्रुत्वा इत्यादि ।

17. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन में सन्धि तथा अन्य तीन में सन्धिच्छेद कीजिए :

(*i*) गुरु + उपदेशः, सूर्य + उदयः, राजा + ऋषिः, पौ + अकः, वाक् + ईशः ।

(*ii*) कवीन्द्रः, सदाचारः, नमस्ते, तल्लीनः, मनोगतः ।

—o—

3

शब्द-रूप
(DECLENSION)

शब्दों के अन्त में लगने वाले कारक-चिह्नों को सुप् कहते हैं। इन सुप् (स् औ अः आदि) प्रत्ययों को लगाने से जो शब्द बनते हैं, उन्हें सुबन्त कहते हैं। जैसे— रामः रामौ रामाः आदि।

सुप् प्रत्ययों के मूल रूप और अवशिष्ट रूप छात्रों की सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं। सुप् प्रत्ययों के अवशिष्ट रूप हलन्त शब्दों में प्रायः सीधे जुड़ जाते हैं तथा कोई परिवर्तन नहीं होता, किन्तु अजन्त शब्दों में जुड़ते समय इन अवशिष्ट रूपों में कुछ स्थानों पर परिवर्तन होता रहता है।

सुप्-प्रत्यय

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (स्, :)	औ	जस् (अः)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अः)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
पञ्चमी	ङसि (अः)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
षष्ठी	ङस् (अः)	ओस् (ओः)	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस् (ओः)	सुप् (सु)
सम्बोधन	सु	औ	जस् (अः)

प्रातिपदिक—धातु, प्रत्यय और प्रत्ययांत को छोड़कर सार्थक शब्द को प्रातिपदिक कहते हैं। कृत्-प्रत्ययांत, तद्धित-प्रत्ययांत और समास (समस्त पद) को भी प्रातिपदिक कहते हैं। प्रातिपदिक शब्दों को अजंत तथा हलंत दो भागों में बाँटा जाता है। अजंत शब्दों में अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारांत तथा ऋकारांत आदि होते हैं।

अकारान्त पुंल्लिग व नपुंसकलिग दो प्रकार के शब्द हैं :

अकारान्त पुंल्लिग

देव तथा राम अकारांत पुंल्लिग शब्दों के रूप दिए जा रहे हैं। शेष अकारान्त पुंल्लिग शब्दों (वृक्ष, पर्वत इत्यादि) के रूप इन्हीं के समान होंगे।

देव

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा विभक्ति	देवः (एक देव ने)	देवौ (दो देवों ने)	देवाः (सब देवों ने)
द्वितीया विभक्ति	देवम् (एक देव को)	देवौ (दो देवों को)	देवान् (सब देवों को)
तृतीया विभक्ति	देवेन (एक देव से)	देवाभ्याम् (दो देवों से)	देवैः (सब देवों से)
चतुर्थी विभक्ति	देवाय (एक देव के लिए)	देवाभ्याम् (दो देवों के लिए)	देवेभ्यः (सब देवों के लिए)
पञ्चमी विभक्ति	देवात् (एक देव से)	देवाभ्याम् (दो देवों से)	देवेभ्यः (सब देवों से)
षष्ठी विभक्ति	देवस्य (एक देव का)	देवयोः (दो देवों का)	देवानाम् (सब देवों का)
सप्तमी विभक्ति	देवे (एक देव में, पर)	देवयोः (दो देवों में, पर)	देवेषु (सब देवों में, पर)
सम्बोधन	हे देव ! (हे एक देव !)	हे देवौ ! (हे दो देवो !)	हे देवाः ! (हे सब देवो !)

राम

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम !	हे रामौ !	हे रामाः !

णत्व सन्धि के कारण राम के तृतीया विभक्ति एकवचन तथा षष्ठी विभक्ति बहुवचन के रूपों में 'न' के स्थान पर 'ण' हो जाता है। शेष रूप देव के समान ही

होते हैं। इसी प्रकार छात्र तथा नर आदि शब्दों के रूपों में न के स्थान पर 'ण' हो जायेगा और वहाँ छात्रेण, छात्राणाम् एवं नरेण व नराणाम् रूप बनेंगे, शेष रूप सब देव समान ही होंगे।

बालक

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

आकारान्त नपुंसकलिंग

फल

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्य
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

गृह (=घर)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वितीया	गृहम्	गृहे	गृहाणि
तृतीया	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
चतुर्थी	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पञ्चमी	गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
षष्ठी	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
सप्तमी	गृहे	गृहयोः	गृहेषु
सम्बोधन	हे गृह !	हे गृहे !	हे गृहाणि !

ज्ञान, धन, वन, वचन, हित, कारण, वातायन, अपत्य, उदक आदि शब्दों के रूप फल के समान होंगे तथा रुधिर, वस्त्र, चक्र, रूप, छत्र, पुर, द्वार आदि शब्दों के रूप गृह के समान होंगे जो रूप गृह के समान होंगे उनके प्रथमा बहुवचन, द्वितीया बहुवचन, तृतीया एकवचन तथा षष्ठी बहुवचन में 'न' के स्थान पर 'ण' हो जायेगा। जैसे—

द्वि० बहु०	तृ० ए०	ष० बहु०
रुधिर→रुधिराणि	रुधिरेण	रुधिराणाम्
वस्त्र →वस्त्राणि	वस्त्रेण	वस्त्राणाम्
चक्र →चक्राणि	चक्रेण	चक्राणाम्
रूप →रूपाणि	रूपेण	रूपाणाम्
छत्र →छत्राणि	छत्रेण	छत्राणाम्
पुर →पुराणि	पुरेण	पुराणाम्
द्वार →द्वाराणि	द्वारेण	द्वाराणाम्, इत्यादि।

वाक्य प्रयोग

अकारान्त शब्दों का वाक्यों में प्रयोग निम्न प्रकार से होगा :

प्र० एक० (देव) देवः आगच्छति,	(फल) फलं मधुरम् अस्ति।
प्र० द्वि० (देव) देवौ आगच्छतः,	(फल) फले मधुरे स्तः।
प्र० बहु० (देव) देवाः आगच्छन्ति,	(फल) फलानि मधुराणि सन्ति।
द्वि० एक० (देव) रामः देवं पूजयति,	(फल) स फलं खादति।
द्वि० द्वि० (देव) रामः देवौ पूजयति,	(फल) स फले खादति।
द्वि० बहु० (देव) रामः देवान् पूजयति,	(फल) स फलानि खादति।
तृ० एक० (दास) त्वं दासेन सह गच्छसि,	(चक्र) त्वं चक्रेण सह क्रीडसि।
तृ० द्वि० (दास) त्वं दासाभ्यां सह गच्छसि,	(चक्र) त्वं चक्राभ्यां सह क्रीडसि।
तृ० बहु० (दास) त्वं दासैः सह गच्छसि,	(चक्र) त्वं चक्रैः सह क्रीडसि।
च० एक० (याचक) अहं याचकाय धनं यच्छामि,	(फल) स फलाय स्पृहयति।
च० द्वि० (याचक) अहं याचकाभ्यां धनं यच्छामि,	(फल) स फलाभ्यां स्पृहयति।
च० बहु० (याचक) अहं याचकेभ्यः धनं यच्छामि,	(फल) स फलेभ्यः स्पृहयति।
पं० एक० (वृक्ष) वृक्षात् फलानि पतन्ति,	(पुष्प) पुष्पात् गन्धः निर्गच्छति।
पं० द्वि० (वृक्ष) वृक्षाभ्याम् फलानि पतन्ति,	(पुष्प) पुष्पाभ्यां गन्धः निर्गच्छति।
पं० बहु० (वृक्ष) वृक्षेभ्यः फलानि पतन्ति,	(पुष्प) पुष्पेभ्यः गन्धः निर्गच्छति।
ष० एक० (बाल) बालस्य मित्राणि पठन्ति,	(मित्र) इदं मित्रस्य गृहम्।
ष० द्वि० (बाल) बालयोः मित्राणि पठन्ति,	(मित्र) इदं मित्रयोः गृहम्।

ष० बहु० (बाल) बालानां मित्राणि पठन्ति,	(मित्र) इदं मित्राणां गृहम् ।
स० एक० (प्रासाद) राजा प्रासादे तिष्ठति,	(गृह) ते गृहे निवसन्ति ।
स० द्वि० (प्रासाद) राजा प्रासादयोः तिष्ठति,	(गृह) ते गृहयोः निवसन्ति ।
सं० बहु० (प्रासाद) राजा प्रासादेषु तिष्ठति,	(गृह) ते गृहेषु निवसन्ति ।
स० एक० (राम) हे राम, अत्रागच्छ,	(मित्र) हे मित्र, कुत्र असि ?
सं० द्वि० (देव) देवौ, प्रसीदतम्,	(मित्र) हे मित्रौ, कुत्र स्थः ?
सं० बहु० (जन) हे जनाः, नृपं सेवध्वम्,	(मित्र) हे मित्राः, कुत्र स्थ ?

आकारान्त स्त्रीलिंग

लता

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	लता	लते	लताः
द्वि०	लताम्	लते	लताः
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च०	लतायै	,,	लताभ्यः
पं०	लतायाः	,,	,,
ष०	,,	लतयोः	लतानाम्
स०	लतायाम्	,,	लतासु
सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

रमा (लक्ष्मी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	रमा	रमे	रमाः
द्वि०	रमाम्	,,	,,
तृ०	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च०	रमायै	,,	रमाभ्यः
पं०	रमायाः	,,	,,
ष०	,,	रमयोः	रमाणाम्
स०	रमायाम्	,,	रमासु
सम्बोधन	हे रामे !	हे रमे !	हे रमाः

सीता, गंगा, यमुना, निन्दा, कला, कक्षा, कान्ता आदि शब्दों के रूप लता की भान्ति चलेंगे । रमा शब्द के षष्ठी बहुवचन में 'न' का 'ण' होने से **रमाणाम्** रूप होता है ।

विशेष—आकारान्त शब्दों के सप्तमी बहुवचन में 'सु' का षु नहीं होता है । जैसे—**लतासु, रमासु** (अकारान्त में **देवेषु, रामेषु, गृहेषु**) ।

वाक्य प्रयोग

लता, प्रथमा विभक्ति—लता विलसति, लते विलसतः, लताः विलसन्ति ।

बाला, द्वितीया विभक्ति—सः बालां पश्यति, सः बाले पश्यति, सः बालाः पश्यति ।

माला, तृतीया विभक्ति—सा मालया युक्ता, सा मालाभ्यां युक्ता, सा मालाभिः युक्ता ।

कन्या, चतुर्थी विभक्ति—कन्यायै गृहं रोचते, कन्याभ्यां गृहं रोचते, कन्याभ्यः गृहं रोचते ।

ललना, पञ्चमी विभक्ति—स ललनायाः बिभेति, स ललनाभ्यां बिभेति, स ललनाभ्यः बिभेति ।

माला, षष्ठी विभक्ति—एतानि मालायाः पुष्पाणि, एतानि मालयोः पुष्पाणि, एतानि मालानां पुष्पाणि ।

खट्वा, सप्तमी विभक्ति—वयं खट्वायां तिष्ठामः, वयं खट्वयोः तिष्ठामः, वयं खट्वासु तिष्ठामः ।

बालिका, सम्बोधन—हे बालिके, क्व असि ? हे बालिके, क्व स्थः ? हे बालिकाः, क्व स्थ ?

—०—

इकारान्त—इकारान्त शब्द पुंल्लिग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग तीनों में होते हैं।

इकारान्त पुंल्लिग

मुनि

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वि०	मुनिम्	,,	मुनीन्
तृ०	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
च०	मुनये	,,	मुनिभ्यः
पं०	मुनेः	,,	,,
ष०	,,	मुन्योः	मुनीनाम्
स०	मुनौ	,,	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

हरि

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	हरी	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
च०	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पं०	हरेः	,,	,,
ष०	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	,,	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

मुनि के समान ही कपि, कवि, अग्नि, यति, विधि, जलधि, वह्नि, समाधि, व्याधि, उदधि तथा नृपति आदि के रूप चलेंगे। हरि के समान ऋषि तथा गिरि आदि शब्दों के रूप चलते हैं, इन रूपों के तृतीया एकवचन तथा षष्ठी बहुवचन में 'न' के स्थान पर 'ण' हो जायेगा तथा ऋषिणा, ऋषीणाम् व गिरिणा, गिरीणाम् आदि रूप होते हैं।

कवि

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे !	हे कवी !	हे कवयः !

पति

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते !	हे पती !	हे पतयः !

इकारान्त नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	,,	,,
ष०	,,	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	,,	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे, हे वारि !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

दधि (दही)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
च०	दध्ने	,,	दधिभ्यः
पं०	दध्नः	,,	,,
ष०	,,	दध्नोः	दध्नाम्
स०	दध्नि, दधिनि	,,	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे, हे दधि !	हे दधिनी !	हे दधीनि !

अक्षि (आँख)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
च०	अक्ष्णे	,,	अक्षिभ्यः
पं०	,,	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
षं	अक्ष्ण	,,	,,
स०	अक्ष्णि, अक्षिणि	,,	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षे, हे अक्षि !	हे अक्षिणी !	हे अक्षीणि !

अस्थि (हड्डी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अस्थि	अस्थिनी	अस्थीनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	अस्थ्ना	अस्थिभ्याम्	अस्थिभिः

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
च०	अस्थ्ने	अस्थिभ्याम्	अस्थिभ्यः
पं०	अस्थ्नः	,,	,,
ष०	,,	अस्थ्नोः	अस्थ्नाम्
स०	अस्थिनि, अस्थ्नि	,,	अस्थिषु
सम्बोधन	हे अस्थि !	हे अस्थिनी !	हे अस्थीनि !

सक्थि (=जंघा) के रूप भी अस्थि की भाँति चलते हैं, सम्बोधन एकवचन में हे सक्थे, हे सक्थि दोनों रूप मिलते हैं।

इकारान्त स्त्रीलिंग

मति (=बुद्धि)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	,,	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

मति के समान ही बुद्धि, गति, रति, शुद्धि, भक्ति, शक्ति, स्मृति, शान्ति, रीति, नीति, श्रुति, जाति, पंक्ति, रात्रि, गति, धूलि, रुचि, कृति तथा मूर्ति आदि शब्दों के रूप होते हैं रात्रि शब्द के षष्ठी बहुवचन में 'रात्रीणाम्' रूप होंगे।

इकारान्त शब्दों का वाक्य प्रयोग

प्रथमा विभक्ति—	(पु०)	ऋषिः आश्रमं गच्छति ।	ऋषि, एक०
	(नपुं०)	अक्षिणी साश्रुणी स्तः ।	अक्षि, द्वि०
	(स्त्री०)	कवयः काव्यानि रचयन्ति ।	कवि, बहु०
द्वितीया विभक्ति—	(पु०)	स कपिं पश्यति ।	कपि, एक०
	(नपुं०)	स सक्थिनी पश्यति ।	सक्थि, द्वि०
	(स्त्री०)	स तत्र धूलीः पश्यति ।	धूलि, बहु०
तृतीया विभक्ति—	(पु०)	इदम् अग्निना शुद्धं वर्तते ।	अग्नि, एक०
	(नपुं)	सा अक्षिभ्यामपि द्रष्टुं न पारयति ।	अक्षि, द्वि०
	(स्त्री०)	राजा नीतिभिः शासनं करोति ।	नीति, बहु०
चतुर्थी विभक्ति—	(पु०)	नृपतिः कवये धनम् अयच्छत् ।	कवि, एक०
	(नपुं०)	सः सक्थिभ्यां वस्त्रम् अयच्छत् ।	सक्थि, द्वि०
	(स्त्री०)	वयं शुद्धिभ्यः यतामहे ।	शुद्धि, बहु०

पञ्चमी विभक्ति—(पु०)		रमा कपेः बिभेति।	कपि, एक०
	(नपुं०)	सा अक्षिभ्याम् अश्रूणि पातयति।	अक्षि, द्वि०
	(स्त्री०)	वयं स्मृतिभ्यः आचारं शिक्षामः।	स्मृति, बहु०
षष्ठी विभक्ति—(पु०)		अयं विधेः लेखः।	विधि, एक०
	(नपुं०)	इदं वारिणोः मिश्रणम्।	वारि, द्वि०
	(स्त्री०)	अयं भक्तीनां प्रकर्षः।	भक्ति, बहु०
सप्तमी विभक्ति—(पु०)		योगी समाधौ लीनः वर्तते।	समाधि, एक०
	(नपुं०)	अनयोः दध्नोः जलं वर्तते।	दधि, द्वि०
	(स्त्री०)	तस्य कृतिषु सौन्दर्यं वर्तते।	कृति, बहु०
सम्बोधन —(पु०)		हे यते, कुत्र यासि ?	यति, एक०
	(नपुं०)	हे अस्थिनी, कथं त्रुट्यथः ?	अस्थि, द्वि०
	(स्त्री०)	हे शक्तयः, मयि निवसत।	शक्ति, बहु०

—०—

ईकारान्त स्त्रीलिंग

नदी

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	,,	,,
ष०	,,	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	,,	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

दासी, जननी, रात्री, महिषी, रजनी आदि ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नदी के समान होंगे। रात्री का षष्ठी बहुवचन का रूप 'रात्रीणाम्' होगा। गच्छन्ती (जाती हुई), पठन्ती (पढ़ती हुई) इत्यादि शत्रन्त शब्दों के रूप भी नदी की भाँति चलेंगे।

—०—

उकारान्त शब्दों में पुंल्लिग, नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग तीनों प्रकार के शब्द मिलते हैं।

उकारान्त पुंल्लिग

साधु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	,,	साधून्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	,,	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	,,	,,
षष्ठी	,,	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	,,	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

भानु, धातु, पशु, सानु, ऋतु, बिन्दु, मृत्यु, गोमायु, मन्यु तथा सिन्धु आदि उकारान्त पुंल्लिंग शब्दों के रूप साधु की भान्ति चलते हैं।

शिशु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पञ्चमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
षष्ठी	शिशोः	शिश्वोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिश्वोः	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो !	हे शिशू !	हे शिशव !

उकारान्त नपुंसकलिंग

मधु

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	,,	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	,,	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	,,	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो, हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

वसु, अश्रु, अम्बु, वस्तु आदि उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप ऊपर दिए गए मधु के रूपों के समान चलते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिंग

धेनु (गाय)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	,,	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	,,	,,
ष०	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	,,	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

रज्जु, चञ्चु, रेणु, तनु, शतद्रु आदि उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप धेनु के रूपों की भाँति चलते हैं।

उकारान्त शब्दरूपों का वाक्यों में प्रयोग

प्रथमा—	पु० एक०	सः साधुः अत्र न अस्ति	(साधु)
	पु० द्वि०	तौ साधू अत्र न स्तः	(साधु)
	पु० बहु०	ते साधवः अत्र न सन्ति	(साधु)
	नपुं० एक०	अस्मिन् पात्रे मधु न अस्ति	(मधु)
	नपुं० द्वि०	तस्य नेत्रे अश्रुणी न स्तः	(अश्रु)
	नपुं० बहु०	अत्र बहूनि वस्तूनि सन्ति	(वस्तु)
	स्त्री० एक०	तत्र सर्पः नासीत्, रज्जुः आसीत्	(रज्जु)
	स्त्री० द्वि०	मम गृहे द्वे धेनू चरतः	(धेनु)
	स्त्री० बहु०	पुरा प्रतिगृहं धेनवः आसन्	(धेनु)
द्वितीया—	पु० एक०	सः मृत्युम् आलिङ्गति	(मृत्यु)
	पु० द्वि०	त्वं साधू सेवसे	(साधु)
	पु० बहु०	मधुवने सः सर्वान् ऋतून् अलभत	(ऋतु)
	नपुं० एक०	अहं मधु पिबामि।	(मधु)
	नपुं० द्वि०	त्वं वस्तुनी स्पृशसि।	(वस्तु)
	नपुं० बहु०	सा अश्रूणि मुञ्चति।	(अश्रु)
	स्त्री० एक०	काकः चञ्चुम् मांसे क्षिपति।	(चञ्चु)
	स्त्री० द्वि०	बालः धेनू ग्रामात् बहिरनयत्।	(धेनु)
	स्त्री० बहु०	राजा गगने सेनायाः रेणूः अपश्यत्।	(रेणु)
तृतीया—	पु० एक०	सः मित्रस्य मृत्युना विषीदति।	(मृत्यु)
	पु० द्वि०	पशुपालः पशुभ्याम् सह वनम् अगच्छत्	(पशु)

	पु० बहु०	वर्षाया: जलस्य बिन्दुभि: घटं पूरय।	(बिन्दु)
	नपुं० एक०	लाजा: मधुना संसिक्ता:।	(मधु)
	नपुं० द्वि०	तस्य मुखम् अश्रुभ्यां कलुषितं जातम्।	(अश्रु)
	नपुं० बहु०	गृहस्य शोभा शोभनै: वस्तुभि: एव भवति।	(वस्तु)
	स्त्री० एक०	पुत्र: रज्ज्वा धेनुं कर्षति।	(रज्जु)
	स्त्री० द्वि०	स: धेनुभ्यां सह गृहम् आगत:।	(धेनु)
	स्त्री० बहु०	चञ्चुभि: काका: मांसमहरन्।	(चञ्चु)
चतुर्थी—	पु० एक०	स: साधवे न्यवेदयत्।	(साधु)
	पु० द्वि०	त्वं साधुभ्यां किं दास्यसि ?	(साधु)
	पु० बहु०	अहं शिशुभ्य: न कुप्यामि।	(शिशु)
	नपुं० एक०	मधुने स: वृक्षमारोहति।	(मधु)
	नपुं० द्वि०	स: वस्तुभ्यां स्पृहयति।	(वस्तु)
	नपुं० बहु०	वसुभ्य: न किमपि रोचते।	(वसु)
	स्त्री० एक०	मुनि: धेन्वै (धेनवे वा) तृणमानयति।	(धेनु)
	स्त्री० द्वि०	सा रज्जुभ्यां स्पृहयति।	(रज्जु)
	स्त्री० बहु०	मुनय: तनुभ्य: गंगास्नानं कुर्वन्ति।,	(तनु)
पञ्चमी—	पु० एक०	अहं मृत्यो: भीत: न अस्मि।	(मृत्यु)
	पु० द्वि०	स गुरुभ्याम् अधीते	(गुरु)
	पु० बहु०	अयम् आश्रम: साधुभ्य: स्वर्ग: एव।	(साधु)
	नपुं० एक०	स: वस्तुन: बालं वारयति।	(वस्तु)
	नपुं० द्वि०	साऽश्रुभ्याम् मुखं कलुषितम् अकरोत्।	(अश्रु)
	नपुं० बहु०	लाजा:मधुभ्य: विरहिता: सन्ति।	(मधु)
षष्ठी—	पु० एक०	राजकुमार: गुरो: भगिनीं पर्यणयत्।	(गुरु)
	पु० द्वि०	देवदत्त: साध्वो: दर्शनमकरोत्।	(साधु)
	पु० बहु०	दासा: प्रभूणां प्रमादेन तृप्तिम् अलभन्त।	(प्रभु)
	नपुं० एक०	त्वं मधुन: आनन्दं न जानासि।	(मधु)
	नपुं० द्वि०	स: वस्तुनो: फलं न जानाति।	(वस्तु)
	नपुं० बहु०	अहं वसूनाम् ऐश्वर्यं न जानामि।	(वसु)
	स्त्री० एक०	अहो हनुमत: हनो: स्वरूपम् !	(हनु)
	स्त्री० द्वि०	इदं धेन्वो: दुग्धम् अस्ति।	(धेनु)
	स्त्री० बहु०	इदम् रज्जूनाम् आसनम् अस्ति।	(रज्जु)
सप्तमी—	पु० एक०	अर्जुन: गुरौ शरान् न अक्षिपत्।	(गुरु)
	पु० द्वि०	स: सिन्ध्वो: स्नानं करोति।	(सिन्धु)
	पु० बहु०	दुष्ट: साधुषु बाणान् क्षिपति।	(साधु)
	नपुं० एक०	मधुनि मे अभिलाष: वर्तते।	(मधु)

नपुं० द्वि०	अनयोः वस्तुनोः तस्य अभिलाषः ।	(वस्तु)
नपुं० बहु०	सः वसुषु सुष्ठु न व्यवहरति ।	(वसु)
स्त्री० एक०	अस्यां धेन्वां सः स्वामी वर्तते ।	(धेनु)
स्त्री० द्वि०	अनयोः रज्ज्वोः ममाधिकारः वर्तते ।	(रज्जु)
स्त्री० बहु०	सा धेनुषु नियुक्ता ।	(धेनु)
सम्बोधन—पु० एक०	हे गुरो, मां शाधि ।	(गुरु)
पु० द्वि०	हे साधू, कुत्र गच्छथः ?	(साधु)
पु० बहु०	हे ऋतवः, अत्र आगच्छत ।	(ऋतु)
नपुं० एक०	हे मधो, कथं मां न पश्यसि ?	(मधु)
नपुं० द्वि०	हे वस्तूनी, कुत्र गच्छथः ?	(वस्तु)
नपुं० बहु०	हे अश्रूणि, शीघ्रं मुञ्चथ ।	(अश्रु)
स्त्री० एक०	हे धेनो, मधुरं पयः देहि ।	(धेनु)
स्त्री० द्वि०	हे धेनू, अमृतं यच्छतम् ।	(धेनु)
स्त्री० बहु०	हे धेनवः, केन पीडिताः यूयम् ?	(धेनु)

ऊकारान्त स्त्रीलिंग

वधू (बहु)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	"	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	"	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
ष०	"	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	"	वधूषु
सम्बोधन	हे वधू !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

श्वश्रू (सास), चमू (सेना), चम्पू (गद्यपद्यमयी रचना), यवागू (मांड) तथा कर्कन्धू (बेर) आदि अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप वधू के समान होंगे।

वाक्य-प्रयोग

प्र०	सा मम श्वश्रूः अस्ति ।
द्वि०	मम चमूं जेतुं न प्रभवति भवान् ।
तृ०	अयं करि-कलभः वध्वा सार्धं विहरति ।
च०	अहं श्वश्र्वै फलानि आनयामि ।
पं०	कर्कन्ध्वाः रसमादाय सः मोदम् एति ।

ष०	सा यवाग्वा: सेवनं करोति।
स०	अस्याम् चम्प्वां नीलकण्ठस्य विजय: वर्णित: अस्ति।

—०—

ऋकारान्त पुंल्लिंग

पितृ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	पिता	पितरौ	पितर:
द्वि०	पितरम्	,,	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभि:
च०	पित्रे	,,	पितृभ्य
पं०	पितु:	,,	,,
ष०	,,	पित्रो:	पितॄणाम्
स०	पितरि	,,	पितृषु
सम्बोधन	हे पित: !	हे पितरौ !	हे पितर: !

ऋकारान्त स्त्रीलिंग

माता

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	माता	मातरौ	मातर:
द्वि०	मातरम्	,,	मातृ:
तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभि:
च०	मात्रे	,,	मातृभ्य:
पं०	मातु:	,,	,,
ष०	,,	मात्रो:	मातृणाम्
स०	मातरि	,,	मातृषु
सम्बोधन	हे मात: !	हे मातरौ !	हे मातर: !

ऋकारान्त शब्द-रूपों का वाक्य प्रयोग :

प्रथमा—

पितृ—पिता गृहं गच्छति।
तस्य पितरौ गृहे न स्त:।
पितर: तु केवलं जन्महेतव:।

मातृ—माता मन्दिरं याति।
रामलक्ष्मणयो: मातरौ वनम् अगच्छताम्।
मातर: जामातृयज्ञे सम्मिलिता:।

द्वितीया—

पितृ—हे बाल, पितरम् आपृच्छस्व ।
स: पितरौ सेवते ।
स: स्वर्गे पितृन् अपश्यत् ।

मातृ—दुहितर: मातरं नमन्ति ।
भरत: रामलक्ष्मणस्य मातरौ अनमत् ।
राम: वने मातृ: अपश्यत् ।

तृतीया—

पितृ—पित्रा सह नगरं गच्छ ।
स: पितृभ्याम् सह सुखं निवसति ।
शिशव: पितृभि: सह क्रीडन्ति ।

मातृ—मम पिता मात्रा सह मन्दिरं गमिष्यति ।
भरत: मातृभ्याम् सह प्रेम्णा अमिलत् ।
स: मातृभि: सह चित्रकूटम् आयात् ।

चतुर्थी—

पितृ—पुत्र: पित्रे पत्रमलिखत् ।
स: वृद्ध-पितृभ्याम् धनं प्रेषयति ।
सर्वेभ्य: पितृभ्य: नम: ।

मातृ—दुहिता मात्रे पत्रम् अलिखत् ।
भरत: रामलक्ष्मणयो: मातृभ्याम् अचिन्तयत् ।
सर्वाभ्य: मातृभ्य: नम:

पंचमी—

पितृ—स: गृहे पितु: अधीते ।
पितृभ्याम् अन्य: क: शिशुं पालयति ।
स: पितृभ्य: दूरं गच्छति ।

मातृ—कृष्ण: मातु: निलीयते ।
राम: मातृभ्यां विना अयोध्यां न्यवसत् ।
कन्या: मातृभ्य: बिभ्यति ।

षष्ठी—

पितृ—स: पितु: गृहं गच्छति ।
तं दृष्ट्वा पित्रो: मन: प्रसन्नम् अभवत् ।
स: पितृणां पूजक: आसीत् ।

मातृ—स: मातु: स्मरणं करोति ।

Saurabh Rastogi

तयोः मात्रोः नामनी वद ।

स्कन्दः मातॄणां स्मरणम् अकरोत् ।

सप्तमी—

पितृ—रामः पितरि साधुः ।

देवदत्तः पित्रोः साधुः ।

प्रजापतिः पितृषु ज्येष्ठः ।

मातृ—कृष्णः मातरि साधुः ।

तस्मिन् मात्रोः स्नेहः वर्तते ।

सः मातृषु विश्वसिति ।

अभ्यास

प्रश्न 1. रमा, मुनि, साधु, मधु, देव, वधू, पितृ तथा मातृ शब्दों के रूप क्रमशः प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी विभक्तियों तथा सम्बोधन में लिखो तथा उनमें से एकवचनान्त रूपों का सरल संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो ।

प्रश्न 2. निम्न शब्द-रूपों में विभक्ति तथा वचन का निर्देश करो :

मातरि, पितॄणां, धेन्वां, हरीन्, अस्थ्ने, अक्ष्णोः, मतीः ।

हलन्त (पु०) शब्दों के रूप

हलन्त पुंलिंग शब्दों में नकारान्त (राजन्, आत्मन्), सकारान्त (विद्वस्, चन्द्रमस्), तकारान्त (भवत् गच्छत्) तथा जकारान्त (सम्राज्) शब्दों के रूप पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं ।

नकारान्त शब्द, पुंल्लिग

राजन् (राजा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम्	,,	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम	राजभिः
च०	राज्ञे	,,	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	,,	,,
ष०	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	राज्ञि, राजनि	,,	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

आत्मन् (आत्मा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	आत्मानम्	,,	आत्मनः

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च०	आत्मने	,,	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	,,	,,
ष०	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
स०	आत्मनि	,,	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

अध्वन् (मार्ग), अश्मन् (पत्थर) तथा मूर्धन् (सिर) शब्दों के रूप आत्मन् के समान चलेंगे।

सकारान्त शब्द, पुंल्लिग

विद्वस् (विद्वान्)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	,,	,,
ष०	,,	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

चन्द्रमस् (चाँद)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि०	चन्द्रमसम्	,,	,,
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
पं०	चन्द्रमसः	,,	,,
ष०	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमःसु, चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !	हे चन्द्रमसः !

वेधस् (ब्रह्मा), सुमनस् (अच्छे मन वाला), महायशस् (बड़ा यशस्वी), महातेजस् (बड़ा तेजस्वी), दिवौकस् (देवता), दुर्वासस् (दुर्वासा), प्रचेतस् (वरुण) आदि सकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप चन्द्रमस् के समान चलेंगे।

तकारान्त शब्द, पुंल्लिग

भवत् (आप)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वि०	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
च०	भवते	,,	भवद्भ्यः
पं०	भवतः	,,	,,
ष०	,,	भवतोः	भवताम्
स०	भवति	,,	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन् !	हे भवन्तौ !	हे भवन्तः !

गच्छत् (जाता हुआ), पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वि०	गच्छन्तम्	,,	गच्छतः
तृ०	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
च०	गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः
पं०	गच्छतः	,,	,,
ष०	,,	गच्छतोः	गच्छताम्
स०	गच्छति	,,	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन् !	हे गच्छन्तौ !	हे गच्छन्तः

पठत् (पढ़ता हुआ), हसत् (हँसता हुआ), लिखत् (लिखता हुआ), वदत् (बोलता हुआ) आदि शत्रन्त शब्दों के रूप गच्छत् के समान चलेंगे। गच्छत् नपुंसकलिंग शब्द के प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन में गच्छत्, गच्छती, गच्छन्ति रूप बनेंगे। शेष रूप पुंल्लिग की भाँति होंगे। गच्छत् (स्त्रीलिंग) से गच्छन्ती शब्द बनता है जिसके रूप नदी के रूपों के समान गच्छन्ती, गच्छन्त्यौ, गच्छन्त्यः आदि बनेंगे।

जकारान्त शब्द, पुंल्लिग

सम्राज् (चक्रवर्ती नरेश)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि०	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च०	सम्राजे	,,	सम्राड्भ्यः
पं०	सम्राजः	,,	,,
ष०	,,	सम्राजोः	सम्राजाम्

स०	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	हे सम्राट् !	हे सम्राजौ !	हे सम्राजः !

राज् (राजा), विभ्राज् (सूर्य), देवराज् (इन्द्र), परिव्राज् (संन्यासी) शब्दों के रूप भी सम्राज् की भाँति चलेंगे।

हलन्त स्त्रीलिंग शब्द

हलन्त स्त्रीलिंग शब्दों में केवल वाच् शब्द के रूप ही पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।

वाच् (वाणी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	,,	,,
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	,,	वाग्भ्यः
पं०	वाचः	,,	,,
ष०	,,	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	,,	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, हे वाग् !	हे वाचौ !	हे वाचः !

निम्नलिखित चकारान्त शब्दों के रूप भी ऊपर दिए हुए वाच् शब्द के रूपों के समान होते हैं :

रुच् (कान्ति), शुच् (शोक), त्वच् (खाल), ऋच् (ऋग्वेद का मन्त्र), स्रुच् (स्रुवा)।

हलन्त शब्दों का वाक्यों में प्रयोग :

प्रथमा विभक्ति—

राजन्— शूद्रकः विदिशायाः राजा आसीत्।
जनकदशरथौ राजानौ परस्परम् अपश्यताम्।
वार्धक्ये भारतस्य राजानः वनम् अगच्छन्।

आत्मन्— तस्य आत्मा कलुषितः वर्तते।
द्वौ आत्मानौ परस्परं दृष्ट्वा हर्षम् अगच्छताम्।
महापुरुषाणाम् आत्मानः ब्रह्मणि लीनाः भवन्ति।

विद्वस्— विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।
तस्य सभायां द्वौ विद्वांसौ आस्ताम्।
उज्जयिन्यां बहवः विद्वांसः सन्ति।

चन्द्रमस्— चन्द्रमाः पूर्वदिशायाम् उदेति।

गगने द्वौ चन्द्रमसौ न वर्तेते।
सौन्दर्यप्रतियोगितासु बहवः चन्द्रमसः दृश्यन्ते।

भवत्— भवान् कुत्र गच्छति ?
अत्र भवन्तौ कदा आगतौ ?
भवन्तः एव तस्य स्वभावं जानन्ति।

गच्छत्— त्वम् गच्छन् पितरं न अनमः।
युवां गच्छन्तौ मम पितरौ न अमिलतम् ?
यूयं गच्छन्तः किं ग्रहीष्यथ ?

सम्राज्— चन्द्रगुप्तः भारतस्य सम्राट् आसीत्।
पृथुश्च नलश्च चक्रवर्तिनौ सम्राजौ आस्ताम्।
भारतवर्षे बहवः दिग्विजयिनः सम्राजः आसन्।

वाच्— सीतायाः अतीव मधुरा वाग् आसीत्।
तयोः वाचौ परस्परम् अतीव भिन्ने आस्ताम्।
तत्र जनानां भद्राः वाचः आसन्।

द्वितीया विभक्ति—

राजन्—स राजानम् (राजानौ, राज्ञः वा) अब्रवीत्।
आत्मन्—स आत्मानं पश्य, युवाम् आत्मानौ पश्यतम्, यूयम् आत्मनः पश्यत।
विद्वस्—भोजः विद्वांसम् (विद्वांसौ, विदुषः वा) अपूजयत्।
चन्द्रमस्—स रात्रौ एकं चन्द्रमसं पश्यति, न तु चन्द्रमसौ चन्द्रमसः वा।
भवत—अहं भवन्तं (भवन्तौ भवतः वा) पृच्छामि।
गच्छत्—सा गच्छन्तं कुमारं (गच्छन्तौ कुमारौ, गच्छतः कुमारान् वा) अपश्यत्।
सम्राज्—शकाधिपतिः भारतसम्राजम् (भारतसम्राजौ भारतसम्राजः व) अनमत्।
वाच्—भद्रां वाचं वद, भद्रे वाचौ वदतम्, भद्राः वाचः वदत।

तृतीया विभक्ति—

राजन्—महिषी राज्ञा सह अगच्छत्, महिष्यौ राजभ्यां सह अगच्छताम्, महिष्यः राजभिः सह अगच्छन्।

आत्मन्—आत्मना आत्मानं विद्धि, सः महात्मभ्यां सह स्वर्गम् अगच्छत्, सः श्रेष्ठैः महात्मभिः सह वने निवसति।

विद्वस्—सभा विदुषा विना न शोभते, स विद्वद्भ्यां सह वार्ताम् करोति, भोजराजः विद्वद्भिः सह विचरणम् अकरोत्।

चन्द्रमस्—चन्द्रमसा सह तारकाणि अपि आकाशस्य शोभां कुर्वन्ति, तानि चन्द्रमोभ्यां (चन्द्रमोभिः वा) सह कदापि गगने न विलसन्ति।

भवत्—अहं भवता (भवद्भ्यां भवद्भिः वा) सह विद्यालयम् अगच्छम्।

गच्छत्—कार्यवशात् गच्छता पुरुषेण (गच्छद्भ्याम् पुरुषाभ्यां, गच्छद्भिः पुरुषैः वा) सह वार्ता न करणीया ।

सम्राज्—महर्षिः विश्वामित्रः सम्राजा दशरथेन सह संभाषणम् अकरोत्, महर्षयः यज्ञरक्षार्थं सम्राड्भ्यां (सम्राड्भिः वा) सह संभाषणं कुर्वन्ति ।

वाच्—सः यत् मनसा चिन्तयति तदेव वाचा वदति, तौ यत् मनोभ्यां चिन्तयतः तदेव वाग्भ्यां वदतः, ते यत् मनोभिः चिन्तयन्ति तदेव वाग्भिः वदन्ति ।

चतुर्थी विभक्ति—

राजन्—राज्ञे (राजभ्यां राजभ्यः वा) राजवल्लभाः रोचन्ते ।

आत्मन्—आत्मने (महात्मभ्यां महात्मभ्यः वा) पुण्याचरणं कुरु (कुरुतम्) ।

विद्वस्—राजा विदुषे (विद्वद्भ्यां, विद्वद्भ्यः वा) धनानि यच्छति ।

चन्द्रमस्—शिशुः चन्द्रमसे स्पृहयति ।

भवत्—सः भवते (भवद्भ्यां भवद्भ्यः वा) पुस्तकानि आनयति ।

गच्छत्—गच्छते मुनये (गच्छत्भ्यां मुनिभ्यां, गच्छद्भ्यः मुनिभ्यः वा) नमः ।

सम्राज्—मुनिः सम्राजे (सम्राड्भ्यां, सम्राड्भ्यः वा) यशांसि कामयते ।

वाच्—मूकः वाचे तपः अतपत्, मूकौ वाग्भ्यां तपसी अतपताम्, मूकाः वाग्भ्यः तपांसि अतपन् ।

पंचमी विभक्ति—

राजन्—राज्ञः विना सर्वत्र अशान्तिः भवति ।
ताभ्यां राजभ्यां अन्यः कोऽपि समर्थः न आसीत् ।
चोराः राजभ्यः बिभ्यति ।

आत्मन्—आत्मनः किं निलीयते ?

विद्वस्—छात्रः विदुषः गुरोः (विद्वद्भ्यां गुरुभ्यां, विद्वद्भ्यः गुरुभ्यः वा) अधीते ।

चन्द्रमस्—एकस्मात् चन्द्रमसः चन्द्रातपः जायते, न द्वाभ्यां चन्द्रमोभ्यां, न च बहुभ्यः चन्द्रमोभ्यः ।

भवत्—भवतः (भवद्भ्यां भवद्भ्यः वा) विना मम कोऽपि सहायः नास्ति ।

गच्छत् सा गच्छतः राजकुमारात् (गच्छद्भ्यां राजकुमाराभ्यां, गच्छद्भ्यः राजकुमारेभ्यः वा) स्वपरिचयं न ददाति ।

सम्राज्—सम्राजः (सम्राड्भ्यां सम्राड्भ्यः वा) तेजांसि उद्भवन्ति ।

वाच्—तस्य वाचः अमृतं निस्सरति, तयोः वाग्भ्याम् अमृतं जायते, तेषाम् वाग्भ्यः अमृतम् जायते ।

षष्ठी विभक्ति—

राजन्— सः राज्ञः कुमारः आसीत् ।
सः राज्ञोः आदेशो न अमन्यत ।
सः राज्ञां मानं शान्तम् अकरोत् ।

आत्मन्— आत्मा एव आत्मनः सुहृद् भवति ।
द्वयोः आत्मनोः सम्मेलनं जातम् ।
महताम् आत्मनाम् संगतं कर्त्तव्यम् ।

विद्वस्— विदुषः सदा सम्मानं कुरुत ।
विदुषोः कः अन्यतरः अस्ति ?
विदुषाम् कः अन्यतमः अस्ति ?

चन्द्रमस्— चन्द्रमसः शोभां पश्यत ।
गगने द्वयोः चन्द्रमसोः दर्शनं न भवति ।
गगने बहूनां चन्द्रमसाम् दर्शनं न भवति ।

भवत्— भवतः गृहं कुत्र अस्ति ?
भवतोः मयि अतीव प्रेम वर्तते ।
भवताम् दर्शनानि कदा भविष्यन्ति ?

गच्छत्— गच्छतः बालकस्य नाम पृच्छ ।
गच्छतोः बालकयोः नामनी पृच्छ ।
गच्छताम् बालकानां नामानि पृच्छ ।

सम्राज्— सम्राजः प्रभावः अतिमहान् आसीत् ।
सम्राजोः कतरः प्रजापालकः आसीत् ?
सम्राजाम् कः श्रेष्ठः आसीत् ।

वाच्— अयं वाचः विलासः एव वर्तते ।
तयोः वाचोः महान् प्रभावः अभवत् ।
तासाम् वाचाम् अतीव माधुर्यं वर्तते ।

सप्तमी विभक्ति—

राजन्— प्रजाः राज्ञि विश्वासं कुर्वन्ति ।
तयोः राज्ञोः कतरः तुभ्यं रोचते ?
विद्या राजसु पूजिता भवति ।

आत्मन्— योगी आत्मनि एव रमते ।
तयोः आत्मनोः कस्य आत्मा शुद्धः वर्तते ।
युष्माकम् आत्मसु मालिन्यं न वर्तते ।

विद्वस्— सः विदुषि साधुः ।
तयोः विदुषोः भगवतः अतीव कृपा विद्यते ।
दुर्जनः विद्वत्सु सुष्ठु न व्यवहरति ।

चन्द्रमस्— चन्द्रमसि जलं न वर्तते ।
द्वयोः चन्द्रमसोः को भेदः वर्तते ?
चन्द्रमस्सु कतमः तुभ्यं रोचते ?

भवत्—	भवति मम विश्वास: वर्धते ।
	भवतो: मम मन: श्रद्दधाति ।
	भवत्सु मम मन: विश्वसिति ।
गच्छत्—	स: गच्छति मन्त्रिणि दण्डम् अक्षिपत् ।
	स गच्छतो: मन्त्रिणो: लोष्ठान् अक्षिपत् ।
	स: गच्छत्सु सैनिकेषु बाणान् अक्षिपत् ।
सम्राज्—	हे मुने, सम्राजि दयां कुरु ।
	हे मुने, सम्राजो: स्वस्नेहं दर्शय ।
	ऋषय: सम्राट्सु आशीर्वादान् वितरन्ति ।
वाच्—	सज्जनानां वाचि माधुर्यं विद्यते ।
	तयो: वाचो: माधुर्यं नास्ति ।
	युष्माकं वाक्षु रामनाम अंकितम् इव अस्ति ।

सम्बोधन—

राजन्—	हे राजन्, मयि दयां कुरु ।
	हे राजानौ, प्रजासु प्रसीदतम् ।
	हे राजान:, परस्परं युद्धं न कुरुत ।
आत्मन्—	हे आत्मन्, शीघ्रं प्रसीद ।
	हे आत्मानौ, शान्तौ भवतम् ।
	हे आत्मान:, कुत्र गच्छथ ?
विद्वस्—	हे विद्वन्, खेदं मा वह ।
	हे विद्वांसौ, युवां सत्यं वदथ: ।
	हे विद्वांस:, यूयं पूजार्हा: ।
चन्द्रमस्—	हे चन्द्रम:, तव ज्योत्स्ना प्रात: कुत्र गच्छति ?
	हे चन्द्रमसौ, अस्मिन् गृहे द्वयो: स्थानं नास्ति ।
	हे चन्द्रमस:, युष्मासु प्रत्येकं मह्यम् रोचते ।
गच्छत्—	हे गच्छन् मित्र, क्षणं तिष्ठ ।
	हे गच्छन्तौ देवौ, युवां विना मम गति: नास्ति ।
	हे गच्छन्त: विद्वांस:, किं यूयं मां विस्मरिष्यथ ?
सम्राज्—	हे सम्राट्, त्वं धन्योऽसि ।
	हे सम्राजौ, युवां चक्रवर्तिनौ आस्ताम् ।
	हे सम्राज:, यूयं प्रजापालका: भविष्यथ ।
वाच्—	हे वाक्, त्वं पूजनीयाऽसि ।
	हे वाचौ, युवां पूजनीये स्थ: ।
	हे वाच:, यूयं मधुरा: रुचिराश्च ।

सर्वनाम (Pronouns)

सर्वनाम शब्दों के रूप सम्बोधन में नहीं होते। सर्वनाम शब्दों में तत्, यत्, किम्, इदम् तथा अस्मद् व युष्मद् के रूप पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं। अस्मद् तथा युष्मद् को छोड़कर शेष शब्दों के रूप तीनों लिंगों में पृथक्-पृथक् होते हैं। अस्मद् तथा युष्मद् के रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं।

तत् (वह), पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	तम्	,,	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	,,	तेभ्यः
पं०	तस्मात्	,,	,,
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	,,	तेषु

तत् (वह), नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

तृतीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक तत् नपुंसकलिंग के तीनों वचनों में वही रूप बनते हैं जो तत् पुंल्लिग के इन विभक्तियों के तीनों वचनों में रूप होते हैं यथा तेन ताभ्यां तैः इत्यादि।

तत् (वह), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सा	ते	ताः
द्वि०	ताम्	ते	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	,,	ताभ्यः
पं०	तस्याः	,,	,,
ष०	,,	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	,,	तासु

यत् (जो), पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	,,	यान्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	,,	येभ्यः
पं०	यस्मात्	,,	,,
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	,,	येषु

यत् (जो), नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	यत्	ये	यानि
द्वि०	यत्	ये	यानि

यत् नपुंसकलिंग के तृतीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक तीनों वचनों के रूप भी वही बनते हैं जो यत् पुंल्लिग के इन विभक्तियों के तीनों वचनों के रूप होते हैं यथा येन याभ्याम यैः इत्यादि।

यत् (जो), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	,,	,,
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्मै	,,	याभ्यः
पं०	यस्याः	,,	,,
ष०	,,	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	,,	यासु

किम् (कौन), पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	,,	केभ्यः
पं०	कस्मात्	,,	,,
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	,,	केषु

किम् (कौन), नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	किम्	के	कानि

तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुंल्लिग रूपों के समान बनते हैं।

किम् (कौन), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	,,	,,
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	,,	काभ्यः
पं०	कस्याः	,,	,,
ष०	,,	कयोः	कासाम्
स०	कस्याम्	,,	कासु

इदम् (यह), पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्	,,	इमान्
तृ०	अनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	,,	एभ्यः
प०	अस्मात्	,,	,,
ष०	अस्य	अनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	,,	एषु

इदम् (यह), नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्	इमे	इमानि

शेष रूप पुंल्लिग की तरह बनते हैं।

इदम् (यह), स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्	,,	,,
तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	,,	आभ्यः
पं०	अस्याः	,,	,,
ष०	,,	अनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्		आसु

अस्मद् (मैं)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृ०	मया	आवाभ्याम	अस्माभिः
च०	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्याम्, नः
पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम, मे	आवयोः नौ	अस्माकम्, नः
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वां	युष्मान्, वः
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वां	युष्मभ्यम्, वः
पं०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव, ते	युवयोः, वां	युष्माकम्, वः
स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

सर्व, पुंल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व, नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व, स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्वनाम शब्द-रूपों का वाक्य में प्रयोग—

प्रथमा विभक्ति एकवचन—

तत्— सः मम भ्राता अस्ति।
तत् मम पुस्तकम् अस्ति।
सा मम भगिनी अस्ति।

यत्— यः विद्यालयं गच्छति सः मम मित्रम् अस्ति।
यत् तव हस्ते, तत् मम चित्रम् अस्ति।
या गृहे तिष्ठति सा मम माता अस्ति।

किम्— अत्र कः तिष्ठति ?
रामस्य मुखे किम् वस्तु वर्तते ?
कृष्णस्य मनसि का सुन्दरी तिष्ठति ?

इदम्— अयं बालकः अतीव चञ्चलः अस्ति।
इदं चित्रं मनोहरं वर्तते।
इयं देवी मन्दिरं गता।

अस्मद्— अहं गुरुजनस्य अभिप्रायं न जानामि।

युष्मद्— त्वं देवमन्दिरं न गच्छसि।

प्रथमा विभक्ति, द्विवचन—

तत्— तौ बालकौ फलानि खादतः।
ते पुस्तके गृहे न स्तः।
ते लते पुष्पिते जाते।

यत्— तौ मम भ्रातरौ यौ विद्यालयं गच्छतः।
ते एव बालाय रोचेते ये चित्रे सुन्दरे स्तः।
ते न पण्डिते, ये छात्रे सभायां न तिष्ठतः।

किम्— रामेण सह कौ वनं गतौ ?
तुभ्यं के वस्तु रोचेते ?
के छात्रे तत्र गते ?

इदम्— इमौ बालकौ नेतारौ भविष्यतः।
इमे फले मधुरे स्तः।
इमे माले रामाय देहि।

अस्मद्— आवाम् अत्र न आगमिष्याव:।

युष्मद्— युवां किं पठथ: ?

प्रथमा विभक्ति, बहुवचन—

तत्— ते मोहनस्य पुत्रा: सन्ति।
तानि देवस्य पुस्तकानि सन्ति।
ता: बाधा: रामस्य मार्गे न सन्ति।

यत्— ये पठन्ति ते सफला: भवन्ति।
यानि पुस्तकानि पटले सन्ति तानि रामाय प्रयच्छ।
या: देवता: शीघ्रम् प्रसन्ना: भवन्ति ता: अत्र पूज्यन्ते।

किम्, इदम्—इमे सर्वे के सन्ति ?
इमानि सर्वाणि कानि सन्ति ?
इमा: सर्वा: का सन्ति ?

अस्मद्— वयं हिन्दुराष्ट्राङ्गभूता: त्वां सादरं नमाम:।

युष्मद्— यूयं भारतस्य वन्दनां कुरुत।

द्वितीया विभक्ति—

तत्— तं बालकं को न जानाति ?
तत् पत्रं पीतं वर्तते।
तां धारां नाहं पश्यामि।

यत्— यं पृच्छसि स एव प्रतिषेधं करोति।
यत्किंचित् ब्रूहि।
यां बालिकां त्वं पश्यसि सा देवस्य भगिनी अस्ति।

किम्— कं बालकम् आह्वयसि ?
किं फलम् इच्छसि ?
कां देवीं प्रसन्नां करिष्यसि।

इदम्— इमं बालकं न ताडय।
इदं फलम् आनय।
इमां नारीं पृच्छ।

अस्मद्— स: मां ताडयति।

युष्मद्— अहं त्वां पृच्छामि।

तृतीया विभक्ति—

तत्— स: तेन सह वसति ।
तेन पात्रेण सह इदं पात्रमपि धारय ।
अहं तया सह उपवनं गमिष्यामि ।

यत्— येन पुत्रेण सुखं नास्ति तेन को लाभ: ?
येन ज्ञानेन मुक्तिर्नास्ति तत् किं ज्ञानम् ?
यया रस: न प्राप्यते सा का कविता ?

किम्— केन इदं पत्रं लिखितम् ?
केन कारणेन त्वं गृहे न तिष्ठसि ?
कया भाषया त्वं पत्रं लिखसि ?

इदम्— अनेन भूपेन सह मैत्रीं कुरु ।
अनेन मित्रेण सह वार्तां कुरु ।
अनया कथया किं प्रयोजनम् अस्ति ?

अस्मद्— मया हसितम् ।

युष्मद्— त्वया रुदितम् ।

चतुर्थी विभक्ति—

तत्— तस्मै श्रीगुरवे नम: ।
तस्मै कुण्डलाय हिरण्यम् आनय ।
तस्यै देव्यै निवेदयामि ।

यत् किम्— यस्मै कस्मैचिद् दातुमिच्छामि ।
यस्यै कस्यैचिद् लिखितुम् इच्छामि ।

किम्— त्वं कस्मै फलाय स्पृहयसि ?

इदम्— अस्मै किं रोचते ?
अस्यै अहं सर्वस्वं दास्यामि ।

अस्मद्— मह्यं पुस्तकं देहि ।

युष्मद्— तुभ्यं मोदकम् आनयामि ।

पञ्चमी विभक्ति—

तत्— तस्मात् त्वं मह्यं कुप्यसि ।
तस्या: विना मम जीवनं न भविष्यति ।

यत्— यस्मात् हेतो: त्वं क्रुध्यसि तदहं जानामि ।
यस्या: विना त्वं चिन्तितोऽसि सा मम गृहे वर्तते ।

किम्— त्वं कस्मात् दूरवीक्षणं न क्रीणासि ?
कस्या: नद्या: जलम् आनयसि ?

इदम्— अस्मात् विना तव निर्वाहः न भविष्यति ।
अस्याः पुस्तकं गृहाण ।

अस्मद्— मत् दूरं तिष्ठ ।

युष्मद्— त्वत् तु मम सेवकोऽपि विद्वत्तरः अस्ति ।

षष्ठी विभक्ति—

तत्— सः तस्य पुत्रः अस्ति ।
तस्य मित्रस्य दर्शनं सुखदम् अस्ति ।
तस्याः जनन्याः पुत्रं देशभक्तम् आसीत् ।

यत्— यस्य भाग्ये सुखं नास्ति सः वृथा श्रमं करोति ।
यस्याः समीपे पुत्ररत्नमस्ति सा एव धन्या ।

किम्— कस्य गृहे चौराः प्रविष्टाः ?
कस्याः नद्याः जलं पवित्रम् ?

इदम्— अस्य ज्ञानं मोक्षप्रदं वर्तते ।
अस्याः हृदयम् अतीव शुद्धमस्ति ।

अस्मद्— मम माता त्वां जानाति ।

युष्मद्— तव पिता मां जानाति ।

सप्तमी विभक्ति —

तत्— मम हृदयं तस्मिन् (तस्यां वा) विश्वसिति ।

यत्— यस्मिन् यस्यां वा मेऽभिलाषः सः (सा वा) अत्र न विद्यते ।

किम्— कस्मिन् (कस्यां वा) तव मनः स्नेहयति ।

इदम्— अस्मिन् (अस्यां वा) मम मनः स्नेहयति ।

अस्मद्, युष्मद्—मूर्खः मयि (त्वयि वा) सुष्ठु न व्यवहरति ।

संख्यावाचक शब्द

एक=एक

(केवल एकवचन में तीनों लिंगों में पृथक्-पृथक् रूप होते हैं ।)

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

द्वि = दो

(केवल द्विवचन में रूप होते हैं।)

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

त्रि = तीन

(केवल बहुवचन में रूप होते हैं।)

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर् = चार

(केवल बहुवचन में रूप होते हैं।)

विभक्ति	पुंल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

विशेष—पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् के तीनों लिंगों में समान रूप होते हैं।

विभक्ति	पञ्चन्	षष्	सप्तन्	अष्टन्	नवन्	दशन्
प्रथमा	पञ्च	षट्-षड्	सप्त	अष्टौ-अष्ट	नव	दश
द्वितीया	पञ्च	षट्-षड्	सप्त	अष्टौ-अष्ट	नव	दश

विभक्ति	पञ्चन्	षष्	सप्तन्	अष्टन्	नवन्	दशन्
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टभिः- अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	,,	नवभ्यः	दशभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

क्रमबोधक पूरणार्थक संख्या शब्द निम्नलिखित हैं :

अंक	पुंल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१ (एकः)	प्रथमः	प्रथमम्	प्रथमा
२ (द्वि)	द्वितीयः	द्वितीयम्	द्वितीया
३ (त्रि)	तृतीयः	तृतीयम्	तृतीया
४ (चतुर्)	चतुर्थः	चतुर्थम्	चतुर्थी
५ (पञ्च)	पञ्चमः	पञ्चमम्	पञ्चमी
६ (षट्)	षष्ठः	षष्ठम्	षष्ठी
७ (सप्त)	सप्तमः	सप्तमम्	सप्तमी
८ (अष्ट)	अष्टमः	अष्टमम्	अष्टमी
९ (नव)	नवमः	नवमम्	नवमी
१० (दश)	दशमः	दशमम्	दशमी

विविध पदों का वाक्यों में प्रयोग

निम्नलिखित पदों को वाक्यों में प्रयुक्त करो :

साधूनाम्, मतीनाम्, तासाम्, गच्छताम्, राज्ञाम्, युष्माकम्, विदुषाम्, केषाम्, कविभ्यः, लताभ्यः, तेभ्यः, गच्छद्भ्यः, गच्छन्त्या, भ्रात्रा, फलानि, तस्यै, भानोः, नदीनाम्, विद्वद्भ्यः, वारिणा, भवतः, आत्मना, स्त्रीभ्याम्, के, द्वौ, तस्मै ।

साधूनाम्— साधूनां संगतं हितकरं भवति ।

मतीनाम्— वैज्ञानिकानां मतीनां विलसनं सर्वत्र चमत्करोति ।

तासाम्— तासां गीतं मधुरम् आसीत् ।

गच्छताम्— गच्छतां जनानां शीघ्रम् अनुसरणं कुरुत ।

राज्ञाम्— राज्ञां स्वभावः एव ईदृशः वर्तते ।

युष्माकं— युष्माकं हृदयं न कोऽपि जानाति ।

विदुषां— अष्टावक्रः विदुषां सभायाम् अवदत् ।

केषां— मया केषामपि पत्राणि न प्राप्तानि ।

कविभ्यः— राजा कविभ्यः प्रभूतं धनम् अयच्छत् ।

लताभ्यः— प्रकृतिः लताभ्यः पुष्पाणि प्रयच्छति ।

तेभ्यः— तेभ्यः त्वं किं यास्यसि ?

गच्छद्भ्यः—राजा गुरुकुलं गच्छद्भ्यः पुत्रेभ्यः न्यवेदयत् ।

गच्छन्त्या— गृहं गच्छन्त्या त्वया सह अहमपि गमिष्यामि ।

भ्रात्रा— लक्ष्मणः भ्रात्रा सह यानम् अगच्छत् ।

फलानि— सः मधुराणि फलानि खादति ।

तस्यै— तस्यै अधुना किमपि न रोचते ।

भानोः— इन्दुः भानोः प्रकाशम् आददाति ।

नदीनाम्— तासां नदीनाम् उद्गमस्थानं कुत्र विद्यते ?

विद्वद्भ्यः— भोजः विद्वद्भ्यः लक्षद्वयम् अयच्छत् ।

वारिणा— कृषकाः वारिणा क्षेत्राणि सिञ्चन्ति ।

भवतः— अत्रं आगत्य भवतः मनः शान्तं भविष्यति ।

आत्मना— आत्मना आत्मानम् उद्धरेत् ।

स्त्रीभ्याम्— एताभ्यां स्त्रीभ्यां अम्लपदार्थाः एव रोचन्ते ।

के— के फले तुभ्यं न रोचेते ?

द्वौ— द्वौ छात्रौ तत्र पठतः ।

तस्मै— सः तस्यै स्वकीयं पुस्तकम् अददात् ।

अभ्यास

1. अधोलिखितानाम् रूपं लिखत :

अधोलिखित के रूप लिखिए :

Decline the following :

किम् (स्त्री० सप्तमी विभक्ति)	राजन् (षष्ठी विभक्ति)
लता (तृतीया विभक्ति)	युष्मद् (तृतीया विभक्ति)
युष्मद् (पञ्चमी विभक्ति)	लता (पञ्चमी विभक्ति)

2. निम्नांकितशब्दानां षष्ठीविभक्तिबहुवचनरूपाणि विलिख्य स्ववाक्येषु प्रयुक्त :

निम्नांकित शब्दों के षष्ठी बहुवचन रूप लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

Decline the following words in the genitive case in the plural number and use them in your sentences :

(*i*) साधु (*ii*) मति (*iii*) तत् (स्त्रीलिंग) (*iv*) गच्छत् (v) राजन् (*vi*) युष्मद् (*vii*) विद्वस् (*viii*) किम् ।

3. निम्नांकितशब्दानां चतुर्थीविभक्तिबहुवचनरूपाणि विलिख्य स्ववाक्येषु प्रयुक्त :

निम्नांकित शब्दों के चतुर्थी बहुवचन रूप लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

Decline the following words in the dative case in the plural number and use them in your sentences :

(*i*) कवि (*ii*) लता (*iii*) तत् (नपुंसकलिंग) (*iv*) गच्छत् (पुंल्लिग)

4. अधोलिखितानां यथानिर्दिष्टं रूप विधाय संस्कृतभाषायां वाक्यप्रयोगं कुरुत :

नीचे लिखों के यथानिर्दिष्ट रूप बनाकर संस्कृत भाषा में वाक्य बनाइये :

Make sentences in your Sanskrit from the formations as indicated below :

(*i*) गच्छत् (स्त्री०, प्र०, एक०), भ्रातृ (तृ०, एक०) ।
(*ii*) फल (द्वि०, बहु०), युष्मद् (पु०, ष०, बहु०) ।
(*iii*) तत् (स्त्री०, चतु०, एक०),
(*iv*) भवत् (पु०, ष०, एक०), आत्मन् (तृ० एक०) ।
(*v*) स्त्री (चतु०, द्वि०), किम् (नपुं०, प्र०, द्वि०) ।
(*vi*) द्वि (पु०, प्रथमा), तत् (पु०, चतु०, एक०) ।

5. अधोलिखितानां रूपाणि लिखत तेषां प्रयोगं स्ववाक्येषु कुरुत :

निम्नलिखित के रूप लिखिए और उसका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

Illustrate the use of the following in your own sentences :

(*i*) भानु in पंचमी एकवचन;
(*ii*) नदी in षष्ठी बहुवचन;
(*iii*) विद्वस् in चतुर्थी बहुवचन;
(*iv*) वारि in तृतीया;
(*v*) भवत् in षष्ठी द्विवचन ।

6. कोष्ठगतसंकेतद्वारा रिक्तस्थानपूर्ति विधत्त :

कोष्ठ में दिए गए संकेत द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

Fill in the blanks by means of clues indicated in the brackets :

(क) (*i*) वृक्षेषु (कपि)......अपि वसन्ति ।
(*ii*) त्वं पुस्तकानां (पठन)......पण्डितो भविष्यसि ।

(*iii*) कृषकाः (क्षेत्र)……बीजान् विकिरन्ति ।
(*iv*) वयं भ्रातृद्वितीयायां (भगिनी)……दक्षिणां दद्मः ।
(*v*) गंगा (हिमालय)……निःसरति ।
(संकेत—कपयः, पठनेन, क्षेत्रेषु, भगिन्यै, हिमालयात्)

(ख) (*i*) स्वार्थं समीहते……। (सर्व)
(*ii*) अधोलिखितेषु द्वयोः……सविग्रहं नाम निर्दिशत । (समास)
(*iii*) स सुवर्णं……ददौ । (भिक्षुक)
(*iv*) आत्मना……उद्धरेत् । (आत्मन्)
(संकेत—सर्वः, समासयोः, भिक्षुकाय, आत्मानम्)

(ग) (*i*) ……कालिदासः श्रेष्ठः । (कवि)
(*ii*) ……विना कुतो विद्या ? (परिश्रम)
(संकेत—कविषु, परिश्रमम्)

(घ) (*i*) ……सर्वत्र पूज्यते । (विद्वस्)
(*ii*) शिक्षकः……ज्ञानं ददाति । (छात्र)
(*iii*) छात्राः……गच्छन्ति । (विद्यालय)
(संकेत—विद्वान्, छात्राय, विद्यालयम्)

7. अधोलिखितानां रूपाणि निर्दिष्टविभक्तीनां सर्वेषु वचनेषु रूपाणि लिखत :

निम्नलिखित शब्दों के रूप निर्दिष्ट विभक्ति के सभी वचनों में लिखिए :

Decline the following words in all the numbers of the given cases :

(क) मुनि (तृतीया), साधु (चतुर्थी), पितृ (प्रथमा), युष्मद् (षष्ठी), भवत् (प्रथमा) ।

(ख) राजन् (सप्तमी), अस्मत् (पञ्चमी), हरि (तृतीया), तत् (प्रथमा), चन्द्रमस् (द्वितीया), पितृ (प्रथमा) ।

(ग) बालक (सप्तमी), दातृ (द्वितीया), राजन् (तृतीया), तत् (पुं०, प्रथम), किम् (नपुं०, चतुर्थी) ।

(घ) कवि (प्रथमा), रिपु (पञ्चमी), विद्वस् (प्रथमा), अस्मद् (चतुर्थी), इदम् (स्त्री०, द्वितीया) ।

(ङ) मुनि (सप्तमी), भानु (चतुर्थी), मातृ (द्वितीया), यत् (पुं०, पञ्चमी), युष्मद् (प्रथमा) ।

—०—

4

धातु-रूप

(CONJUGATION)

क्रिया के मूल रूप (Root) को धातु कहते हैं। विभिन्न काल तथा अवस्थाओं में, तीनों पुरुषों तथा तीनों वचनों में धातु के साथ तिङ् प्रत्ययों को जोड़ा जाता है। समस्त धातुओं को दस गणों (Classes) में बांटा गया है तथा इन गणों के पृथक्-पृथक् चिह्न (विकरण) होते हैं जिनको तिङ् प्रत्यय से पूर्व धातु में लगाया जाता है।

इन गणों के नाम तथा चिह्न निम्नलिखित हैं :

क्र०	गणनाम (Class)	धातुएं	विकरण	चिह्न
1.	भ्वादिगण	भू आदि धातुएँ	शप्	अ, गुण
2.	अदादिगण	अद् ,, ,,	शप् का लुक्	×
3.	जुहोत्यादिगण	हु ,, ,,	शप् का श्लु	×, द्वित्व
4.	दिवादिगण	दिव् ,, ,,	श्यन्	य
5.	स्वादिगण	सु ,, ,,	श्नु	नु
6.	तुदादिगण	तुद् ,, ,,	श	अ
7.	रुधादिगण	रुध् ,, ,,	श्नम्	न
8.	तनादिगण	तन् ,, ,,	उ	उ
9.	क्रयादिगण	क्री ,, ,,	श्ना	ना
10.	चुरादिगण	चुर् ,, ,,	णिच् (इ) +शप्	अय, गुण

लकार—विभिन्न कालों तथा अवस्थाओं को लकार कहा जाता है। संस्कृत में कुल ग्यारह लकार होते हैं जिनमें से निम्न पाँच लकार ही हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।

(क) लट् लकार (वर्तमान काल, Present Tense)—भवति इत्यादि
(ख) लङ् लकार (भूतकाल, Past Tense)—अभवत् इत्यादि
(ग) लृट् लकार (भविष्यत्काल, Future Tense)—भविष्यति इत्यादि
(घ) लोट् लकार (आज्ञादि, Imperative Mood)—भवतु इत्यादि
(ङ) विधिलिङ् लकार (विध्यादि, Potential Mood)—भवेत् इत्यादि।

विधिलिङ् का प्रयोग नम्रतापूर्वक आदेश देने, कार्य कराने, सलाह देने,

निमन्त्रण देने, प्रेमपूर्वक आग्रह तथा सत्कारपूर्वक व्यापार, प्रश्न एवं प्रार्थना आदि अर्थों में होता है। यह चाहिए अर्थ को भी प्रकट करता है।

तिङ् प्रत्यय (Tense suffixes)—धातुओं से लकारों के रूप बनाने के हेतु जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं उन्हें **तिङ् प्रत्यय** कहते हैं। तिङ् प्रत्यय लगने पर शब्दों की तिङन्त संज्ञा हो जाती है। तिप् से लेकर महिङ् तक तिङ् प्रत्ययों की संख्या अठारह है। समस्त धातुओं को अर्थ की दृष्टि से प्रायः परस्मैपद तथा आत्मनेपद—इन दो भागों में बाँटा गया है। कुछ धातुएँ उभयपदी होती हैं। नौ प्रत्यय परस्मैपद के हैं तथा नौ प्रत्यय आत्मनेपद के। पुरुष तथा वचन का भेद दिखलाते हुए तिङ् प्रत्ययों को निम्न तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है :

तिङ्, परस्मैपद

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिप् (ति)	तस् (तः)	झि (अन्ति)
	(वह, यह)	(वे दो, ये दो)	(वे सब, ये सब)
मध्यम पुरुष	सिप् (सि)	थस् (थः)	थ
	(तू)	(तुम दो)	(तुम सब)
उत्तम पुरुष	मिप् (मि)	वस् (वः)	मस् (मः)
	(मैं)	(हम दो)	(हम सब)

तिङ्, आत्मनेपद

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ (अन्त)
	(वह, यह)	(वे दो, ये दो)	(वे सब, ये सब)
मध्यम पुरुष	थास् (थाः)	आथाम्	ध्वम्
	(तू)	(तुम दो)	(तुम सब)
उत्तम पुरुष	इट् (इ)	वहिङ् (वहि)	महिङ् (महि)
	(मैं)	(हम दो)	(हम सब)

विभिन्न लकारों में उपर्युक्त प्रत्ययों का निम्न स्वरूप हो जाता है। जैसे—

तिङ्, परस्मैपद

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ति	तः	अन्ति
म० पु०	सि	थः	थ
उ० पु०	मि	वः	मः

उत्तम पुरुष में आ जुड़ जाता है।

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	त्	ताम्	अन्
म० पु०	स् (:)	तम्	त
उ० पु०	अम्	व	म

लङ् लकार में धातु से पूर्व (अ) लगता है।

लृट् लकार

प्र० पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
म० पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उ० पु०	स्यामि	स्यावः	स्यामः

लोट् लकार

प्र० पु०	तु, तात्	ताम्	अन्तु
म० पु०	०, तात्	तम्	त
उ० पु०	आनि	आव	आम

विधिलिङ्

(भ्वादि, दिवादि, तुदादि तथा चुरादि गणों में)

प्र० पु०	इत्	इताम्	इयुः
म० पु०	इः	इतम्	इत
उ० पु०	इयम्	इव	इम

(शेष गुणों में)

प्र० पु०	यात्	याताम्	युः
म० पु०	याः	यातम्	यात
उ० पु०	याम्	याव	याम

तिङ्, आत्मनेपद

लट् लकार

प्र० पु०	ते	इते	अन्ते
म० पु०	से	इथे	ध्वे
उ० पु०	इ	वहे	महे

लङ् लकार

प्र० पु०	त	इताम्	अन्त
म० पु०	थाः	इथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ए	वहि	महि

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते
म० पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ० पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लोट् लकार

प्र० पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म० पु०	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ऐ	आवहे	आमहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	इत	इयाताम्	इरन्
म० पु०	इथाः	इयाथाम्	इध्वम्
उ० पु०	इय	इवहि	इमहि

विशेष—1. भ्वादिगण, दिवादिगण, तुदादिगण तथा चुरादिगण की धातुओं के साथ प्रत्येक लकार के उत्तम पुरुष में प्रत्यय से पूर्व आ भी लगता है जैसे भवामि, भवावः, भवामः, दीव्यामि, दीव्यावः, दीव्यामः, तुदामि, तुदावः, तुदामः, चोरयामि, चोरयावः, चोरयामः, इत्यादि ।

2. भू, पठ् आदि सेट् धातुओं के लृट् लकार में धातु के साथ इ (इट्) जुड़ जाता है । जैसे भविष्यति, पठिष्यति इत्यादि ।

3. याच्, नी तथा हृ इत्यादि कुछ धातुएँ उभयपदी होती हैं जिनके साथ परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों के प्रत्यय लगते हैं । भ्वादिगण की पठ्, भू, पा, गम्, स्था, दृश्, दा, स्मृ तथा घ्रा व सद् (परस्मैपदी), लभ्, सेव्, मुद् (आत्मनेपदी) तथा याच्, नी, हृ (उभयपदी) धातुओं के रूप नीचे दिए जा रहे हैं ।

पठ् धातु (पढ़ना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठति (वह पढ़ता है)	पठतः (वे दो पढ़ते हैं)	पठन्ति (वे सब पढ़ते हैं)
म० पु०	पठसि (तू पढ़ता है)	पठथः (तुम दो पढ़ते हो)	पठथ (तुम सब पढ़ते हो)
उ० पु०	पठामि (मैं पढ़ता हूँ)	पठावः (हम दो पढ़ते हैं)	पठामः (हम सब पढ़ते हैं)

लङ् लकार (भूतकाल)

प्र० पु०	अपठत् (वह पढ़ा)	अपठताम् (वे दो पढ़े)	अपठन् (वे सब पढ़े)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
	(तू पढ़ा)	(तुम दो पढ़े)	(तुम सब पढ़े)
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम
	(मैं पढ़ा)	(हम दो पढ़े)	(हम सब पढ़े)

लोट् लकार (आज्ञादि)

प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
	(वह पढ़े)	(वे दो पढ़ें)	(वे सब पढ़ें)
म० पु०	पठ	पठतम्	पठत
	(तू पढ़)	(तुम दो पढ़ो)	(तुम सब पढ़ो)
उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम
	(मैं पढ़ूँ)	(हम दो पढ़ें)	(हम सब पढ़ें)

विधिलिङ (विधि आदि)

प्र० पु०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
	(उसे पढ़ना चाहिए)	(उन दो को पढ़ना चाहिए)	(उन्हें पढ़ना चाहिए)
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
	(तुझे पढ़ना चाहिए)	(तुम दो को पढ़ना चाहिए)	(तुम सबको पढ़ना चाहिए)
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम
	(मुझे पढ़ना चाहिए)	(हम दो को पढ़ना चाहिए)	(हम सबको पढ़ना चाहिए)

लृट लकार (भविष्यत्काल)

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
	(वह पढ़ेगा)	(वे दो पढ़ेंगे)	(वे सब पढ़ेंगे)
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
	(तू पढ़ेगा)	(तुम दो पढ़ोगे)	(तुम सब पढ़ोगे)
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
	(मैं पढ़ूँगा)	(हम दो पढ़ेंगे)	(हम सब पढ़ेंगे)

भू धातु (होना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
	(वह होता है)	(वे दो होते हैं)	(वे सब होते हैं)
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
	(तू होता है)	(तुम दो होते हो)	(तुम सब होते हो)
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः
	(मैं होता हूँ)	(हम दो होते हैं)	(हम सब होते हैं)

लृट् लकार (भविष्यत्काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति (वह होगा)	भविष्यतः (वे दो होंगे)	भविष्यन्ति (वे सब होंगे)
मध्यम पुरुष	भविष्यसि (तू होगा)	भविष्यथः (तुम दो होंगे)	भविष्यथ (तुम सब होंगे)
उत्तम पुरुष	भविष्यामि (मैं हूंगा)	भविष्यावः (हम दो होंगे)	भविष्यामः (हम सब होंगे)

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु (वह हो)	भवताम् (वे दो हों)	भवन्तु (वे सब हों)
मध्यम पुरुष	भव (तू हो)	भवतम् (तुम दो हो)	भवत (तुम सब हो)
उत्तम पुरुष	भवानि (मैं होऊँ)	भवाव (हम दो होवें)	भवाम (हम सब हों)

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत् (वह हुआ)	अभवताम् (वे दो हुए)	अभवन् (वे सब हुए)
मध्यम पुरुष	अभवः (तू हुआ)	अभवतम् (तुम दो हुए)	अभवत (तुम सब हुए)
उत्तम पुरुष	अभवम् (मैं हुआ)	अभवाव (हम दो हुए)	अभवाम (हम सब हुए)

विधिलिङ्ग लकार (विधि आदि)

प्रथम पुरुष	भवेत् (वह होवे)	भवेताम् (वे दो होवें)	भवेयुः (वे सब होवें)
मध्यम पुरुष	भवेः (तू हो)	भवेतम् (तुम दो हो)	भवेत (तुम सब हो)
उत्तम पुरुष	भवेयम् (मैं होऊँ/मुझे होना चाहिए)	भवेव (हम दो होवें/हम दोनों को होना चाहिए)	भवेम (हम सब हों/हम सब को होना चाहिए)

पा धातु (पीना)

पा धातु को लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में 'पिब्' आदेश हो जाता है किन्तु लृट् में पा ही रहता है। जैसे—

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पिबति	पिबत:	पिबन्ति
म० पु०	पिबसि	पिबथ:	पिबथ
उ० पु०	पिबामि	पिबाव:	पिबाम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म० पु०	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उ० पु०	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट् लकार

प्र० पु०	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
म० पु०	पिब	पिबतम्	पिबत
उ० पु०	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयु:
म० पु०	पिबे:	पिबेतम्	पिबेत
उ० पु०	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लृट् लकार

प्र० पु०	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
म० पु०	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उ० पु०	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

गम् (जाना)

गम् धातु को लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में गच्छ् आदेश हो जाता है, किन्तु लृट् में गम् ही रहता है। जैसे—

लृट् लकार

प्र० पु०	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लोट् लकार

प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
म० पु०	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लृट् लकार

प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

स्था (ठहरना)

स्था धातु को लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में तिष्ठ् आदेश हो जाता है, किन्तु लृट् लकार में 'स्था' ही रहता है। जैसे—

लट् लकार

प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
म० पु०	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
उ० पु०	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म० पु०	अतिष्ठ:	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ० पु०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लोट् लकार

प्र० पु०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म० पु०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ० पु०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयु:
म० पु०	तिष्ठे:	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ० पु०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म० पु०	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ० पु०	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

दृश् (देखना)

दृश् धातु को लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में 'पश्य्' आदेश होता है किन्तु लृट् में दृश् ही रहता है। जैसे—

लट् लकार

प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० पु०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० पु०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लोट् लकार

प्र० पु०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० पु०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उ० पु०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट् लकार

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

दा (देना)

दा धातु को लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में 'यच्छ्' आदेश हो जाता है। यच्छ् के रूप गच्छ् के समान चलेंगे। लृट् में दास्यति आदि रूप बनेंगे। जैसे—

लट् लकार

प्र० पु०	म० पु०	उ० पु०
यच्छति, तः, न्ति	यच्छसि, थः, थ	यच्छामि, वः, मः

लङ् लकार

अयच्छत्, ताम्, न्	अयच्छः, तम्, त	अयच्छम्, ाव, ाम

लोट् लकार

प्र० पु०	म० पु०	उ० पु०
यच्छतु, ताम्, न्तु	यच्छ, तम्, त	यच्छानि, व, म

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
यच्छेत्, ताम्, युः	यच्छेः, तम्, त,	यच्छेयम्, व, म

लृट् लकार

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

स्मृ धातु (याद करना)

लट् लकार

प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० पु०	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० पु०	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० पु०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० पु०	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

लोट् लकार

प्र० पु०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० पु०	स्मर	स्मरताम्	स्मरत
उ० पु०	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म० पु०	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ० पु०	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

लृट् लकार

प्र० पु०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० पु०	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० पु०	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

घ्रा (जिघ्र) (सूंघना)

परस्मैपद

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
म० पु०	जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ
उ० पु०	जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्
म० पु०	अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत
उ० पु०	अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम

लोट् लकार

प्र० पु०	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु
म० पु०	जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उ० पु०	जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः
म० पु०	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत
उ० पु०	जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम

लृट् लकार

प्र० पु०	घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति
म० पु०	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उ० पु०	घ्रास्यामि	घ्रास्यावः	घ्रास्यामः

सद् धातु (दुखी होना)

सद् धातु को लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में 'सीद्' आदेश हो जाता है, किन्तु लृट् में स्यति से पूर्व सद् को सत् हो जाता है। जैसे—

लट् लकार—सीदति, सीदतः, सीदन्ति इत्यादि।

लङ् लकार—असीदत्, असीदताम्, असीदन् इत्यादि।

लोट् लकार—सीदतु, सीदताम्, सीदन्तु इत्यादि।

विधिलिङ्—सीदेत्, सीदेताम्, सीदेयुः इत्यादि।

लृट् लकार—सत्स्यति, सत्स्यतः, सत्स्यन्ति इत्यादि।

कुछ अन्य परस्मैपदी धातुएँ तथा उनके लट् व लृट् में प्रथम पुरुष, एकवचन के रूप :

√ वस् (रहना)—वसति, वत्स्यति ।
√ वद् (बोलना)—वदति, वदिष्यति ।
√ हस् (हँसना)—हसति, हसिष्यति ।
√ नम् (झुकना)—नमति, नंस्यति ।
√ जि (जीतना)—जयति, जेष्यति ।
√ रक्ष् (रक्षा करना)—रक्षति, रक्षिष्यति ।
√ पत् (गिरना)—पतति, पतिष्यति ।
√ क्रीड् (खेलना)—क्रीडति, क्रीडिष्यति ।
√ क्रन्द् (चिल्लाना)—क्रन्दति, क्रन्दिष्यति ।
√ त्यज् (छोड़ना)—त्यजति, त्यक्ष्यति ।
√ चल् (चलना)—चलति, चलिष्यति ।
√ सृ (सरकना)—सरति, सरिष्यति ।
√ अट् (घूमना)—अटति, अटिष्यति ।
√ अर्ह् (योग्य होना)—अर्हति, अर्हिष्यति ।
√ खाद् (खाना)—खादति, खादिष्यति ।
√ गर्ज् (गरजना)—गर्जति, गर्जिष्यति ।
√ गै (गाना)—गायति, गास्यति ।
√ जीव् (जीना)—जीवति, जीविष्यति ।
√ व्रज् (जाना)—व्रजति, व्रजिष्यति इत्यादि ।

भ्वादिगण की आत्मनेपदी धातुएँ :

सेव्, लभ् तथा मुद् आदि आत्मनेपदी धातुएँ हैं जिनके पांचों लकारों में निम्न रूप बनते हैं :

√ सेव् (सेवा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सेवते (वह सेवा करता है)	सेवेते (वे दो सेवा करते हैं)	सेवन्ते (वे सब सेवा करते हैं)
म० पु०	सेवसे (तू सेवा करता है)	सेवेथे (तुम दो सेवा करते हो)	सेवध्वे (तुम सब सेवा करते हो)
उ० पु०	सेवे (मैं सेवा करता हूँ)	सेवावहे (हम दो सेवा करते हैं)	सेवामहे (हम सब सेवा करते हैं)

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	असेवत (वह सेवा करता था)	असेवेताम् (वे दो सेवा करते थे)	असेवन्त (वे सब सेवा करते थे)
म० पु०	असेवथाः (तू सेवा करता था)	असेवेथाम् (तुम दो सेवा करते थे)	असेवध्वम् (तुम सब सेवा करते थे)
उ० पु०	असेवे (मैं सेवा करता था)	असेवावहि (हम दो सेवा करते थे)	असेवामहि (हम सब सेवा करते थे)

लोट् लकार (आज्ञादि)

प्र० पु०	सेवताम् (वह सेवा करे)	सेवेताम् (वे दो सेवा करें)	सेवन्ताम् (वे सब सेवा करें)
म० पु०	सेवस्व (तू सेवा कर)	सेवेथाम् (तुम दो सेवा करो)	सेवध्वम् (तुम सब सेवा करो)
उ० पु०	सेवै (मैं सेवा करूँ)	सेवावहै (हम दो सेवा करें)	सेवामहै (हम सब सेवा करें)

विधिलिङ् (विध्यादि)

प्र० पु०	सेवेत (उसे सेवा करनी चाहिए)	सेवेयाताम् (उन दो को सेवा करनी चाहिए)	सेवेरन् (उन सबको सेवा करनी चाहिए)
म० पु०	सेवेथाः (तुझे सेवा करनी चाहिए)	सेवेयाथाम् (तुम दो को सेवा करनी चाहिए)	सेवेध्वम् (तुम सबको सेवा करनी चाहिए)
उ० पु०	सेवेय (मुझे सेवा करनी चाहिए)	सेवेवहि (हम दो को सेवा करनी चाहिए)	सेवेमहि (हम सबको सेवा करनी चाहिए)

लृट् लकार (भविष्यत्काल)

प्र० पु०	सेविष्यते (वह सेवा करेगा)	सेविष्येते (वे दो सेवा करेंगे)	सेविष्यन्ते (वे सब सेवा करेंगे)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	सेविष्यसे (तू सेवा करेगा)	सेविष्येथे (तुम दो सेवा करोगे)	सेविष्यध्वे (तुम सब सेवा करोगे)
उ० पु०	सेविष्ये (मैं सेवा करूँगा)	सेविष्यावहे (हम दो सेवा करेंगे)	सेविष्यामहे (हम सब सेवा करेंगे)

लभ् धातु (प्राप्त करना)

लट् लकार

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लोट् लकार

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

मुद् धातु (प्रसन्न होना)

लट् लकार

प्र० पु०	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
म० पु०	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उ० पु०	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उ० पु०	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

लोट् लकार

प्र० पु०	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
म० पु०	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उ० पु०	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म० पु०	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उ० पु०	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म० पु०	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ० पु०	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

याच् धातु (माँगना)

आत्मनेपद

लट् लकार

प्र० पु०	याचते	याचेते	याचन्ते
म० पु०	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ० पु०	याचे	याचावहे	याचामहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म० पु०	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ० पु०	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

लोट् लकार

प्र० पु०	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म० पु०	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ० पु०	याचै	याचावहै	याचामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म० पु०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ० पु०	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म० पु०	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ० पु०	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

आत्मनेपदी कुछ अन्य प्रसिद्ध धातुएँ :

√ सह् (सहन करना)—सहते, असहत, सहताम्, सहेत, सहिष्यते ।
√ वृत् (होना)—वर्तते, अवर्तत, वर्तताम्, वर्तेत, वर्तिष्यते ।
√ वृध् (बढ़ना)—वर्धते, अवर्धत, वर्धताम्, वर्धेत, वर्धिष्यते ।
√ ईक्ष् (देखना)—ईक्षते, ऐक्षत, ईक्षताम्, ईक्षेत, ईक्षिष्यते ।
√ यत् (यत्न करना)—यतते, अयतत, यतताम्, यतेत, यतिष्यते ।
√ एध् (बढ़ना)—एधते, ऐधत, एधताम्, एधेत, एधिष्यते ।
√ रम् (रमण करना)—रमते, अरमत, रमताम्, रमेत, रंस्यते ।
√ शिक्ष् (सिखाना)—शिक्षते, अशिक्षत, शिक्षताम्, शिक्षेत, शिक्षिष्यते ।
√ शंक् (शंका करना)—शंकते, अशंकत, शंकताम्, शंकेत, शंकिष्यते ।
√ कम् (चाहना)—कामयते, अकामयत, कामयताम्, कामयेत, कामयिष्यते ।
√ त्रै (रक्षा करना)—त्रायते, अत्रायत, त्रायताम्, त्रायेत, त्रास्यते ।
√ शुभ् (शोभा देना)—शोभते, अशोभत, शोभताम्, शोभेत, शोभिष्यते ।
√ रुच् (अच्छा लगना)—रोचते, अरोचत, रोचताम्, रोचेत, रोचिष्यते ।
√ वेप् (कांपना)—वेपते, अवेपत, वेपताम्, वेपेत, वेपिष्यते ।
√ आ+रभ् (शुरू करना)—आरभते, आरभत, आरभताम्, आरभेत, आरप्स्यते ।

भ्वादिगण की उभयपदी धातुएँ :

याच्, नी, हृ, वप्, पच्, वह्, तथा बुध् इत्यादि धातुएँ उभयपदी हैं। इनके रूप परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों में बनेंगे ।

हृ (हरना), उभयपदी

परस्मैपद

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरति	हरतः	हरन्ति
म० पु०	हरसि	हरथः	हरथ
उ० पु०	हरामि	हरावः	हरामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
म० पु०	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० पु०	अहरम्	अहराव	अहराम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हरतु	हरताम्	हरन्तु
म० पु०	हर	हरतम्	हरत
उ० पु०	हराणि	हराव	हराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
म० पु०	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० पु०	हरेयम्	हरेव	हरेम

लृट् लकार

प्र० पु०	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० पु०	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० पु०	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

हृ (हरना), उभयपदी

आत्मनेपद

लट् लकार

प्र० पु०	हरते	हरेते	हरन्ते
म० पु०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० पु०	हरे	हरावहे	हरामहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
म० पु०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उ० पु०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

लोट् लकार

प्र० पु०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० पु०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० पु०	हरै	हरावहै	हरामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
म० पु०	हरेथः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० पु०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० पु०	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० पु०	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

याच् धातु (माँगना)—परस्मैपद

याचति, अयाचत्, याचतु, याचेत, याचिष्यति।

याच् धातु (माँगना)—आत्मनेपद

याचते, अयाचत, याचताम्, याचेत, याचिष्यते।

नी धातु (ले जाना)—परस्मैपद

नयति, अनयत, नयतु, नयेत्, नेष्यति।

नी धातु (ले जाना)—आत्मनेपद

नयते, अनयत, नयताम्, नयेत, नेष्यते।

हृ धातु (हरना)—परस्मैपद

हरति, अहरत्, हरतु, हरेत्, हरिष्यति।

हृ धातु (हरना)—आत्मनेपद

हरते, अहरत, हरताम्, हरेत, हरिष्यते।

वप् धातु (बोना)—परस्मैपद

वपति, अवपत्, वपतु, वपेत्, वप्स्यति।

वप् धातु (बोना)—आत्मनेपद

वपते, अवपत, वपताम्, वपेत, वप्स्यते।

पच् धातु (पकाना)—परस्मैपद

पचति, अपचत्, पचतु, पचेत्, पक्ष्यति।

पच् धातु (पकाना)—आत्मनेपद

पचते, अपचत्, पचताम्, पचेत, पक्ष्यते।

वह् धातु (ले जाना)—परस्मैपद

वहति, अवहत्, वहतु, वहेत्, वक्ष्यति।

वह् धातु (ले जाना)—आत्मनेपद

वहते, अवहत, वहताम्, वहेत, वक्ष्यते।

बुध् धातु (जानना)—परस्मैपद

बोधति, अबोधत्, बोधतु. बोधत्, बोधिष्यति।

बुध् धातु (जानना)—आत्मनेपद

बोधते, अबोधत, बोधताम्, बोधेत, बोधिष्यते।

भज् (भजन करना—भजति-ते), यज् (यज्ञ करना—यजति-ते), धृ (धारण करना—धरति-ते), भृ (भरण करना—भरति-ते) आदि भी उभयपदी धातुएँ हैं।

भ्वादिगण के धातु-रूपों का वाक्य प्रयोग :

लट् लकार

सः पुस्तकं पठति (वह पुस्तक पढ़ता है)।

तौ जलं पिबतः (वे दो जल पीते हैं)।

ते गृहं गच्छन्ति (वे घर जाते हैं)।

त्वं वने तिष्ठसि (तू वन में ठहरता है)।
युवां धनिकं धनं याचथः-याचेथे (तुम दोनों धनी से धन माँगते हो)।
यूयं चन्द्रं पश्यथ (तुम चन्द्रमा को देखते हो)।
अहं मातुः स्मरामि (मैं माता जी का स्मरण करता हूँ)।
आवाम् यानं नयावः-नयावहे (हम दोनों यान को ले जाते हैं)।
किं वयं विद्यां हरामः-हरामहे (क्या हम विद्या को चुराते हैं) ?

लङ् लकार

रामः पुष्पम् अजिघ्रत् (राम ने फूल सूँघा)।
तौ राजानम् असेवेताम् (उन दोनों ने राजा की सेवा की)।
बालकाः बीजम् अवपन्-अवपन्त (बालकों ने बीज बोया)।
त्वं रामायणम् अपठः (तुमने रामायण पढ़ी)।
युवां दुग्धम् अपिवतम् (तुम दो ने दूध पीया)।
यूयं विद्यालयम् अगच्छत (तुम विद्यालय में गए)।
अहं दिल्ली नगरे अतिष्ठम् (मैं दिल्ली नगर में ठहर गया)।
आवां भिक्षां न अयाचाव (हम दो ने भिक्षा नहीं माँगी)।
वयं समुद्रं न अपश्याम (हमने समुद्र नहीं देखा)।
सः जलं न अस्पृशत् (उसने जल को नहीं छुआ)।

लोट् लकार

भक्तः देवस्य स्मरतु (भक्त देवता का स्मरण करे)।
पितरौ बालकं नयताम् (माता-पिता बालक को ले जावें)।
चौराः धनानि न हरन्तु (चोर धन न चुरायें)।
त्वं गीतां पठ (तू गीता पढ़)।
युवाम् अमृतं पिबतम् (तुम दोनों अमृत को पीओ)।
यूयम् उपवनं गच्छत (तुम बाग में जाओ)।
अहं कारागृहे तिष्ठानि (मैं कारागृह में ठहरूँ)।
आवां जलं याचाव (हम दोनो जल माँगें)।
वयं चल-चित्रं पश्याम (हम सिनेमा देखें)।

विधिलिङ्

सः राजानं सेवेत (वह राजा की सेवा करे)।
तौ कष्टं सहेयाताम् (वे दोनों कष्ट सहन करें)।
ते मोक्षं लभेरन् (वे मोक्ष प्राप्त करें)।
त्वम् अधुना मोदस्व (तुम अब प्रसन्न हो जाओ)।
युवां भारं वहेतम्-वहेयाथाम् (तुम दोनों को भार उठाना चाहिए)।
यूयं भोजनं पचेत-पचेध्वम् (तुम्हें भोजन पकाना चाहिए)।
अहं शास्त्रं पठेयम् (मैं शास्त्र पढ़ूँ)।

आवां सुखिनौ भवेव (हम दोनों सुखी होवें)।
वयं शतं शरदः जीवेम (हम सौ वर्ष जीवें)।

लृट् लकार

तावत् रामायणकथा प्रचरिष्यति (तब तक रामायण कथा चलती रहेगी)।
इमौ बालकौ त्वाम् उपहसिष्यतः (ये दो बालक तुम्हारा उपहास करेंगे)।
यावत् गिरयः स्थास्यन्ति (जब तक पर्वत स्थिर रहेंगे)।
त्वं सर्वं बोधिष्यसि-से (तुम सब जान लोगे)।
युवां शीघ्रं वर्धिष्येथे (तुम दोनों जल्दी बढ़ोगे)।
यूयं किं खादिष्यथ (तुम क्या खाओगे)?
अहं त्वां रक्षिष्यामि (मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा)।
आवां कन्दुकेन क्रीडिष्यावः (हम दोनों गेंद से खेलेंगे)।
वयं प्रपञ्चं शीघ्रं त्यक्ष्यामः (हम प्रपञ्च को शीघ्र छोड़ देंगे)।
जनाः गृहं गमिष्यन्ति (लोग घर जायेंगे)।
त्वं जलं पास्यसि (तुम जल पीओगे)।
ते पुस्तकं पठिष्यन्ति (वे पुस्तक पढ़ेंगे)।
चौराः धनं लप्स्यन्ते (चोर धन प्राप्त करेंगे)।
भटाः शत्रून् हनिष्यन्ति (सैनिक शत्रुओं को मारेंगे)।

—o—

अदादिगण

अस् धातु (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अस्ति (वह है)	स्तः (वे दो हैं)	सन्ति (वे सब हैं)
म० पु०	असि (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम सब हो)
उ० पु०	अस्मि (मैं हूं)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम दो हैं)

लङ् लकार

प्र० पु०	आसीत् (वह था)	आस्ताम् (वे दो थे)	आसन् (वे सब थे)
म० पु०	आसीः (तू था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम सब थे)
उ० पु०	आसम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम सब थे)

लोट् लकार

प्र० पु०	अस्तु (वह हो)	स्ताम् (वे दो होवें)	सन्तु (वे सब हों)
म० पु०	एधि (तू हो)	स्तम् (तुम दो हो)	स्त (तुम सब हो)
उ० पु०	असानि (मैं होऊँ)	असाव (हम दो होवें)	असाम (हम सब होवें)

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्यात् (वह होवे)	स्याताम् (वे दो होवें)	स्युः (वे सब होवें)
म० पु०	स्याः (तू होवे)	स्यातम् (तुम दो होवो)	स्यात (तुम सब होवो)
उ० पु०	स्याम् (मैं होऊँ)	स्याव (हम दो होवें)	स्याम (हम सब होवें)

लृट् लकार

प्र० पु०	भविष्यति (वह होगा)	भविष्यतः (वे दो होंगे)	भविष्यन्ति (वे सब होंगे)
म० पु०	भविष्यसि (तू होगा)	भविष्यथः (तुम दो होंगे)	भविष्यथ (तुम सब होंगे)
उ० पु०	भविष्यामि (मैं होऊँगा)	भविष्यावः (हम दो होवेंगे)	भविष्यामः (हम सब होवेंगे)

अस् धातु के रूपों का वाक्य प्रयोग :

लट् लकार

अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः (क्या कोई विशेष बात है) ?
राजकुमारौ उटजे न स्तः (दोनों राजकुमार उटज में नहीं हैं) ।
अद्यत्वे ग्रहाः मंगलप्रदाः न सन्ति (आजकल ग्रह मंगलदायक नहीं हैं) ।
शिशुरसि खलु त्वम् (तुम निश्चय ही शिशु हो) ।
युवां स्वस्थौ न स्थः (तुम दोनों स्वस्थ नहीं हो) ।
यूयं नेतारः स्थ (तुम नेता लोग हो) ।
अहं बद्धपरिकरः अस्मि (मैं कटिबद्ध हूँ) ।
आवां तेजस्विनौ स्वः (हम दोनों तेजस्वी हैं) ।
वयं धनरहिताः स्मः (हम धनरहित हैं) ।

लङ् लकार

दशरथः अयोध्यायाः राजा आसीत् (दशरथ अयोध्या का राजा था) ।
बालकौ युद्धनिपुणौ आस्ताम् (दोनों बालक युद्ध-निपुण थे) ।
सैनिकाः दृप्ताः आसन् (सैनिक गर्वयुक्त थे) ।
त्वं क्रुद्धः आसीः (तुम क्रुद्ध थे) ।
युवां शान्तौ आस्तम् (दोनों शान्त थे) ।
यूयं विद्वांसः आस्त (तुम सब विद्वान् थे) ।
अहं कार्यरतः आसम् (मैं काम में लगा था) ।
आवां गृहे आस्व (हम दोनों घर में थे) ।
वयं विद्यालये आस्म (हम विद्यालय में थे) ।

लोट् लकार

अद्य एव मरणमस्तु युगान्तरे वा (आज ही मृत्यु हो या युगान्तर में) ।
सुखदुःखे समाने स्ताम् (सुख और दुःख समान हों) ।

मेघाः जलप्रदाः सन्तु (मेघ जल देने वाले हों)।
त्वम् आज्ञाकारी एधि (तुम आज्ञाकारी बनो)।
युवाम् उद्योगिनौ स्तम् (तुम दोनों उद्योगी बनो)।
यूयं मेधाविनः स्त (तुम सब मेधावी बनो)।
अहं सर्वकार्येषु प्रथमः असानि (मैं सब कामों में प्रथम होऊँ)।
आवाम् मातृभक्तौ असाव (हम दो मातृ-भक्त बनें)।
वयं राष्ट्रसेवकाः असाम (हम सब राष्ट्र-सेवक बनें)।

विधिलिङ्

सः प्रियदर्शी स्यात् (वह प्रियदर्शी होवे)।
तौ मधुरभाषिणौ स्याताम् (वे दोनों मधुरभाषी होवें)।
ते धनाढ्याः स्युः (वे धनी होवें)।
त्वं परिश्रमी स्याः (तू परिश्रमी हो)।
युवाम् उद्यमिनौ स्यातम् (तुम दोनों उद्यमी होवो)।
यूयं प्रसन्नाः स्यात (तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए)।
अहं सुखी स्याम् (मैं सुखी होऊँ)।
आवाम् स्वस्थौ स्याव (हम दोनों स्वस्थ होवें)।
वयं निरामयाः स्याम (हम नीरोग होवें)।

लृट् लकार

सः सफलो भविष्यति (वह सफल होगा)।
तौ कुशलिनौ भविष्यतः (वे दो सकुशल होंगे)।
ते सुखिनो भविष्यन्ति (वे सुखी होंगे)।
त्वम् नीरोगो भविष्यसि (तू नीरोग होगा)।
युवां धार्मिकौ भविष्यथः (तुम दो धार्मिक होंगे)।
यूयं तपस्विनो भविष्यथ (तुम तपस्वी बनोगे)।
अहं पुनः छात्रो भविष्यामि (मैं फिर से छात्र बनूंगा)।
आवाम् अन्तेवासिनौ भविष्यावः (हम दो आश्रमवासी होंगे)।
वयं संन्यासिनो भविष्यामः (हम संन्यासी होंगे)।

हन् (मारना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हंसि	हथः	हथ
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लोट् लकार

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लृट् लकार

प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यति
म० पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

दुह् (दोहना)

लट् लकार

प्र० पु०	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
म० पु०	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उ० पु०	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

लङ् लकार

प्र० पु०	अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म० पु०	,,	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ० पु०	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

लोट् लकार

प्र० पु०	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
म० पु०	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उ० पु०	दोहानि	दोहाव	दोहाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
म० पु०	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उ० पु०	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
म० पु०	धोक्ष्यसि:	धोक्ष्यथ:	धोक्ष्यथ
उ० पु०	धोक्ष्यामि	धोक्ष्याव:	धोक्ष्याम:

अदादिगण की अन्य प्रसिद्ध धातुओं के संक्षिप्त रूप—

√ अद् (भोजन करना)—अत्ति, आदत्, अत्तु, अद्यात्, अत्स्यति ।

√ विद् (जानना)—वेत्ति, अवेत्-द्, वेत्तु, विद्यात्, वेदिष्यति ।

√ रुद् (रोना)—रोदिति, अरोदत्-० दीत्, रोदितु, रुद्यात्, रोदिष्यति ।

√ ब्रू (बोलना)—ब्रवीति, अब्रवीत्, ब्रवीतु, ब्रूयात्, वक्ष्यति ।

√ जागृ (जागना)—जागर्ति, अजाग:, जागर्तु, जागृयात्, जागरिष्यति ।

√ शास् (शासन या उपदेश करना)—शास्ति, अशात्-द्, शास्तु, शिष्यात्, शासिष्यति ।

√ स्वप् (सोना)—स्वपिति, अस्वपीत्-अस्वपत्, स्वपितु, स्वप्यात्, स्वप्स्यति ।

√ इ (जाना)—एति, ऐत्, एतु, इयात्, एष्यति ।

√ स्तु (स्तुति करना)—स्तौति, अस्तौत्, स्तौतु, स्तुयात्, स्तोष्यति ।

अधि √ इ (अध्ययन करना)—अधीते, अध्यैत, अधीताम्, अधीयीत, अध्येष्यते ।

√ आस् (बैठना)—आस्ते, आस्त, आस्ताम्, आसीत्, आसिष्यते ।

√ शी (सोना)—शेते, अशेत, शेताम्, शयीत, शयिष्यते ।

अदादिगण के धातु-रूपों का वाक्य प्रयोग—

हन्—सः शत्रुं हन्ति, अहन्, हन्तु, हन्यात्, हनिष्यति इत्यादि ।

दुह्—सः गां पयः दोग्धि, अधोक्, दोग्धु, दुह्यात्, धोक्ष्यति इत्यादि ।

—०—

जुहोत्यादिगण (धातु को द्वित्व)

दा धातु (देना), उभयपदी

परस्मैपद

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति
म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्मः

लङ् लकार—भूतकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लोट् लकार—आज्ञार्थे

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० पु०	ददानि	ददाव	दद्म

विधिलिङ्—विधि, संकेत, सम्भावना

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० पु०	दद्याः	दद्याताम्	दद्यात
उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

जुहोत्यादिगण (धातु को द्वित्व)

दा धातु (देना), उभयपदी

आत्मनेपद

लट् लकार—वर्तमानकाल

प्र० पु०	दत्त	ददाते	ददते
म० पु०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० पु०	ददे	दद्वहे	दद्महे

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० पु०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० पु०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

लोट् लकार—आज्ञार्थे

प्र० पु०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० पु०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० पु०	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ्—विधि, संकेत, सम्भावना

प्र० पु०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० पु०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० पु०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० पु०	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

जुहोत्यादिगण की अन्य प्रसिद्ध धातुओं के संक्षिप्त रूप :

हु (हवन करना)—जुहोति, अजुहोत्, जुहोतु, जुहुयात्, होष्यति ।

भी (डरना)—बिभेति, अबिभेत्, बिभेतु, बिभीयात्, भेष्यति ।

भृ (भरना)—बिभर्ति, अबिभः, बिभर्तु, बिभृयात्, भरिष्यति ।

जुहोत्यादिगण के धातु रूपों का वाक्यों में प्रयोग :

सः याचकाय भोजनं ददाति (वह याचक को भोजन देता है)।

ऋषिः प्राणान् अग्नौ अजुहोत् (ऋषि ने प्राणों को अग्नि में हवन कर डाला)।

यः भेष्यति सः मरिष्यति (जो डरेगा, वह मरेगा) ।

अद्यत्वे सर्वः निजोदरं बिभर्ति (आजकल हर कोई अपना पेट भरता है) ।

—०—

दिवादिगण

दिव्>दीव् (जुआ खेलना, चमकना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० पु०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० पु०	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० पु०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

लोट् लकार

प्र० पु०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० पु०	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० पु०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म० पु०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

लृट् लकार

प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	देविष्यसि	देविष्यथ:	देविष्यथ
उ० पु०	देविष्यामि	देविष्याव:	देविष्याम:

नृत् (नाचना)

लट् लकार

प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यत:	नृत्यन्ति
म० पु०	नृत्यसि	नृत्यथ:	नृत्यथ
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्याव:	नृत्याम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० पु०	अनृत्य:	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लोट् लकार

प्र० पु०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म० पु०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयु:
म० पु०	नृत्ये:	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० पु०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

लृट् लकार

प्र० पु०	नर्तिष्यति-नर्त्स्यति	नर्तिष्यत:-नर्त्स्यत:	नर्तिष्यन्ति-नर्त्स्यन्ति
म० पु०	नर्तिष्यसि-नर्त्स्यसि	नर्तिष्यथ:-नर्त्स्यथ:	नर्तिष्यथ-नर्त्स्यथ
उ० पु०	नर्तिष्यामि-नर्त्स्यामि	नर्तिष्याव:-नर्त्स्याव:	नर्तिष्याम:-नर्त्स्याम:

नश् (नष्ट होना)

लट् लकार

प्र० पु०	नश्यति	नश्यत:	नश्यन्ति
म० पु०	नश्यसि	नश्यथ:	नश्यथ
उ० पु०	नश्यामि	नश्याव:	नश्याम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० पु०	अनश्य:	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० पु०	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

Saurabh Rastogi

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० पु०	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उ० पु०	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० पु०	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० पु०	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

लृट् लकार

प्र० पु०	नशिष्यति-नंक्ष्यति	नशिष्यतः-नंक्ष्यतः	नशिष्यन्ति-नंक्ष्यन्ति
म० पु०	नशिष्यसि-नंक्ष्यसि	नशिष्यथः-नंक्ष्यथः	नशिष्यथ-नंक्ष्यथ
उ० पु०	नशिष्यामि-नंक्ष्यामि	नशिष्यावः-नंक्ष्यावः	नशिष्यामः-नंक्ष्यामः

क्रुध् (क्रोध करना)

परस्मैपद

लट् लकार

प्र० पु०	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति
म० पु०	क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उ० पु०	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
म० पु०	अक्रुध्यः	अक्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उ० पु०	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

लोट् लकार

प्र० पु०	क्रुध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
म० पु०	क्रुध्य	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत
उ० पु०	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
म० पु०	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उ० पु०	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम

लृट् लकार

प्र० पु०	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
उ० पु०	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

दिवादिगण की अन्य धातुओं के संक्षिप्त रूप :

√ शम् (शान्त होना)—शाम्यति, अशाम्यत्, शाम्यतु, शाम्येत्, शमिष्यति।
√ कुप् (गुस्सा होना)—कुप्यति, अकुप्यत्, कुप्यतु, कुप्येत्, कोपिष्यति।
√ भ्रम् (घूमना)—भ्राम्यति, अभ्राम्यत्, भ्राम्यतु, भ्राम्येत्, भ्रमिष्यति।
√ द्रुह् (द्रोह करना)—द्रुह्यति, अद्रुह्यत्, द्रुह्यतु, द्रुह्येत्, द्रोहिष्यति।
√ पुष् (पुष्ट होना)—पुष्यति, अपुष्यत्, पुष्यतु, पुष्येत्, पोक्ष्यति।
√ स्निह् (स्नेह करना)—स्निह्यति, अस्निह्यत्, स्निह्यतु, स्निह्येत्, स्नेहिष्यति।
√ शक् (समर्थ होना)—शक्यति, अशक्यत्, शक्यतु, शक्येत्, शक्ष्यति।
—शक्यते, अशक्यत्, शक्यताम्, शक्येत, शक्ष्यते।

दिवादिगण के धातु रूपों का वाक्य-प्रयोग :

निदाघे सरः शुष्यति—गर्मी में तालाब सूखता है।
ह्रदं निकषा बालाः दीव्यन्ति—तालाब के पास बालक जुआ खेलते हैं।
जनः चन्द्रं पश्यति तुष्यति च—लोग चाँद को देखते हैं और प्रसन्न होते हैं।
नटाः सभायां नृत्यन्ति—नट सभा में नृत्य करते हैं।
ते स्वपापैः नश्यन्ति—वे अपने पापों से नष्ट होते हैं।
प्रासादम् अभितः नृत्यामः—हम महल के समीप नाचते हैं।
वार्धक्ये शरीरं नश्यति—बुढ़ापे में शरीर नष्ट होता है।
धनम् अन्तरेण जीवितं नश्यति—धन के बिना जीवन नष्ट होता है।
राजा निर्धनाय कुप्यति—राजा निर्धन पर क्रोध करता है।
सः स्वामिने द्रुह्यति—वह स्वामी से द्रोह करता है।
ते नगरे भ्राम्यन्ति—वे शहर में घूमते हैं।

—०—

स्वादिगण

श्रु (सुनना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० पु०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० पु०	शृणोमि	शृणुवः-शृण्वः	शृणुमः-शृण्मः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० पु०	अशृणवम्	अशृणुव-अशृण्व	अशृणुम-अशृण्म

लोट् लकार

प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ० पु०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० पु०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

लृट् लकार

प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

√ शक् (सकना), परस्मैपद

लट् लकार

प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म० पु०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ० पु०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् लकार

प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लोट् लकार

प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
म० पु०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उ० पु०	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

स्वादिगण की अन्य धातुओं के संक्षिप्त रूप :

सु (पैदा करना)— सुनोति, असुनोत्, सुनोतु, सुनुयात्, सोष्यति ।

आप् (प्राप्त करना)—आप्नोति, आप्नोत्, आप्नोतु, आप्नुयात्, आप्स्यति ।

चि (चुनना)—चिनोति, अचिनोत्, चिनोतु, चिनुयात्, चेष्यति ।

धू (हिलाना)—धुनोति, अधुनोत्, धुनोतु, धुनुयात्, धोष्यति ।

वृ (वरना)—वृणोति, अवृणोत्, वृणोतु, वृणुयात्, वरिष्यति ।

—वृणुते, अवृणोत, वृणुताम्, वृणवीत, वरिष्यते ।

साध् (साधना)—साध्नोति, असाध्नोत्, साध्नोतु, साध्नुयात्, साधिष्यति ।

स्वादिगण के धातु-रूपों का वाक्य प्रयोग :

वह कथा सुनता है—सः कथां श्रृणोति ।

तुम कथा सुनते हो—त्वं कथां श्रृणोषि ।

मैं कथा सुनता हूँ—अहं कथां श्रृणोमि ।

उसने कथा सुनी—सः कथाम् अश्रृणोत् ।

तूने कथा सुनी—त्वं कथाम् अश्रृणोः ।

मैंने कथा सुनी—अहं कथाम् अश्रृणवम् ।

वह कथा सुने—सः कथाम् श्रृणोतु ।

तुम कथा सुनो—त्वं कथाम् श्रृणु ।

मैं कथा सुनूँ—अहं कथाम् श्रृणवानि ।

उसे कथा सुननी चाहिए—सः कथां श्रृणुयात् ।

तुझे कथा सुननी चाहिए—त्वं कथां श्रृणुयाः ।

मुझे कथा सुननी चाहिए—अहं कथां श्रृणुयाम् ।

वह कथा सुनेगा—सः कथां श्रोष्यति ।

तू कथा सुनेगा—त्वं कथां श्रोष्यसि ।

मैं कथा सुनूँगा—अहं कथाम् श्रोष्यामि ।

वह बोल सकता है—सः वक्तुं शक्नोति ।

तुम लिख सकते हो—त्वं लिखितुं शक्नोषि ।

मैं पढ़ सकता हूँ—अहं पठितुं शक्नोमि । इत्यादि ।

—०—

तुदादिगण

तुद् धातु (पीड़ित करना, दुःख देना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० पु०	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० पु०	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लोट् लकार

प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लृट् लकार

प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लिख् (लिखना)

लट् लकार

प्र० पु०	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
म० पु०	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उ० पु०	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
म० पु०	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उ० पु०	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
म० पु०	लिख	लिखतम्	लिखत
उ० पु०	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयु:
म० पु०	लिखे:	लिखेतम्	लिखेत
उ० पु०	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

लृट् लकार

प्र० पु०	लेखिष्यति	लेखिष्यत:	लेखिष्यन्ति
म० पु०	लेखिष्यसि	लेखिष्यथ:	लेखिष्यथ
उ० पु०	लेखिष्यामि	लेखिष्याव:	लेखिष्याम:

स्पृश् (छूना)

परस्मैपद

लट् लकार

प्र० पु०	स्पृशति	स्पृशत:	स्पृशन्ति
म० पु०	स्पृशसि	स्पृशथ:	स्पृशथ
उ० पु०	स्पृशामि	स्पृशाव:	स्पृशाम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
म० पु०	अस्पृश:	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ० पु०	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

लोट् लकार

प्र० पु०	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म० पु०	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उ० पु०	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयु:
म० पु०	स्पृशे:	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ० पु०	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	स्पर्क्ष्यति- स्प्रक्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः- स्प्रक्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति- स्प्रक्ष्यन्ति
म० पु०	स्पर्क्ष्यसि- स्प्रक्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः- स्प्रक्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ- स्प्रक्ष्यथ
उ० पु०	स्पर्क्ष्यामि- स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः- स्प्रक्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः- स्प्रक्ष्यामः

कुछ प्रसिद्ध तुदादिगणी धातुएँ :

प्रच्छ् (पूछना)—पृच्छति, अपृच्छत्, पृच्छतु, पृच्छेत्, प्रक्ष्यति ।

स्पर्श् (छूना)—स्पृशति, अस्पृशत्, स्पृशतु, स्पृशेत्, स्पर्क्ष्यति—स्प्रक्ष्यति ।

इष् (इच्छा करना)—इच्छति, ऐच्छत्, इच्छतु, इच्छेत्, एषिष्यति ।

मृ, आ० (मरना)—म्रियते, अम्रियत, म्रियताम्, म्रियेत, मरिष्यति ।

विद्, उ० (पाना)—विन्दति, अविन्दत्, विन्दतु, विन्देत्, वेत्स्यति-वेदिष्यति,
विन्दते, अविन्दत, विन्दताम्, विन्देत, वेत्स्यते-वेदिष्यते ।

मुच्, उ० (छोड़ना)—मुञ्चति, अमुञ्चत्, मुञ्चतु, मुञ्चेत्, मोक्ष्यति ।
मुञ्चते, अमुञ्चत, मुञ्चताम्, मुञ्चेत, मोक्ष्यते ।

सिच्, उ० (सींचना)—सिञ्चति, असिञ्चत्, सिञ्चतु, सिञ्चेत्, सेक्ष्यति,
सिञ्चते, असिञ्चत, सिञ्चताम्, सिञ्चेत, सेक्ष्यते ।

क्षिप् (फेंकना)—क्षिपति, अक्षिपत्, क्षिपतु, क्षिपेत्, क्षेप्स्यति ।

सृज् (पैदा करना)—सृजति, असृजत्, सृजतु, सृजेत्, स्रक्ष्यति ।

मिल्, उ० (मिलना)—मिलति, अमिलत्, मिलतु, मिलेत्, मेलिष्यति ।

तुदादिगणी धातुरूपों का वाक्यों में प्रयोग :

निर्धन को तंग मत करो—निर्धनं न तुदत ।

गुरुजी से पूछो कि अशुद्धि कहाँ है—गुरुं पृच्छ यद् अशुद्धिः कुत्र अस्ति ।

हम दोनों मित्रता को नहीं छोड़ेंगे—आवां मैत्रीं न मोक्ष्यावः ।

तुम शत्रुओं पर बम फेंको—त्वं शत्रुषु बम्बास्त्रं क्षिप ।

मैं चाहता हूँ कि श्रीराम को मिलूँ—अहम् इच्छामि यत् श्रीरामं मिलानि ।

हम सब वृक्षों को सींचेंगे—वयं वृक्षान् सेक्ष्यामः ।

भरत ने शेर की गर्दन के बालों को छूआ—भरतः सिंहस्य ग्रीवायाः केसरान् अस्पृशत् ।

—०—

तनादिगण

तनादिगण का विकरण 'उ' है। कृ धातु के रूप दिए जा रहे हैं।

√ कृ (करना), उभयपदी

परस्मैपद

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथ:	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

लङ् लकार

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरो:	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट् लकार

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्यु:
म० पु०	कुर्या:	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यत:	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथ:	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्याव:	करिष्याम:

आत्मनेपद

लट् लकार

प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लोट् लकार

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० पु०	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यथे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

तनादिगण की अन्य प्रसिद्ध धातुओं के संक्षिप्त रूप :

तन् (फैलाना)— तनोति, अतनोत्, तनोतु, तनुयात्, तनिष्यति, तनुते, अतनुत, तनुताम्, तन्वीत, तनिष्यते ।

तनादिगण के धातु रूपों का वाक्यों में प्रयोग :

सज्जनः अमित्रमपि उपकरोति—सज्जन शत्रु का भी उपकार करता है।
अध्यापकः छात्रान् पुरस्करोति—अध्यापक छात्रों को पुरस्कृत करता है ।
वासना चेतः विकरोति—वासना चित्त को विकृत करती है ।
सत्सङ्गतिः पापम् अपाकरोति—सत्संग पाप को हटाता है।
छात्रः अपराधं स्वीकरोति—छात्र अपराध को स्वीकार करता है।
गृहस्थः अतिथिं सत्करोति—गृहस्थ अतिथि का सम्मान करता है।
भारतीयाः शत्रुदेशम् अधिकुर्वन्ति—भारतीय शत्रु देश पर अधिकार करते हैं ।
स पटे मूर्तिम् आकरोति—वह वस्त्र पर मूर्ति की रचना करता है ।
दुष्टः सज्जनं तिरस्करोति—दुष्ट सज्जन का तिरस्कार करता है।
स्वाध्यायः मनः संस्करोति—स्वाध्याय मन को सुसंस्कृत करता है ।
रावणः विभीषणं गृहात् निराकरोति—रावण विभीषण को घर से निकालता है ।
सा स्वशरीरम् अलंकरोति—वह अपने शरीर को सजाती है ।

क्र्यादिगण

इस गण में श्ना (ना) विकरण होता है। नीचे √ ज्ञा तथा √ ग्रह् के रूप दिए जा रहे हैं। ग्रह् धातु के रूपों में ना को णा हो जाता है।

क्री (खरीदना)

परस्मैपद

लट् लकार—वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लोट् लकार—आज्ञार्थे

प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ् लकार—विधि, संकेत, सम्भावना आदि

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म० पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

क्री (खरीदना)

आत्मनेपद

लट् लकार—वर्तमानकाल

प्र० पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० पु०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० पु०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लङ् लकार—भूतकाल

प्र० पु०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	अक्रीणीथा:	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० पु०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लोट् लकार—आज्ञार्थ

प्र० पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म० पु०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

विधिलिङ् लकार—विधि, संकेत, सम्भावना आदि

प्र० पु०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० पु०	क्रीणीथा:	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लृट् लकार—भविष्यत्काल

प्र० पु०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० पु०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ० पु०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

√ ज्ञा (जानना)

परस्मैपद

लट् लकार

प्र० पु०	जानाति	जानीत:	जानन्ति
म० पु०	जानासि	जानीथ:	जानीथ
उ० पु०	जानामि	जानीव:	जानीम:

लङ् लकार

प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० पु०	अजाना:	अजानीतम्	अजानीत
उ० पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लोट् लकार

प्र० पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
म० पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उ० पु०	जानानि	जानाव	जानाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयु:
म० पु०	जानीया:	जानीयातम्	जानीयात
उ० पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

लृट् लकार

प्र० पु०	ज्ञास्यति	ज्ञास्यत:	ज्ञास्यन्ति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० पु०	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

√ ज्ञा (जानना)

आत्मनेपद

लट् लकार

प्र० पु०	जानीते	जानाते	जानते
म० पु०	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ० पु०	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
म० पु०	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उ० पु०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लोट् लकार

प्र० पु०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
म० पु०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ० पु०	जानै	जानावहै	जानामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
म० पु०	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ० पु०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
म० पु०	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उ० पु०	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

√ ग्रह् धातु (पकड़ना, ग्रहण करना, लेना)

परस्मैपद

लट् लकार

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लङ् लकार

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लृट् लकार

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ० पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

प्र० पु०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म० पु०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ० पु०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म० पु०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथम्	अगृह्णीध्वम
उ० पु०	अगृह्णि	अगृह्णवहि	अगृह्णीमहि

लोट् लकार

प्र० पु०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
म० पु०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० पु०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म० पु०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० पु०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ० पु०	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

कुछ अन्य क्र्यादिगणीय प्रसिद्ध धातुएँ :

√ मुष् (चुराना), परस्मैपद—मुष्णाति (लट्), अमुष्णात् (लङ्), मुष्णातु (लोट्), मुष्णीयात् (विधिलिङ्), मोषिष्यति (लृट्)।

√ अश् (खाना, परस्मैपद—अश्नाति (लट्), आश्नात् (लङ्); अश्नातु (लोट्), अश्नीयात् (विधिलिङ्), अशिष्यति (लृट्)

√ पुष् (पुष्ट करना), परस्मैपद—पुष्णाति (लट्), अपुष्णात् (लङ्), पुष्णातु (लोट्), पुष्णीयात् (विधिलिङ्), पोषिष्यति (लृट्)

√ बन्ध् (बांधना), परस्मैपद—बध्नाति (लट्), अबध्नात् (लङ्), बध्नातु (लोट्), बध्नीयात् (विधिलिङ्), भन्त्स्यति (लृट्)

√ मन्थ् (मथना), परस्मैपद—मथ्नाति (लट्), अमथ्नात् (लङ्), मथ्नातु (लोट्), मथ्नीयात् (विधिलिङ्), मन्थिष्यति (लृट्)

√ लु (काटना), उभयपदी

परस्मैपद—लुनाति (लट्), अलुनात् (लङ्), लुनातु (लोट्), लुनीयात् (विधिलिङ्), लविष्यति (लृट्)

आत्मनेपद—लुनीते (लट्), अलुनीत (लङ्), लुनीताम् (लोट्), लुनीत (विधिलिङ्), लविष्यते (लृट्)

क्र्यादिगणी धातुरूपों का वाक्यों में प्रयोग :

लोग गेहूँ खरीदते हैं—लोकाः गोधूमान्नं क्रीणन्ति।

इसे अपने हाथ में ले लो—इदम् स्वस्मिन् करे गृहाण।

हम जानते हैं कि तुमने उपहार ग्रहण नहीं किया—वयं जानीमः यद् यूयम् उपहारं नागृह्णीत।

न जाने उसका कब भाग्योदय होगा—न जाने कदा तस्य भाग्योदयः भविष्यति।

गोपाल दूध बेचता है—गोपालः दुग्धं विक्रीणाति।

वह गुरुजन की अवज्ञा करता है—सः गुरुजनान् अवजानाति।

हमें सब वस्तुओं का संग्रह करना चाहिए—वयं सकलान् पदार्थान् संगृह्णीयाम।

वृद्ध धर्म को जानते हैं—वृद्धाः धर्मं जानन्ति।

—०—

चुरादिगण

चुरादिगण का विकरण णिच् (इ) + शप् > अय हो जाता है। चुर् तथा भक्ष् धातुओं के रूप दिए जा रहे हैं :

√ चुर् (चुराना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लृट् लकार

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

भक्ष् (खाना)

लट् लकार

प्र० पु०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म० पु०	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उ० पु०	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
म० पु०	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उ० पु०	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

लोट् लकार

प्र० पु०	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
म० पु०	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उ० पु०	भक्षयानि	भक्षयाव	भक्षयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
म० पु०	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उ० पु०	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

लृट् लकार

प्र० पु०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
म० पु०	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उ० पु०	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

कथ् (कहना)

परस्मैपद

लट् लकार

प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० पु०	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ० पु०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लोट् लकार

प्र० पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० पु०	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

लृट् लकार

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

चुरादिगण की अन्य धातुओं के संक्षिप्त रूप :

लट् लङ् लोट् विधिलिङ् लृट्

√ कथ् (कहना)—कथयति, अकथयत्, कथयतु, कथयेत्, कथयिष्यति ।

√ तड् (मारना)—ताडयति, अताडयत्, ताडयतु, ताडयेत्, ताडयिष्यति ।

√ गण् (गिनना)—गणयति, अगणयत्, गणयतु, गणयेत्, गणयिष्यति ।

√ चिन्त् (सोचना)—चिन्तयति, अचिन्तयत्, चिन्तयतु, चिन्तयेत्, चिन्तयिष्यति ।

√ पाल् (पालना)—पालयति, अपालयत्, पालयतु, पालयेत्, पालयिष्यति ।

√ कीर्त् (नाम लेना)—कीर्तयति, अकीर्तयत्, कीर्तयतु, कीर्तयेत्, कीर्तयिष्यति ।

√ गुण् (गुणा करना)—गुणयति, अगुणयत्, गुणयतु, गुणयेत्, गुणयिष्यति ।

√ क्षल् (धोना)—क्षालयति अक्षालयत्, क्षालयतु, क्षालयेत्, क्षालयिष्यति ।

√ घुष् (घोषणा करना)—घोषयति, अघोषयत्, घोषयतु, घोषयेत्, घोषयिष्यति ।

√ चूर्ण् (चूरा करना)—चूर्णयति, अचूर्णयत्, चूर्णयतु, चूर्णयेत्, चूर्णयिष्यति ।

√ दण्ड् (दण्ड देना)—दण्डयति, अदण्डयत्, दण्डयतु, दण्डयेत्, दण्डयिष्यति ।

√ पुष् (पुष्ट करना)—पोषयति, अपोषयत्, पोषयतु, पोषयेत्, पोषयिष्यति ।

√ भूष् (सजाना)—भूषयति, अभूषयत्, भूषयतु, भूषयेत् भूषयिष्यति ।

√ मन्त्र् (सलाह करना)—मन्त्रयति, अमन्त्रयत्, मन्त्रयतु, मन्त्रयेत्, मन्त्रयिष्यति ।

√ रच् (रचना)—रचयति, अरचयत्, रचयतु, रचयेत्, रचयिष्यति ।

√ वर्ण् (वर्णन करना)—वर्णयति, अवर्णयत्, वर्णयतु, वर्णयेत् वर्णयिष्यति ।

√ वच (ठगना)—वञ्चयति, अवञ्चयत्, वञ्चयतु, वञ्चयेत्, वञ्चयिष्यति ।

√ सूच् (सूचना देना)—सूचयति, असूचयत्, सूचयतु, सूचयेत्, सूचयिष्यति ।

√ व्यय् (खर्च करना)—व्ययति, अव्ययत्, व्ययतु, व्ययेत्, व्ययिष्यति।

√ दुःख् (दुःख देना)—दुःखयति, अदुःखयत्, दुःखयतु, दुःखयेत्, दुःखयिष्यति ।

√ पूज् (पूजा करना)—पूजयति, अपूजयत्, पूजयतु, पूजयेत्, पूजयिष्यति ।

√ तुल् (तोलना)—तोलयति, अतोलयत्, तोलयतु, तोलयेत्, तोलयिष्यति ।

√ पीड् (पीड़ा देना)—पीडयति, अपीडयत्, पीडयतु, पीडयेत्, पीडयिष्यति ।

√ प्रीण् (प्रसन्न करना)—प्रीणयति, अप्रीणयत्, प्रीणयतु, प्रीणयेत्, प्रीणयिष्यति ।

√ आकर्ण् (सुनना)—आकर्णयति, आकर्णयत्, आकर्णयतु, आकर्णयेत्, आकर्णयिष्यति ।

√ धृ (धारण करना)—धारयति, अधारयत्, धारयतु, धारयेत्, धारयिष्यति।

√ पृ (पूरा करना)—पूरयति, अपूरयत्, पूरयतु, पूरयेत्, पूरयिष्यति।

√ वृ (वरण करना)—वरयति, अवरयत्, वरयतु, वरयेत्, वरयिष्यति।

चुरादिगण के धातु-रूपों का वाक्य में प्रयोग :

√ चुर्, लोट्, मध्यम पुरुष, एकवचन—चोरय (चोरी करना)
चोरी कर और अपने माथे पर कलंक लगा—चोरय स्वमस्तके च कलङ्कं धारय।

√ कथ्, लृट्, उत्तम पुरुष, एकवचन—कथयिष्यामि (मैं कहूँगा)।
मैं सम्पूर्ण बात कहूँगा—अहं सम्पूर्णवार्तां कथयिष्यामि।

√ वृ, लङ्, प्रथम पुरुष, बहुवचन—अवरयन् (वरण करती थी)।
पहले भारत में स्त्रियाँ अपने वर को स्वयं चुनती थीं—पुरा भारते नार्यः स्ववरान् स्वयम् अवरयन्।

√ पाल्, लट्, प्रथम पुरुष, द्विवचन—पालयतः (दो पालन करते हैं)।
माता-पिता सन्तान का अच्छी तरह पालन करते हैं—पितरौ सन्ततिं सम्यक् पालयतः।

आ + √ कर्ण्, विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन—आकर्णयेत् (सुने)।
वह गुरु के उपदेश को ध्यानपूर्वक सुने—सः गुरोः उपदेशम् अवधानेन आकर्णयेत्।

√ पूज्, लोट्, मध्यम पुरुष, बहुवचन—पूजयत (पूजा करो)।
देवताओं की विधिपूर्वक पूजा करो—देवान् विधिना सह पूजयत।

√ पीड्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन—अपीडयत् (पीड़ा देता था)।
बालक किसी को भी पीड़ा नहीं देता था—बालः न कमपि अपीडयत्।

√ भूष्, लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन—भूषयन्ति (सजाती हैं)।
स्त्रियाँ आभूषणों से शरीर को सजाती हैं—स्त्रियः आभूषणैः शरीरं भूषयन्ति।

√ कथ्, लृट्, प्रथम पुरुष, एकवचन—कथयिष्यति (कहेगी)।
माता बच्चों को कहानी कहेगी—माता शिशुभ्यः कथां कथयिष्यति।

√ रच्, लङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन—अरचयत् (बनाई)।
बहिन ने देवी के लिए माला बनाई—स्वसा देव्यै मालाम् अरचयत्।

√ भक्ष्, लृट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन—भक्षयिष्यन्ति (खायेंगे)।
राक्षस मांस खायेंगे—राक्षसाः मांसं भक्षयिष्यन्ति।

अभ्यास

(परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न)

1. निम्नांकितधातूनां लृटि प्रथम पुरुष बहुवचनरूपाणि विलिख्य स्ववाक्येषु प्रयुङ्क्त :
निम्नांकित धातुओं के लृट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में रूप लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
Conjugate the following roots in the future tense in the third person in the plural number and use them in your sentences :
(*i*) गम्, (*ii*) लभ्, (*iii*) नश्, (*iv*) कृ (परस्मैपद), (*v*) भक्ष् ।
(संकेत—गमिष्यन्ति, भाषिष्यन्ते, नंक्ष्यन्ति, करिष्यन्ति तथा भक्षयिष्यन्ति का वाक्यों में प्रयोग करो ।)

2. निम्नांकितधातूनां लङि अन्यपुरुषबहुवचनरूपाणि विलिख्य स्ववाक्येषु प्रयुङ्क्त :
निम्नांकित धातुओं के लङ् लकार में अन्य पुरुष बहुवचन के रूप लिख कर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :
(*i*) कथ्, (*ii*) अस्, (*iii*) नृत्, (*iv*) स्पृश्, (*v*) कथ् ।
(संकेत—अनयन्, अभवन्, अनृत्यन्, अस्पृशन्, अकथयन् का वाक्यों में प्रयोग करो ।)

3. (क) अधोलिखितेषु केषाञ्चित् पञ्चानां रूपाणि लिखत :
निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच के रूप लिखिए :
(*i*) सेव् (लट्, प्रथम पुरुष), (*ii*) अस् (लङ्, उत्तम पुरुष),
(*iii*) कृ (लोट्, मध्यम पुरुष), (*iv*) स्था (लृट्, उत्तम पुरुष) ।

(ख) अधोलिखितेषु केषांञ्चित् पञ्चानां रूपाणि लिखत :
किन्हीं पाँच का रूप लिखिए :
Decline in any five of the following :
(*a*) (*i*) शक् (परस्मैपद, लट्, प्रथम पुरुष) ।
(*ii*) लिख् (लङ्, मध्यम पुरुष) ।
(*iii*) पा (लृट्, उत्तम पुरुष) ।
(*iv*) पठ् (लोट्, मध्यम पुरुष) ।
(*v*) याच् (लोट्, मध्यम पुरुष) ।
(*vi*) श्रु (लट्, उत्तम पुरुष) ।
(*vii*) दा (लङ्, मध्यम पुरुष) ।
(*viii*) गम् (लिट्, प्रथम पुरुष) ।

(xi) घ्रा (लट् लकार, मध्यम पुरुष)।
(x) तुद् (लृट् लकार, मध्यम पुरुष)।
(xi) गम् (विधिलिङ्, उत्तम पुरुष)।
(xii) शक् (लङ्, प्रथम पुरुष)।
(xiii) लिख् (लृट्, मध्यम पुरुष)।

(b) (i) लिख् (लोट्, उत्तम पुरुष)।
(ii) कथ् (लृट्, मध्यम पुरुष)।
(iii) नश् (लङ्, प्रथम पुरुष)।
(iv) दा (लट्, प्रथम पुरुष)
(v) ज्ञा (विधिलिङ्, प्रथम पुरुष)।
(vi) गम् (लिङ्, उत्तम पुरुष)।
(vii) दृश् (लोट्, प्रथम पुरुष)।
(viii) घ्रा (लट्, प्रथम पुरुष)।
(ix) पठ् (लङ्, प्रथम पुरुष)।
(x) पा (लट्, मध्यम पुरुष)।
(xi) दृश् (लोट्, उत्तम पुरुष)।
(xii) दा (लिङ्, प्रथम पुरुष)।
(xiii) नी (लृट् मध्यम पुरुष)।

4. **(क) निम्नांङ्कितधातूनां लृटि प्रथम पुरुष बहुवचनरूपाणि विलिख्य स्ववाक्येषु प्रयुङ्क्त :**

निम्नलिखित धातुओं के लृट् लकार में प्रथम पुरुष, बहुवचन के रूप लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) पठ्, (ii) लभ्, (iii) हन्, (iv) पा, (v) गम्।

(संकेत—पठिष्यन्ति, लप्स्यन्ते, हनिष्यन्ति, पास्यन्ति तथा गमिष्यन्ति का वाक्यों में प्रयोग करो।)

(ख) अधस्तनानां धातूनां यथानिर्दिष्टरूपाणि लिखत तेषां प्रयोगं च स्ववाक्येषु कुरुत :

निम्नलिखित धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

Conjugate the following roots as indicated and use them in your own sentences :

(i) पा in लृट्, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ii) नृत् in लङ्, अन्य पुरुष, बहुवचन
(iii) लिख् in लोट्, मध्यम पुरुष, बहुवचन

(*iv*) कृ in विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, बहुवचन

(*v*) कथ् in लट्, अन्य पुरुष, बहुवचन

(संकेत—हिन्दी में अन्य पुरुष संस्कृत के प्रथम पुरुष (third person) को ही कहते हैं। पास्यसि, अनृत्यन्, लिखत, कुर्याम, कथयन्ति का वाक्यों में प्रयोग करो।)

5. अधोलिखितेषु केषाञ्चित् पञ्चानां यथानिर्दिष्टं रूपं विधाय संस्कृत-भाषायां वाक्यप्रयोगं कुरुत :

नीचे लिखे किन्हीं पाँच के यथानिर्दिष्ट रूप बनाकर संस्कृत भाषा में वाक्य बनायें :

Make sentences in your Sanskrit from any five of the formations as indicated below :

पठ् (विधिलिङ्, उ० पु०, द्वि०), पा (लृट्, म० पु०, एक०), चुर् (लट्, प्र० पु०, बहु०), कृ (लङ्, उ० पु०, एक०), शक् (लोट्, म० पु०, द्वि०), ज्ञा (लट्, प्र० पु०, एक०)।

6. अधोनिर्दिष्टेषु केषुचित् पञ्चवाक्येषु यथानिर्दिष्टशब्दानुसारं रिक्तस्थान-पूर्ति कुरुत :

कोष्ठों में निर्दिष्ट शब्दों के अनुसार किन्हीं पाँच में रिक्त स्थान भरिए :

Fill in the blanks in any five of the sentences as indicated below :

(क) (*i*) गुणी गुणं······(विद्, लट्)

(*ii*) स अस्मिन् नगरे······(वस्, लृट्)

(*iii*) अधुना रामश्च श्यामश्च······(पठ्, लट्)

(*iv*) भवानेकं प्रश्नं······(प्रच्छ्, लोट्)

(ख) (*i*) याचकाः धनिकान् धन······(याच्)

(*ii*) वयं कीर्त्यै प्रजाः······(सेव्)

(*iii*) यूयम् अपि निः स्वार्थभावेन राष्ट्रं······(रक्ष्)

(*iv*) दुष्यशीलाः नराः स्वर्गं······(लभ्)

(*v*) जनाः संसारे सम्पत्तये······(यत्)

(ग) (*i*) हरिः पत्रम्······(लिख्)

(*ii*) राजा भिक्षुकाय धनं······ (दा)

(*iii*) पुरा दशरथो नाम राजा······(अस्)

(*iv*) सैनिकाः शत्रून्······(हन्)

(*v*) शिशुः दुग्धं······(पा)।

7. अधोलिखितेषु धातुषु द्वयोः लट् लकारे त्रिषु वचनेषु उत्तमपुरुषरूपाणि लिखन्तु :

निम्नलिखित में से किन्हीं दो धातुओं के रूप लट् लकार उत्तम पुरुष के तीनों वचनों में लिखिए :

Conjugate any two of the following roots in Laṭ Lakāra Ist person in all the three numbers :

(*i*) स्था, (*ii*) शक्, (*iii*) ज्ञा ।

8. अधोलिखितेषु धातुषु लृट्लोट्लकारयोः रूपाणि लिखन्तु :
निम्नलिखित धातुओं के रूप लोट् तथा लृट् लकारों में लिखिए :
Conjugate the following roots in Lṛiṭ and Loṭ Lakāras :
यत्, हन्, ग्रह् ।

9. अधोलिखितेषु धातुषु द्वयोः रूपाणि यथानिर्दिष्टपुरुषेषु लट्लकारे लिखन्तु :
निम्नलिखित धातुओं में से प्रत्येक भाग से किन्हीं दो के रूप निर्दिष्ट पुरुष के तीनों वचनों में लट् लकार में लिखिए :

Conjugate any two of the following roots in Laṭ Lakāra in the persons as indicated below :

(*i*) लिख्, प्रथम पुरुष
(*ii*) पठ्, मध्यम पुरुष
(*iii*) दा, उत्तम पुरुष
(*iv*) स्था, प्रथम पुरुष
(*v*) श्रु, मध्यम पुरुष

10. अधोलिखितेषु धातुषु प्रतिखण्डं द्वयोः रूपाणि यथानिर्दिष्टपुरुषेषु लट्लकारे लिखन्तु :
निम्नलिखित धातुओं में से प्रत्येक भाग से किन्हीं दो के लट् लकार में निर्दिष्ट पुरुष के तीनों वचनों में रूप लिखिए :

Conjugate in each part any two of the following roots in Laṭ Lakāra in the persons as indicated below :

(क) लिख्—प्रथम पुरुष, मुद्—उत्तम पुरुष, घ्रा—मध्यम पुरुष, चुर्—उत्तम पुरुष ।

(ख) पठ्—उत्तम पुरुष, नृत्—प्रथम पुरुष, शक्—मध्यम पुरुष, हन्—उत्तम पुरुष ।

(ग) गम्—प्रथम पुरुष, पठ्—मध्यम पुरुष, शक्—उत्तम पुरुष, सेव्—प्रथम पुरुष के रूप लृट् लकार में तीनों वचनों में लिखिए ।

11. अधोलिखित धातुओं में से किन्हीं दो के रूप निर्दिष्ट लकार एवं पुरुष के तीनों वचनों में लिखिए :

(*i*) पठ् (लृट्) प्रथम पुरुष, (*ii*) नी (लोट्) प्रथम पुरुष, (*iii*) लिख् (लङ्) प्रथम पुरुष, (*iv*) चुर् (लट्) मध्यम पुरुष ।

—o—

5

अनुवाद-विधि
(TRANSLATION)

हिन्दी या अंग्रेजी संदर्भ का संस्कृत में अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का ज्ञान जरूरी है :

1. संस्कृत विभक्ति प्रधान भाषा है तथा संस्कृत वाक्य में शब्दों का क्रम बदलने पर भी अशुद्धि नहीं होती। जैसे—'रामो गोविन्दम् अपश्यत्' के स्थान पर यदि 'गोविन्दम् रामोऽपश्यत्' या 'अपश्यद् रामो गोविन्दम्' कर दिया जावे तो भी अर्थ में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ेगा।

2. संस्कृत अनुवाद में अधिकतर शब्दों में लिंग-निर्णय बिल्कुल मनमाना है इसलिए अनुवादकर्त्ता के लिए प्रयुक्त होने वाले संस्कृत शब्द के लिंग का ज्ञान होना अत्यावश्यक है।

3. संस्कृत में 'दो' का बोध कराने के लिए द्विवचन तथा दो से अधिक का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। जोड़े का अर्थ व्यक्त करने के लिए 'द्वय', 'युगल' तथा 'युग्म' आदि शब्दों का एकवचन में प्रयोग होता है। जैसे 'बाहुद्वयम्' 'चरणयुगलम्' इत्यादि।

4. देशों के तथा कुलों के नाम का प्रयोग बहुवचन में रहता है। जैसे—सः कलिङ्गान् (कलिङ्गदेशं वा) गतः (वह कलिंग लोगों के देश में गया) जनकानां रघूणाम् च सम्बन्धः कस्य न प्रियः (जनक के वंशजों तथा रघु के वंशजों का सम्बन्ध किसको प्रिय नहीं)।

5. **कर्त्ता और क्रिया का सम्बन्ध**—(क) कर्त्ता (या उद्देश्य) प्रथमा विभक्ति में रखा जाता है तथा अंग्रेजी की भान्ति क्रिया का पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार होता है। जैसे 'आसीद् राजा शूद्रको नाम' (शूद्रक नाम का राजा था)। 'साधयामो वयम् (हम जाते हैं) इत्यादि।

(ख) पात्र, आस्पद्, पद, स्थान, प्रमाण; भाजन आदि शब्दों को विधेय के रूप में प्रयुक्त होने पर सदा एकवचन नपुंसकलिंग में रखा जाता है। जैसे 'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु' (गुणवान् व्यक्तियों के गुण ही पूजा के कारण होते हैं)।

(ग) 'वा' (अथवा) द्वारा संयुक्त एकवचन कर्त्ता पद के लिए एकवचन की क्रिया प्रयुक्त होती है। जैसे 'रामो गोविन्दः कृष्णो वा गच्छतु' (राम, गोविन्द अथवा कृष्ण जावें) । विभिन्न वचन या विभिन्न पुरुष के कर्त्ता 'वा' द्वारा संयुक्त होने पर

क्रिया निकटस्थ कर्त्ता के पद के अनुसार होगी। जैसे ते वा अयं वा पारितोषिकं गृह्णातु (वे अथवा यह पारितोषिक ग्रहण करें)। ते वा वयं वा इदं कर्तुम् शक्नुमः (वे या हम इसे कर सकते हैं)।

(घ) जब विभिन्न पुरुषों के कर्त्ता 'च' (और) द्वारा संयुक्त हों तब क्रिया कर्त्ता पदों के संयुक्त वचन के अनुसार होगी और उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष के योग में उत्तम पुरुष की क्रिया होगी, मध्यम तथा अन्य पुरुष के योग में मध्यम पुरुष की क्रिया होगी। जैसे—त्वं चाहं च पचावः (तू और मैं पकाता हूँ)। ते किंकराः अहं च ग्रामं गमिष्यामः (वे नौकर तथा मैं गांव जावेंगे)। त्वं सोमदत्तिश्च कर्णश्च तिष्ठथ (तुम, सोमदत्त का पुत्र और कर्ण रहें।)

6. **विशेष्य और विशेषण का सम्बन्ध**—अंग्रेजी में विशेषण का प्रयोग सभी लिंगों, वचनों और कारकों में बिना किसी परिवर्तन के समान रूप से होता है, हिन्दी में लिंग तथा वचन के अनुसार विशेषण में विशेष्य के अनुसार बदल जाता है, संस्कृत में विशेषण के लिंग, वचन और कारक विशेष्य के अनुसार बदल जाते हैं। जैसे—गच्छन् पुरुषः, गच्छन्ती नारी, का तृप्तिः, तत् सुखम्, शोभनानि गृहाणि, शोभनेभ्यः गृहेभ्यः। यह परिवर्तन कर्मधारय या बहुव्रीहि समास में नहीं होता है। जैसे कृष्णमृगः रूपवद्भार्यः इत्यादि।

(क) कृत् प्रत्ययों द्वारा सिद्ध विधेयभूत विशेषण भी उद्देश्य के अनुसार होता है। जैसे 'मालविका उपायनं प्रेषिता' (मालविका भेंट रूप में भेजी गई)। यहाँ प्रेषिता का लिंग वचन कारक मालविका के अनुसार है।

(ख) जब एक ही विशेषण दो या दो से अधिक विशेष्यों की विशेषता प्रकट करता हो तब विशेषण का वचन विशेष्यों के संयुक्त वचन के अनुसार होता है तथा लिंग की दृष्टि से एक भी विशेष्य नपुंसकलिंग हो तो विशेषण का नपुंसकलिंग होता है अन्यथा जब विशेष्य पुंल्लिंग व स्त्रीलिंग होते हैं तो विशेषण पुंल्लिंग होता है। जैसे—'पक्ष-पातिनौ अनयोः अहं देवी च' (मैं और देवी इन दोनों के पक्षपाती है)। वैसे संस्कृत में विशेषण प्रायः निकटतम विशेष्य के अनुसार रहता है। जैसे—'यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च' (जिसके पराक्रम से हम और तीनों लोक सुखी है)।

7. सम्बन्धवाचक सर्वनाम के लिंग, पुरुष और पुरुष उसके सम्बन्धी के अनुसार होते हैं। जैसे—'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य' (जिसकी बुद्धि उसका बल)। किन्तु यदि सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का विधेय कोई ऐसा विशेष पद होता है जिसका लिंग उसके सम्बन्धी-से भिन्न होता है तब सम्बन्धवाचक सर्वनाम सामान्यतया विधेय के अनुसार होता है। जैसे—'शैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य' (जो शीतलता है वह जल का प्राकृतिक धर्म है)।

कारक प्रयोग—हिन्दी के 'का', 'के', 'की' में सम्बन्ध कारक होता है तथा छठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—राजा का पुत्र जाता है—राज्ञः पुत्रः गच्छति।

किन्तु यदि क्रिया के पद के साथ 'का', 'के', 'की' का प्रयोग हो, तो वह कर्म कारक होता है तथा द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—वे राजा की आज्ञा का पालन करते हैं ते राज्ञः आज्ञाम् अनुवर्तन्ते। हम देश की रक्षा करते हैं—वयं देशं रक्षामः। वे स्वामी की सेवा करते हैं—ते स्वामिनं सेवन्ते। उपर्युक्त उदाहरणों में काले वाक्यांशों में 'का' या 'की, के लिए द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है। किन्तु इन्हीं उदाहरणों में यदि हम 'करते हैं' के लिए 'कृ' धातु का प्रयोग करते हैं तथा 'करते हैं' पद से पहले के पद को संज्ञा मानकर प्रयोग करते हैं तो 'का' में छठी विभक्ति का प्रयोग होगा। जैसे—ते राज्ञः आज्ञायाः पालनं (अनुवर्तनं वा) कुर्वन्ति। वयं देशस्य रक्षां कुर्मः। ते स्वामिनः सेवां कुर्वन्ति, इत्यादि।

यदि हिन्दी में 'चाहिए' पद से वाक्य समाप्त हो रहा हो तो उसके अनुवाद में विशेष सावधानी की आवश्यकता रहती है। ऐसे वाक्यों को हम दो तरह प्रयुक्त कर सकते हैं :

(1) कर्तृवाच्य के समान (2) कर्मवाच्य के समान।

(1) यदि हम उन्हें कर्तृवाच्य के समान प्रयोग करते हैं तो हमें उनकी क्रिया में विधिलिङ् का प्रयोग करना होता है तथा हिन्दी में 'को' से प्रयुक्त कर्मकारक को कर्त्ता मानकर तथा कर्त्ता के समय दिखाने वाले कारक को कर्म मानकर प्रयोग करना होता है। जैसे—हमें नित्य विद्याध्ययन करना चाहिए—वयं नित्यं विद्याध्ययनं कुर्याम। सुविधा की दृष्टि से हिन्दी में इस वाक्य को थोड़ा बदल कर हम यों रख सकते हैं—'हम नित्य विद्याध्ययन करें'। ऐसा करने से हमारे लिए इसका अनुवाद करना सरल हो जायेगा। (2) किन्तु यदि हम वाक्य के स्वरूप को इसी भाँति अर्थात् कर्मवाच्य में रखना ठीक समझें तो हमें क्रिया में भाव-कृदन्तों (तव्य, अनीयर्, यत् आदि) का प्रयोग करना चाहिए। तब हमें हिन्दी के 'को' या कर्मकारक का अनुवाद तृतीया विभक्ति से करना होता है तथा उपर्युक्त संस्कृत वाक्य के कर्म के प्रयोग के स्थान पर प्रथमा विभक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—अस्माभिः नित्यं विद्याध्ययनं कर्तव्यं कार्यं करणीयं वा। यहाँ 'हमें' या 'हमको' के लिए तृतीया विभक्ति के अस्माभिः पद का प्रयोग हुआ है एवं 'विद्याध्ययनं' में द्वितीया विभक्ति के स्थान पर प्रथमा विभक्ति का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार 'राम को अपने पिता को पत्र लिखना चाहिए'—रामेण स्वपित्रे पत्रं लेखितव्यं लेखनीयं लेख्यं वा। इस वाक्य में भी 'राम को' का अनुवाद तृतीया विभक्ति के साथ हुआ है तथा पत्र में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग हुआ है। विधिलिङ् में यह वाक्य इस प्रकार होगा—रामः स्वपित्रे पत्रं लिखेत्—राम अपने पिता को पत्र लिखे।

उपर्युक्त वाक्य में 'अपने पिता को' का अनुवाद द्वितीया विभक्ति में 'स्वपितरं' न करके चतुर्थी विभक्ति में 'स्वपित्रे' किया गया है। संस्कृत में जैसा हम कर्मकारक के अध्याय में पढ़ आये हैं दुह्, याच् आदि कुछ द्विकर्मक धातुएँ होती हैं। उन धातुओं के साथ वाक्य में अन्य कारक चिह्न होने पर भी उनमें गौण कर्म मानकर द्वितीया

विभक्ति का प्रयोग करते हैं। जैसे—'वह गाय का दूध दोहता है' का अनुवाद 'सः गां पयः दोग्धि' करते हैं। 'गाय का' या 'गाय से' होने पर भी द्विकर्मक क्रिया के साथ उसका अनुवाद द्वितीया विभक्ति में किया गया है। किन्तु 'लिख् धातु' की गणना द्विकर्मक धातुओं में नहीं है अतः यहाँ द्वितीया विभक्ति न होकर चतुर्थी का प्रयोग हुआ है।

हिन्दी में 'दान करना' या 'देना' अर्थ वाली क्रियाओं में जिसको दिया जाता है, उसके साथ कभी हम 'का' का प्रयोग कर लेते हैं तो कभी 'के लिए' का। संस्कृत में सम्प्रदान के लिए चतुर्थी विभक्ति ही होती है फिर चाहे वहाँ 'का' का प्रयोग हो या 'के लिए' का। जैसे—वह भिक्षुक को वस्त्र देता है, अथवा 'वह भिक्षुक के लिए वस्त्र देता है'—इन दोनों वाक्यों में भिक्षुक सम्प्रदान कारक है तथा उसके लिए चतुर्थी विभक्ति का ही प्रयोग ठीक है। यथा—'सः भिक्षुकाय वस्त्राणि ददाति यच्छति वा।' यदि हम धोने के लिए या रंगने के लिए किसी धोबी या रँगसाज को कोई वस्तु देते हैं तो वहाँ 'सम्प्रदान' (अच्छी प्रकार दान देना, दी हुई वस्तु को वापस न लेना) न होने के कारण चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग न होकर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—सः रजकस्य वस्त्राणि ददाति।

हिन्दी में 'को' का प्रयोग सम्बन्ध के लिए भी होता है। जैसे—हमको इसका ज्ञान नहीं। हमको इससे क्या लाभ? हमको वहाँ जाना है इत्यादि। ऐसे वाक्यों में हमें सम्बन्ध अर्थात् षष्ठी विभक्ति का ही प्रयोग करना चाहिए। यथा—अस्माकम् अस्य ज्ञानं नास्ति। अस्माकम् अनेन को लाभः? अस्माकम् तत्र गमनम् अस्ति।

इसी प्रकार मुझे मृत्यु से डर नहीं है—मम मरणाद् भयं नास्ति। इस वाक्य का अनुवाद 'क्त' के प्रयोग से हो सकता है। जैसे—नाहं मरणाद् भीतोऽस्मि।

कभी-कभी ऐसे वाक्य होते हैं। जैसे—'उसको कहना कि हम शाम को घर आयेंगे—इस वाक्य में 'उसको कहना' में यदि हम 'निवेदय' का प्रयोग करना चाहते हैं तो चतुर्थी विभक्ति के साथ अनुवाद होगा। जैसे—तस्मै निवेदय—वयं सायंकाले गृहम् आगमिष्यामः इति।

कभी-कभी समयवाचक विशेषण शब्दों में हिन्दी में 'का' का प्रयोग होता है किन्तु उनमें विशेष्य में सप्तमी होने के कारण विशेषण में भी सप्तमी का ही प्रयोग होता है। जैसे—वैशाख के महीने में—वैशाखे मासे अथवा वैशाख-मासे। यहाँ वैशाखस्य मासे अनुवाद करना अशुद्ध होगा।

इसी तरह 'स्वर्ण' का (बना हुआ—Made of) पात्र, 'मिट्टी' का पात्र, बहुत मूल्य का मोती, बम्बई का नगर के अनुवाद में षष्ठी का प्रयोग न करके विशेषण विशेष्य का व्यवहार करना चाहिए। यथा—हैमं पात्रम्, मृण्मयं भाण्डम्, महार्घं मुक्ताफलं, मुम्बा नाम पुरी आदि।

कई बार में अथवा पर होने पर भी कर्मकारक होता है तथा द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

वह वृक्ष पर चढ़ गया—स वृक्षम् आरूढः।

उसने सभा में प्रवेश किया—स सभां प्राविशत्।

वह गाँव में गया—स ग्रामम् अगच्छत्।

कालवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकालिक कृत्प्रत्ययान्त (शतृ, शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के षष्ठी रूप द्वारा और कर्त्ता को भी उसी विभक्ति में रखकर प्रयोग किया जाता है। जैसे— मैं इसे तीन दिन से कहता हूँ—इदं कुर्वतो मम दिनत्रयं जातम्।

अनुवाद में चतुर्थी विभक्ति के लिए 'अर्थम्' शब्द का प्रयोग करके भी अनुवाद किया जाता है। जैसे—'वह मरने के लिए वहाँ गया'—सः मरणार्थं तत्र गतः।

अनुवाद में पञ्चमी विभक्ति के लिए तस् (तः) प्रत्यय का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे—वह एक गाँव से निकल गया—सः ग्रामतः निरगच्छत्।

भावे षष्ठी तथा भावे सप्तमी के भी कुछ उदाहरण देना ठीक रहेगा। जब शतृ या शानच् प्रत्ययान्त शब्द का लिंग, वचन और कारक क्रिया के कर्त्ता से भिन्न किसी अन्य कर्त्ता के अनुरूप होता है तब वह वाक्य-खण्ड 'भावे' कहलाता है। जैसे—'वायु अनुकूल होने पर जहाज चल पड़ा'—इस वाक्य में वायु अनुकूल होने पर स्वतन्त्र वाक्य-खण्ड है तथा 'जहाज चल पड़ा' उपवाक्य की रचना से कोई सम्बन्ध नहीं है अतः प्रथम वाक्य—खण्ड 'भावे' कहलाता है तथा इसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—पवने अनुकूले सति विमानः प्रस्थितः। इसी प्रकार, पौरव के पृथ्वी का शासन करने पर कौन अविनय का आचरण कर रहा है?—

पौरवे वसुमतीं शासति कोऽविनयम् आचरति?

किन्तु यदि दोनों उपवाक्यों का कर्त्ता एक ही है तो भावे का प्रयोग नहीं होगा। जैसे—'लंका को ले लेने पर राम अयोध्या लौटे'—लंकां गृहीत्वा रामः अयोध्यां न्यवर्तत अथवा गृहीत-लंकः रामः अयोध्यां न्यवर्तत। इस वाक्य में लंका को ग्रहण करने वाले तथा अयोध्या में लोटने वाले 'राम' ही हैं अतः यहाँ भावे का प्रयोग न होकर या तो क्त्वा के द्वारा पूर्व वाक्य-खण्ड का अनुवाद होगा या उस समस्त वाक्य-खण्ड को कर्त्ता के विशेषण के रूप में प्रथमा विभक्ति में रख दिया जायेगा। यदि लंका को ग्रहण करने वाले राम न होकर वानर होते तो इसका अनुवाद भावे में होता। किन्तु यहाँ शतृ या शानच् का प्रयोग न होकर क्त या क्तवतु का प्रयोग होगा। शतृ या शानच् वर्तमानकालिक क्रिया में होता है तथा क्त या क्तवतु का भूतकालिक क्रिया में। यदि पहले वाक्य-खण्ड की क्रिया समाप्त होने के बाद दूसरे उप-वाक्य की क्रिया हुई हो तो क्त या क्तवतु का प्रयोग होगा, किन्तु यदि पहले वाक्य-खण्ड की क्रिया के साथ ही दूसरे उप-वाक्य की क्रिया हो रही हो तो भाव में शतृ या शानच् का प्रयोग होगा। शतृ या क्तवतु का प्रयोग कर्तृवाच्य के वाक्य-खण्डों में होगा तथा कर्मवाच्य के वाक्य-खण्डों में शानच् या क्त का प्रयोग होगा। जैसे—'कपिभिः गृहीतायां लंकायां रामः अयोध्यां न्यवर्तत' अथवा 'कपिषु लंकां गृहीतवत्सु रामः अयोध्यां न्यवर्तत'।

शतृ के प्रयोग के लिए देखिए—जिसके जीवित रहने पर अनेक जीवित रहते हैं वही जीवित है—यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवति। शानच् के प्रयोग के लिए 'माताओं द्वारा चिन्ता किए जाते हुए हम लोगों के ये दिन बीत गए'—मातृभिः चिन्त्यमानानां ते हि नो दिवसा गतः। 'बाजार से लाये गए पात्र में अन्न पकाता हूँ'—आपणात् समानीते पात्रे अन्नं पचामि। इस वाक्य में दो उपवाक्य मानकर दूसरे उपवाक्य में अधिकरण रूप पात्र शब्द के लिए 'पात्रे' पद के बाद सर्वनाम वाचक 'तस्मिन्' शब्द को अनुवाद में सम्मिलित करना योग्य नहीं है।

लकार प्रयोग—अंग्रेजी में 12 Tenses होते हैं। सैकेण्ड्री स्कूल के छात्रों के लिए इन 12 Tenses के लिए केवल तीन लकार (लट्, लङ् तथा लृट्) हैं। सामान्यतः वर्तमान कालों के लिए लट्, भूतकालों के लिए लङ् एवं भविष्यत् कालों के लिए लृट् का प्रयोग रहता है। पूर्ण वर्तमान (Present Perfect) का अनुवाद क्तवतु द्वारा किया जाता है। जैसे—मैंने अपना काम कर लिया है—अहं मम कार्यं सम्पादितवान्। उसने अपना भाषण समाप्त कर लिया है—स भाषणम् अवसितवान्। जैसे ऊपर कहा गया है, पूर्ण भूत (Past Perfect) को भावे सप्तमी अथवा 'क्त' द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जैसे—'जब वह चला गया तब मैं लौटा आया'—तस्मिन् अपक्रान्तेऽहं प्रत्यागच्छम्। पूर्ण भविष्यत् (Future Perfect) की अभिव्यक्ति भू धातु के विधिलिङ् द्वारा धातु के भूतकालिक कृत्प्रत्ययान्त (क्त, क्तवतु) रूप के साथ हो सकती है। जैसे—अब तक वह वहाँ चला गया होगा—अनेन समयेन स तत्र गतो भवेत् (अथवा तेन तत्र गन्तव्यम्)।

नैरन्तर्य सूचक (Continuous) वर्तमान, भूत और भविष्यत् काल के वाक्यों का अनुवाद केवल सामान्य (Indefinite) वर्तमान, भूत, भविष्यत् के वाक्यों के समान होता है। जैसे—वह अपना पाठ पढ़ रहा है—स पाठम् अधीते। सूर्य तप रहा था—रविः अतपत्। वह अपना पाठ तैयार करता रहेगा—स पाठम् अध्येष्यते। जैसा ऊपर कहा गया है आश्रित उपवाक्यों के नैरन्तर्यबोधक वाक्य-खण्ड में शतृ या शानच् का प्रयोग होता है। जैसे—'जब मंत्री बोल रहा था, सभा में एक दूत ने प्रवेश किया'—भाषमाणेऽमात्ये कश्चिद् दूतः सभां प्राविशत्।

अंग्रेजी की तरह लोट् लकार (Imperative mood) का प्रयोग मध्यम पुरुष में आज्ञा अथवा विनम्र सम्मति के अर्थ में किया जाता है। जैसे—'अरे कहाँ हो, मुझे उत्तर तो दो'—अरे क्वासि, देहि मे प्रतिवचनम्। 'लालच त्यागो, क्षमा ग्रहण करो, गर्व को छोड़ो' तृष्णां छिन्धि, भज क्षमां, जहि मदम्। लोट् लकार के प्रथम पुरुष का प्रयोग आशीर्वादात्मक अर्थ का बोध कराने हेतु किया जाता है। जैसे—'सब सुखी हों, सब नीरोग हों'—सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। विधिलिङ् (Potential mood) का प्रयोग स्वतन्त्र उपवाक्य और आश्रित दोनों में होता है। सामान्यतः सम्भावना, आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, आशा और सामर्थ्य अर्थों को व्यक्त करने वाले आश्रित उपवाक्यों में इसका प्रयोग होता है। अंग्रेजी में May, Shall,

Should, Will, Would, Could, Might आदि द्वारा बनने वाले सभी स्थलों पर संस्कृत में विधिलिङ् का प्रयोग होता है। हिन्दी के 'चाहिए', 'सकते हैं', 'अवश्य करें' आदि में विधिलिङ् का प्रयोग होता है। आप यहाँ बैठ सकते हैं—इह आसीत भवान्। आपत्ति के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए—आपदर्थे धनं रक्षेत् इत्यादि।

सर्वनाम प्रयोग—भवत् शब्द का प्रयोग प्राय: प्रत्यक्ष सम्बोधित व्यक्ति के प्रति शिष्टाचार प्रदर्शन के लिए होता है। उसके साथ क्रिया भी प्रथम पुरुष की प्रयुक्त की जाती है। जैसे—'अथवा आप क्या समझते हैं'—अथवा कथं भवान् मन्यते। अस्मद् तथा युष्मद् के वैकल्पिक मा, मे, नौ, न:, त्वा, ते वां, व:, का प्रयोग वाक्य के आरम्भ में नहीं होता तथा न ही इनका प्रयोग च, वा, एव, हा आदि के बिल्कुल पहले होता है। जैसे—'हमारी रक्षा करो'—अस्मान् पाहि। यहाँ पर 'न: पाहि' अशुद्ध प्रयोग है। इसी तरह 'हा मम मन्दभाग्यं' शुद्ध है तथा इसके स्थान पर हा मे मन्दभाग्यं' अशुद्ध है। इसी तरह 'तस्य च मम च' के स्थान पर 'तस्य च मे च' अशुद्ध प्रयोग है। किन्तु 'किंवा मे पुत्री करोतु' शुद्ध है क्योंकि इसमें 'मे' वा से युक्त नहीं है।

अव्यय प्रयोग—'च' प्रत्येक शब्द अथवा वाक्य के साथ अथवा अन्तिम शब्द या वाक्य के साथ प्रयुक्त होता है। इसका वाक्य के आदि में कभी प्रयोग नहीं हो सकता। जैसे—राम और गोविन्द—राम: च गोविन्द: च, अथवा 'राम: गोविन्द: च'। वह चावल पकाता है और भात खाता है—स तण्डुलान् पचति ओदनं भुङ्क्ते च। जब कई शब्द परस्पर सम्बद्ध हो तो प्रत्येक शब्द के साथ इसका प्रयोग करने की अपेक्षा अन्तिम शब्द के साथ ही प्रयोग उचित प्रतीत होता है। जैसे—कुल, कान्ति यौवन तथा विभिन्न विनय आदि गुणों के द्वारा—कुलेन कान्त्या वयसा नवेन गुणैश्च तैस्तैर्विनयप्रधानै:।

अभ्यास 1

1. राम मीठे स्वर से पढ़ता है।	1. राम: मधुरं पठति।
2. देवता तेरा चरित लिख रहे हैं।	2. देवा: त्वच्चरितं लिखन्ति।
3. होनहार होकर ही रहती है।	3. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।
4. जीवन में उत्थान और पतन सब के ही होते हैं।	4. जीवने पातोत्पाता: सर्वेषां भवन्ति।
5. वह तिल का ताड़ बनाता है।	5. स: तिले तालं पश्यति।
6. उसे पुरस्कार मिलना चाहिए।	6. स: पुरस्कारम् अर्हति।
7. वह सदाचारी है अत: उसका सर्वत्र सम्मान होना चाहिए।	7. स: सद्वृत्त:, अत: स: सर्वत्र सम्मानम् अर्हति।
8. दुष्ट व्यक्ति दूसरों के सरसों के बराबर छोटे दोषों को देखता है	8. खल: सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति परम् आत्मनो बिल्वमात्राणि

और अपने बड़े दोषों को देखता हुआ भी नहीं देखता है।	पश्यन्नपि न पश्यति।
9. वह दुराचारी है अतः आदर के योग्य नहीं है।	9. सः दुर्वृत्तः, अतः समादरम् न अर्हति।
10. मनुष्य का भाग्य रथचक्र के समान कभी ऊपर जाता है, कभी नीचे।	10. नीचैर्गच्छति उपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

अनुवाद करो :

गंगा हिमालय से निकलती है। भाग्य बलवान् है। आग इसे नहीं जलाती। पानी इसे नहीं गलाता। वायु इसे नहीं सुखाती। जो विद्या पढ़ता है वह हर्ष का अनुभव करता है। मैं तुमसे हँसी नहीं कर रहा हूँ। तुम अपने पुण्यकर्मों का फल भोग रहे हो। यह मूर्ख बकवाद करता है। वृक्ष अपने ऊपर तीक्ष्ण गर्मी को सहन करता है।

संकेत—प्रस्रवति। विधिः प्रभवति। दहति। क्लेदयति। शोषयति। हर्षमनुभवति। परिहसामि। अनुभवसि। प्रलपति। अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्।

अभ्यास 2

1. उसने प्रश्न पूछा।	1. सः प्रश्नम् अपृच्छत्।
2. नदी के दोनों ओर खेत हैं।	2. नदीम् उभयतः क्षेत्राणि सन्ति।
3. नगर के चारों ओर वन हैं।	3. नगरं परितः वनानि सन्ति।
4. नगर के पास ही एक सुन्दर उपवन है।	4. नगरम् अभितः एकं रम्यम् उपवनम् अस्ति।
5. भूखे को कुछ अच्छा नहीं लगता।	5. बुभुक्षिताय किमपि न रोचते।
6. नदी एक कोस तक टेढ़ी है।	6. क्रोशं कुटिला नदी।
7. वह बालक से मार्ग पूछता है।	7. सः माणवकं पन्थानं पृच्छति।
8. रसोइया चावलों से भात पकाता है।	8. सूदः तण्डुलान् ओदनं पचति।
9. वह गाय को बाड़े में रोकता है।	9. सः व्रजमवरुणद्धि गाम्।
10. वह गाय से दूध दोहता है।	10. सः गां पयः दोग्धि।

अनुवाद करो :

वह वृक्ष से फल तोड़ता है। वह बलि से पृथ्वी माँगता है। वह बालक को धर्म का उपदेश करता है। वह समुद्र से अमृत का मन्थन करता है। वह बकरी को गाँव में ले जाता है। वह देवदत्त के सौ रुपये चुराता है। हरि वैकुण्ठ में रहते हैं। वह सन्मार्ग पर चलता है। वह आसन पर बैठता है। श्रम के बिना सिद्धि नहीं मिलती।

संकेत—अवचिनोति। याचते। शास्ति। सुधां मथ्नाति। नयति। मुष्णाति। अधिवसति। अभिनिविशते। अधितिष्ठति। श्रमं विना न सिद्धिरस्ति।

अभ्यास 3

1. अपना काम करो। — 1. आत्मनः नियोगम् अनुतिष्ठ।
2. अपने काम पर जाओ। — 2. स्वनियोगम् अशून्यं कुरु।
3. आगे कहिए। — 3. ततः परं कथय।
4. जरा रुकिए। — 4. तिष्ठतु तावत्।
5. चुप रहो। — 5. मौनम् आस्स्व।
6. जरा यह बात बन्द कीजिए। — 6. मुहूर्तं तद् आस्ताम्।
7. मिलकर चलो। — 7. संगच्छध्वम्।
8. मिल कर बोलो। — 8. संवदध्वम्।
9. सच बोलो। — 9. सत्यं वद।
10. धर्म का आचरण करो। — 10. धर्मं चर।

अनुवाद करो :

झूठ न बोलो। चोरी न करो। स्वाध्याय से प्रमाद न करो। बाईं ओर चलो। धर्म का उल्लंघन न करो। विवाद मत करो। हँसी मत करो। बात मत बढ़ाओ। इस बात से क्या लाभ, बस करो। हठ मत करो।

संकेत—अनृतम्। चौर्यम्। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। वामतः। न उच्चरस्व। विवादेन अलम्। परिदेवेनेन। अलम् उपहासेन। अलम् अतिविस्तरेण। आस्ताम् तावत्। अलम् निर्बन्धेन।

अभ्यास 4

1. पांच वर्ष तक प्यार करना चाहिए। — 1. पञ्चवर्षाणि लालयेत्।
2. दस वर्ष तक ताड़ना चाहिए। — 2. दशवर्षाणि ताडयेत्।
3. पुत्र के साथ मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। — 3. पुत्रं मित्रवद् आचरेत्।
4. कल्याण का इच्छुक सन्मार्ग पर चले। — 4. हितेच्छुः सन्मार्गम् अनुचरेत्।
5. कौन क्षत्रिय होकर अधर्मयुद्ध से जय चाहेगा? — 5. को हि क्षत्रियः भवन् अधर्मयुद्धेन जयम् इच्छेत्?
6. अति का सर्वत्र त्याग करो। — 6. अति सर्वत्र वर्जयेत्।
7. इष्ट को धर्म से मिला दे। — 7. इष्टं धर्मेण योजयेत्।
8. मैं समझता हूँ कि यह बात उसको स्वीकार होगी। — 8. यथाहं पश्यामि, तथा तस्यानुमतं भवेत्।
9. राम वन में घूमे। — 9. रामः वनं विचरेत्।

10 विद्वान् व्यक्ति जानते हुए भी जड़ के तुल्य लोक में व्यवहार करे।	10. जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोकम् आचरेत्।

अनुवाद करो :

माता पुत्र को देखे। राजा सचिवों के साथ मन्त्रणा करे। कूड़ा घर से दूर फेंकना चाहिए। वह पिताजी की सेवा करे। इसके बाद क्या करना चाहिए? हे चकवी, अपने साथी से विदाई ले। अच्छी तरह परीक्षा करके ही गुप्त प्रेम करना चाहिए। शिष्यों का हित होवे। दुःखी मत होइए। जल्दी करो।

संकेत—ईक्षेत। मन्त्रयेत। अवकरनिकरः गृहाद् दूरं क्षिपेत्। सेवेत। कुर्यात्। हचरम् आमन्त्रयस्व। अतः परीक्ष्यं कुर्यात् विशेषात् संगतं रहः। भूयात्। मा विषीदत। त्वर्यताम्।

अभ्यास 5

1. शिष्य गुरु के पास गया।	1. शिष्यः गुरुमुपागच्छत्।
2. मेघरहित चन्द्रमा को चाँदनी प्राप्त हुई।	2. कौमुदी अनभ्रं शशिनमुपगती।
3. कमला ने होल्डर से कापी पर लेख लिखा।	3. कमला कलमेन अभ्यासपुस्तिकायां लेखम् अलिखत्।
4. उमा ने डंडे से बन्दर को मारा।	4. उमा दण्डेन वानरम् अताडयत्।
5. ऋषि दयानन्द घर से निकलकर वन को गए।	5. ऋषिः दयानन्दः गृहात् निर्गत्य वनम् अगच्छत्।
6. कमला विद्यालय से लौट कर घर आई।	6. कमला विद्यालयात् गृहं प्रत्यागच्छत्।
7. शान्ति ने सरलता से पुस्तक पढ़ ली।	7. शान्तिः सरलतया पुस्तकम् अपठत्।
8. उसने एक वर्ष में गीता पढ़ी।	8. सः वर्षेणैकेन गीताम् अधीतवान्।
9. वह सात दिन में नीरोग हुआ।	9. सः सप्तभिर्दिनैः नीरोगः जातः।
10. राजा दिलीप छाया की तरह उस गाय के पीछे चला।	10. भूपतिः दिलीपः छायेव तां धेनुम् अन्वगच्छत्।

अनुवाद करो :

सुशीला सवेरे उठी। उसने माता-पिता को प्रणाम किया। उसने पाठ पढ़ा, लेख लिखा और व्याकरण याद किया। उसने खाना खाया। पार्वती उपवन में गई। उसने फल देखे। उसने फूल सूँघे। वह पेड़ पर चढ़ी। उसने लता से फूल चुने। वह फूलों को घर लाई।

संकेत—उदतिष्ठत्। पितरौ। अस्मरत्। अखादत्। अजिघ्रत्। आरोहत्। अचिनोत्। आनयत्।

अभ्यास 6

1. मैं स्वामी की चित्तवृत्ति का अनुसरण करूँगा। — 1. अहं स्वामिनः चित्तवृत्तिम् अनुवर्तिष्ये।
2. तुम थोड़ी देर में अपने घर पहुँच लोगे। — 2. त्वं क्षणात् स्वगृहे वर्तिष्यसे।
3. पिता इस समाचार को सुनकर न जाने क्या विचारेंगे? — 3. पिता इदं वृत्तं ज्ञात्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यते?
4. जो दुःख सहेगा वह सदा सुख पायेगा। — 4 यः दुःखं सहिष्यते सः सदा सुखं लप्स्यते।
5. वह गुरु की सेवा करेगा। — 5. स गुरुं सेविष्यते।
6. जो माता-पिता की वन्दना करेगा वह दुःखी नहीं होगा। — 6. यः पितरौ वन्दिष्यते सः कदाचिद् दुःखी न भविष्यति।
7. वह धर्म में दीक्षा लेगा। — 7. सः धर्मं दीक्षिष्यते।
8. वह दुष्कर्म से लज्जित होगा। — 8. सः दुष्कर्मभ्यः त्रपिष्यते।
9. वह वेद को सीखेगा। — 9. सः वेदं शिक्षिष्यते।
10. वह सबका हित चाहेगा। — 10. सः सर्वेषां हितम् ईहिष्यते।

अनुवाद करो :

वह सत्कर्म में चेष्टा करेगा। वह अध्ययन से नहीं घबरायेगा। वह ज्ञानोपार्जन में स्पर्धा करेगा। वह समयानुसार खेलेगा। वह क्रीडाक्षेत्र में कूदेगा। वह धर्म की रक्षा करेगा। वह घोड़े पर चढ़ेगा। वह सौ रुपये का लेन-देन करेगा। उसकी वाणी में मिठास होगा। वह प्रातःकाल उठेगा।

संकेत—चेष्टिष्यते। पलायिष्यते। स्पर्धिष्यते। क्रीडिष्यति। कूर्दिष्यति। रक्षिष्यति। आरोक्ष्यति। व्यवहरिष्यति। स्थास्यति। उत्थास्यति।

अभ्यास 7

1. स्त्रियाँ जन्म से ही चतुर होती हैं। — 1. स्त्रियः निसर्गादेव चतुराः भवन्ति।
2. आधा काम समाप्त हो गया। — 2. अर्धम् अवसितम्।
3. विद्वान् ही विद्वानों के परिश्रम को जानता है। — 3. विद्वानेव विजानाति विद्वज्जन-परिश्रमम्।
4. जल्दी में कोई काम न करो। — 4. सहसा विदधीत न क्रियाम्।
5. मुझमें मन लगाओ। — 5. मयि चेतः आधत्स्व।
6. खिड़की बन्द कर दो। — 6. गवाक्षं पिधेहि।
7. बलवान् शत्रु से सन्धि कर लो। — 7. बलीयसा रिपुणा सन्दध्यात्।
8. यह अफवाह फैल गई। — 8. इति वार्ता प्रसृता।

9. उसका मन कहीं और है। — 9. सः हृदयेन असंनिहितः।
10. उसने यह शर्त लगाई। — 10. इति तेन समयः कृतः।

अनुवाद करो :

वह कानों को बन्द करता है। मुझे राजा मानते हैं। वह गुरु पर श्रद्धा करता है। वह बाँह का तकिया लगाकर सोता है। शत्रु भी जिसके नाम का अभिनन्दन करते हैं वही पुरुष पुरुष है। उसने यह वचन कहा। हंस दूध को ले लेता है। बालक बार-बार रोता है। वह अपने कुल को बदनाम करता है। वह पत्नी सहित तपस्या करता है।

संकेत—पिदधाति। अहं राज्ञां मतः। श्रद्दधाति। सः बाहुमुपधाय स्वपिति। अभिनन्दन्ति, पुमान्। इति वचनम् अब्रवीत्। आददाति। रोरुद्यते। सः स्वकुलं कलङ्कयति। सपत्नीकः तपस्यति।

अभ्यास 8

1. गाय को माता माना जाता है। — 1. गौः माता मन्यते।
2. कौआ चोंच से दाने चुगता है। — 2. वायसः चञ्चुना कणान् चिनुते।
3. यह दुबला शरीर कठिन परिश्रम के योग्य नहीं है। — 3. इयं कृशा तनुः कठिनश्रमस्य अक्षमा।
4. पाँच को तीन से गुणा करने पर 15 हो जाते हैं। — 4. त्र्याहताः पञ्च पञ्चदश संपद्यन्ते।
5. मैं कुछ कहना चाहता हूँ। — 5. अहं किञ्चिद् वक्तुकामोऽस्मि।
6. बादल के साथ बिजली चली जाती है। — 6 मेघेन सह तडित् प्रलीयते।
7. मृग मृगों के साथ घूमते हैं। — 7. मृगाः मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति।
8. गुलाब के फूल किसे पसन्द नहीं ? — 8. स्थलपद्मानि कस्मै न रोचन्ते ?
9. वह पढ़ने के लिए विद्यालय जाती है। — 9. सः पठितुं विद्यालयं याति।
10 यह खाने का समय है। — 10. इयं भोक्तुं वेला वर्तते।

अनुवाद करो :

पुत्र कुपुत्र भले हो जाए, पर माता कुमाता नहीं होती। उसमें कोई गुण नहीं है। हम अपने काम में लगते हैं। समुद्र को छोड़कर महानदी कहाँ उतरती है। जब तक मैं जिन्दा हूँ, लड़ूँगा। रात्रि में भी पूरा सोना नहीं मिलता। होनहार के द्वार सर्वत्र होते हैं। पराई स्त्री को नहीं देखना चाहिए। जलाशय तक प्रेमी के साथ जाए। इच्छानुसार काम करना चाहिए, निन्दा कहाँ नहीं मिलती ?

संकेत—कामं जायेत। अभियुज्यामहे। उज्झित्वा, अवतरति। यावदहं ध्रिये। निकामं शयितव्यम्। भवितव्यानां। अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्। ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः। सर्वथा व्यवहर्तव्यम्, कुतो हि अवचनीयता।

अभ्यास 9

1. दिशाएँ स्वच्छ हो गईं ।	1. दिशः प्रसन्नाः जाताः ।
2 वायु प्रत्येक दिशा में मकरन्द को फैला रही है ।	2. वायुः दिशि-दिशि मकरन्दं किरति ।
3. शरीर ही मुख्यतः धर्म का साधन है ।	3. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।
4. भूकम्प आए एक महीना हो गया ।	4. मासैकं भुवः कम्पितायाः ।
5. तुम्हारे दुःख का क्या कारण है ?	5. किंनिमित्तं ते सन्तापः ?
6 उपदेश देने की अपेक्षा स्वयं करना अच्छा है ।	6. शासनात् करणं श्रेयः ।
7. तूने पैसे को कैसे खर्च किया ?	7. त्वया द्रव्यस्य कथं विनियोगः कृतः ?
8. वह कथा समाप्त हुई ।	8. सा कथा विच्छेदम् आप्नोत् ।
9 तुमने घोर अन्धकार दूर कर दिया ।	9. त्वया अनुत्तमं तमः नुन्नम् ।
10. सिर को साबुन से धोए ।	10. शिरः फेनिलेन प्रमार्जयेत् ।

अनुवाद करो :

सब अपने साथियों पर विश्वास करते हैं। प्रसन्नता के स्थान पर दुःख न करो। यह बात मेरी समझ के बाहर है। पढ़ाई शुरू करने के समय क्यों खेल रहे। हो सम्पत्तियाँ अच्छे आचरण वालों को भी विचलित कर देती है। अविवेक बड़ी आपत्तियों का घर है। रात्रि बीत गई बिस्तर छोड़ो। मरना मनुष्यों का स्वभाव है। गलती करना मनुष्य का स्वभाव है। प्रजा राजा पर अनुरक्त है।

संकेत—सगन्धेषु विश्वसिति। हर्षस्थाने। अध्ययने प्रारब्धव्ये। विक्षिपन्ति। परमापदां। शय्यां मुञ्च। प्रकृतिः। प्रमादः। अनुरज्यन्ते।

अभ्यास 10

1. प्राणियों की इस असारता को धिक्कार है।	1. धिक् इमां देहभृताम् असारताम् ।
2. सिपाही के आते ही चोर भाग गए।	2. प्रविष्टमात्रे एव रक्षिणि चौराः नष्टाः ।
3. आए हुए बच्चों को मिठाई दो।	3. आगतेभ्यः शिशुभ्यः मिष्ठान्नं देहि ।
4. यह बात मेरी समझ में नहीं आती।	4. इयं वार्ता मम धियः पथि न वर्तते ।
5. आप मेरे पिता की जगह पर हैं।	5. भवान् मम पितृस्थाने वर्तते ।

6. वर्षा रुकने पर वह घर गया। — 6. शान्ते पानीयवर्षे सः गृहं गतः।
7. उसने चावलों को धूप में डाला। — 7. सा तण्डुलान् सूर्यातपे दत्तवती।
8. शुभकर्म पापों को नष्ट करता है। — 8. सुकृतं दुष्कृतानि हिनस्ति।
9. कन्या पराई सम्पत्ति है। — 9. अर्थो हि कन्या परकीय एव।
10. अग्नि पर ही घी को पिघलाओ। — 10. अग्नौ घृतं द्रावय।

अनुवाद करो :

माता शिशु को दूध पिला रही है। साँप को दूध पिलाना केवल उसका विष बढ़ाना है। मैंने मन से तुम्हारा बुरा नहीं किया। मेरा मन सन्देह में ही पड़ा है। क्या यह चोर तो नहीं है? अब मैं ग्रीष्म ऋतु के बारे में गाऊँगा। भाग्य से विपत्ति टल गई। मैं विदेशी हूँ अतः पूछता हूँ। क्या आप यह काम कर सकते हैं। आशा करता हूँ कि आप सकुशल हैं।

संकेत—पाययति। पयःपानं, विषवर्धनम्। न तव विप्रियम् कृतम्। संशयमेव गाहते। अपि चौरो भवेत्? ऋतुमधिकृत्य। दिष्ट्या प्रतिहतं दुर्जातम्। वैदेशिकः। अपि भवान्······पारयति। कच्चित् कुशली भवान्।

11

हे सीते! मनुष्यों के लिए सत्य, दान, मान और दक्षिणा सहित यज्ञ वैसे हितकारी नहीं हैं जैसे पिता की सेवा। माता-पिता की सेवा करने वाले मनुष्य के लिए स्वर्ग, धन-धान्य, विद्या, पुत्र और सुख कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। अतः सत्य और धर्म के मार्ग में स्थित मेरे पिता जी जो आज्ञा दे रहे हैं, मैं वैसा ही आचरण करना चाहता हूँ क्योंकि यही सनातन धर्म है।

O Sita! Truth, Charity, Reverence and Sacrifice along with 'Dakshina' are not that beneficial for human beings as is the service rendered to their parents. Nothing, such as heaven, prosperity, knowledge, progeny and happiness is difficult to be attained by a person, who serves his parents. I would like to obey the word given by my father, who is truthful and religious. This is known as Sanatana-dharma.

अनुवाद हे सीते! मनुष्येभ्यः सत्यं, दानं, मानं, सदक्षिणं यज्ञं च न तथा हितं यथा पितृसेवा। पितरौ सेवमानस्य नरस्य स्वर्गं, धनधान्यं, विद्या, पुत्राः, सुखम् च अर्थात् न किमपि वस्तु दुर्लभम्। अतः सत्यस्य धर्मस्य च मार्गे वर्तमानाः मम पितृपादाः यदाज्ञापयन्ति तदेवाहमाचरितुमिच्छामि। एष सनातनो धर्मः।

12

एक बार हर्ष ने प्रातः के प्रारम्भ में एक स्वप्न में देखा कि एक शेर दावाग्नि में जल रहा है और शेरनी भी अपने बच्चों को छोड़कर अग्नि में कूद रही है। यह देखकर

उसके मन में आया कि संसार में प्रेम का बन्धन लोहे से भी दृढ़ होता है जिसके कारण पशु-पक्षी भी ऐसा करते हैं। अगले ही दिन उसने कुरङ्गक नामक दूत से पिता की रुग्णता का समाचार सुना और एकदम कुछ व्यक्तियों के साथ पिता के पास पहुँचा।

Once Harsha saw in the early morning hours in a dream that a lion was burning in the fire of jungle and the lioness also was jumping into the fire leaving behind her children. Seeing this, he thought that the ties of love in this world are stronger than even iron due to which the birds and the beasts act this way. Next day, he heard about his father's illness through a spy called Kurangaka and immediately reached his father along with some people.

अनुवाद—एकदा हर्षः प्रातःकालस्यादौ स्वप्ने दावाग्नौ दह्यमानम् एकम् सिंहम्, स्वशावकान् विमुच्य पावकं प्रविशन्तीं सिंहीं चापश्यत्। एतद् दृष्ट्वा तस्य मनसि अभवत् यत्संसारे प्रेम्णः बन्धनं लोहादपि दृढतरं भवति यतो हि तिर्यञ्चोऽपि तथा कुर्वन्ति। आगामि-दिने सः कुरङ्गकनाम्नः दूतात् पितुः रुग्णतायाः समाचारम् अशृणोत् युगपदेव च कैश्चित् पुरुषैः सह पितुः सकाशं समागतः।

13

अभिमानी तथा क्रुद्ध स्वभाव वाले राजा को संकट आने पर उसके अपने ही लोग मार डालते हैं। जो राजा भली-भाँति अपना काम नहीं करता, वह शीघ्र ही राज्यच्युत हो जाता है। मिट्टी के ढेले और धूल को भी लोगों की आवश्यकता पड़ती है परन्तु राज्यच्युत राजा की नहीं।

अनुवाद—सङ्कटे समुपस्थिते सति अभिमानिनं क्रुद्धस्वभावं च राजानं तस्य स्वजनाः एव घ्नन्ति। यः भूपः स्वकार्यं सम्यक्-प्रकारेण न करोति स शीघ्रमेव राज्य-भ्रष्टो भवति। लोकाः लोष्ठानां रजसश्चापि महत्त्वम् आकलयन्ति परं न राज्य-भ्रष्टस्य राज्ञः।

14

जब कौरवों और पाण्डवों का युद्ध प्रारम्भ होने वाला था, अर्जुन ने कृष्ण से अपने रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में स्थापित करने के लिए प्रार्थना की। वहाँ से उसने प्रथम एक सेना पर दृष्टि डाली और फिर दूसरी सेना पर। उसने उस दृश्य की सुन्दरता की प्रशंसा की जहाँ सभी योद्धा चमकते हुए शस्त्रों सहित खड़े थे, उनमें उनके पूज्य पितामह आचार्य एवं चाचा, भाई, श्वसुर, मामा, साले इत्यादि अनेक सम्बन्धीजन भी वीरवेश में उपस्थित थे। सहसा अर्जुन को मोह हुआ और फिर उसने भयावह संहार का चित्र खींचा जो शीघ्र ही होने वाला था। उसने कातर भाव कृष्ण से निवेदन किया कि वह युद्ध को बिना लड़े ही छोड़ देना और विश्राम ग्रहण करना चाहता है

किन्तु कृष्ण ने उसे साहस दिया, सन्देह दूर किए और कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर किया। कृष्ण के ये ही उपदेश भगवद्गीता के नाम से संसार में प्रसिद्ध हैं।

When the battle between the Kauravas and Pandavas was just to begin, Arjun requested Krishna to take his chariot in the middle of both the armies. From there, he first cast a glance at one army and thereafter at the other. He praised the beauty of the scene wherein all the warriors stood with glistening arms. Amongst them his relatives including venerable grandfather, preceptor, uncles, brothers, fathers-in-law, maternal uncles, brothers-in-law etc. were also present. Suddenly, Arjuna became nervous and then depoted the horrible disaster that was imminent. He spoke to Krishna in a pitiable mood that he wanted to give up the battle without fighting and take rest. But Krishna encouraged him, removed his doubts and goaded him to the path of duty. These very teachings of Krishna are known as Bhagvadgita all over the world.

अनुवाद—यदा कौरवाणां पाण्डवानां च युद्धं प्रवर्तितुम् आसीत् तदाऽर्जुनः कृष्णाय निजरथम् सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयितुं न्यवेदयत्। ततः स आदौ एकां सेनामपश्यत् तदनु चापरां सेनाम्। स तस्य दृश्यस्य मनोज्ञतां शशंस यत्र सर्वे नानाशस्त्रप्रहरणाः, युद्धविशारदाः च अवस्थिताः। तेषु तस्य पूज्याः पितामहाः, आचार्याः, पितृव्याः, भ्रातरः, श्वसुराः, मातुलाः, श्यालादयश्च नैकाः वीरवेशधराः स्वजना अप्यतिष्ठन्। सहसाऽर्जुनो मोहग्रस्तो जातः, तथा च स सद्योभाविनः भयावहस्य नर-संहारस्य चित्रं चित्रितवान्। कृपयाविष्टः सः कृष्णाय न्यवेदयत् यत् सः युद्धं विना एव रणक्षेत्रात् निवर्तितुं विश्रामं ग्रहीतुं चेच्छति, परं कृष्णः तं सोत्साहम् अकरोत् तस्य सन्देहान् दूरीचकार, कर्त्तव्यमार्गे च तं प्रासारयत्। कृष्णस्यैते उपदेशाः जगति भगवद्गीतायाः नाम्ना स्मर्यन्ते।

15

ज्ञानियों में श्रेष्ठ, मुनियों में पुंगव नारद से वाल्मीकि ने पूछा—'इस समय संसार में गुणवान्, पराक्रमी, धर्मज्ञ, सत्यवक्ता तथा व्रत में दृढ़ पुरुष कौन है? वाल्मीकि ने पुनः कहा कि 'ऐसे' पुरुष को जानने के लिए मैं बहुत उत्सुक हूँ। हे महर्षे! केवल आप ही ऐसे व्यक्ति को जानते हैं।'

Valmiki asked Narada, 'who was the best amongst intellectuals and ascetics, who is virtuous, valourous, righteous, truthful and true to his duty in this world?' Valmiki asked again, 'I am very much anxious to know such a person. O Maharishi! you alone know him.'

अनुवाद—ज्ञानिनामग्रगण्यं मुनि-पुंगवं नारदं वाल्मीकि: अपृच्छत्—'अधुना संसारे गुणवान्, पराक्रमी, धर्मज्ञः, सत्यवक्ता दृढ़व्रतश्च कः पुरुषः अस्ति ?' वाल्मीकिः पुनः अकथयत् यद् 'एतादृशं पुरुषं ज्ञातुमहमतीव उत्सुकोऽस्मि। महर्षे ! भवन्तः एव ईदृशं पुरुषं जानन्ति।'

16

भगवान् बुद्ध सत्य की खोज में निकले। उनको उसे पाने में इतनी देर लग गई कि वे हताश हो गए। उन्होंने घर लौटने का निश्चय कर लिया। परन्तु ज्यों ही वे लौटने लगे, उन्होंने एक गिलहरी को एक झील के किनारे बैठे देखा। वह अपनी पूंछ को बार-बार पानी में डालकर बाहर जमीन पर झड़काती थी। भगवान् बुद्ध बोले, "मेरी छोटी सी गिलहरी, तुम क्या कर रही हो?" गिलहारी ने कहा, "मैं इस झील को खाली कर रही हूँ।" भगवान् बुद्ध ने हँसकर कहा, "यह तो तुम कभी न कर सकोगी" गिलहरी ने कहा, "मैं दृढ़तापूर्वक लगीं रहूँगी।" इससे भगवान् बुद्ध ने एक बड़ा भारी पाठ सीखा।

Lord Buddha went out to seek the truth. He found so much delay in achieving his aim that he became disappointed. But as soon as he was to retrace his steps, he saw a squirrel sitting on the bank of a lake The squirrel repeatedly dipped her tail in the water, pulled it up and shook it forcibly so as to drop the water on the earth. Lord Buddha said, "What are you doing, my dear little squirrel ?" "I am emptying out this lake," replied the squirrel· You will never be able to do it," spoke Lord Buddha laughingly. "I shall go on doing it with a firm determination," said the squirrel. Lord Buddha learned a great lesson from it·

अनुवाद—भगवान् बुद्धः सत्यम् अन्वेष्टुं प्रस्थितः तत्र, तस्य एतावान् कालो व्यतीतः यत् सः हताशो जातः गृहं च प्रतिनिवर्तितुं निश्चयम् अकरोत्। परं यदा एव स प्रतिनिवर्तितुं तत्परः आसीत् तदैव स एकां चमरपुच्छां सरोवरतटे स्थिताम् अपश्यत्। स्वपुच्छम् भूयोभूयः जलमग्नं कृत्वा सा बहिर्भूमौ वेगेन प्राकम्पयत। भगवान् बुद्धोऽवदत्—"अयि मम लघ्वी चमरपुच्छे! त्वं किं करोषि?" चमरपुच्छा अकथयत्—"अहम् एतत्सरोवरं जलविरहितं करोमि।" भगवान् बुद्धो विहस्य अकथयत्—"एतत्तु त्वं कदापि कर्त्तुं न शक्नोषि।" चमरपुच्छा अकथयत्—"अहं दृढतया सततं यत्ननिरता भविष्यामि।" एतस्मात् भगवान् बुद्धः एकं महान्तं पाठम् अशिक्षत्।

17

किसी वन में एक पेड़ के नीचे एक शेर सोता था। उसकी गर्दन के बालों पर

एक चूहा कूदने लगा। सिंह जाग उठा और चूहे को मारना ही चाहता था कि चूहे ने प्रार्थना की, "आप मृगराज हैं, मुझ दीन पर दया कीजिए।" सिंह ने उसे छोड़ दिया। एक समय वही शेर किसी जाल में फँसा। चूहे ने अपने उपकार का बदला चुकाने के लिए जाल काट दिया। सिंह चूहे की प्रशंसा करता हुआ चला गया। सच है किसी के साथ की हुई भलाई निरर्थक नहीं होती।

A lion slept under the tree of a forest. A rat began to jump over the meshes of hair growing on his neck. The lion woke up and was about to kill the rat when the latter entreated, "You are the king of beasts; have mercy on me." The lion released it. Once the same lion got entrapped in a net. The rat cut away the net in order to repay the gratitude towards him. Praising the rat, the lion went away. Truly the good done towards anybody does not go in vain.

अनुवाद—कस्मिंश्चिद् वने एकस्मात् वृक्षात् अधः एकः सिंहो निद्रया परिभूतः आसीत्। तस्य केसराणाम् उपरि कश्चित् मूषकोऽनृत्यत्। सिंहः प्रबुद्धोऽभवत् मूषकं च यदा हन्तुं प्रावर्तत तदा मूषको न्यवेदयत्—"भवान् मृगराजोऽस्ति, मां दीनं प्रति दयां कुरु।" सिंहस्तं मुक्तवान्। एकदा स एव सिंहः कस्मिंश्चिद् जाले आपतितः। मूषकः प्रत्युकारत्वेन जालम् अकृन्तत्। सिंहो मूषकं प्रशंसन् गतः। सत्यमिदं यत् केनापि सह कृत उपकारो निरर्थको न भवति।

18

सत्यवान् की मृत्यु का समय ज्ञात होने पर भी सावित्री अपने निश्चय पर अटल रही। भारतीय नारी का यही आदर्श है कि मन में एक बार जिस पुरुष को वर लिया वही उसका आजीवन पति है। मृत्यु के दिन सावित्री सत्यवान् के साथ वन में गई। जब यमदेव सत्यवान् के प्राण लेकर दक्षिण दिशा को चल दिए, सावित्री भी उनके पीछे चली। यमदेव सावित्री के अटल निश्चय से अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले, "मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। सत्यवान् के प्राणों के सिवाय कोई और वर माँगो।"

Although Savitri knew the time of Satyavan's death, she remained firm in her decision. The ideal of an Indian woman is that the person she once chooses is her life-long husband. On the tragic day Savitri went to the forest with Satyavan. As the death-god started towards the south after taking out the vital breath of Satyavan, Savitri followed him. Yamadeva was much pleased with the resoluteness of Savitri and observed, "I am extremely pleased

with you. Ask for any boon except the vital breath of Satyavan."

अनुवाद—सत्यवतः मृत्यु-कालं जानन्त्यपि सावित्री स्वनिश्चये अचलाऽभवत् । भारतीयनार्यः अयमेव आदर्शः यद् यं पुरुषं सा सकृत् वृणोति स एव तस्याः आजीवनं पतिः । मृत्युदिवसे सावित्री सत्यवता सह वनमगच्छत् । यदा यमदेवः सत्यवतः प्राणान् आदाय दक्षिणदिशां प्रति प्रतस्थे, तदा सावित्र्यपि तम् अन्वगच्छत् । यमदेवः सावित्र्याः दृढनिश्चयेन अतीव प्रासीदत् अवदत् च—"अहं त्वयि परं प्रीतोऽस्मि । सत्यवतः प्राणान् विहाय अन्यं कमपि वरं याचस्व" इति ।

19

छात्रों को अनुशासन के पालन की शिक्षा भी दी जानी चाहिए । जिन छात्रों का जीवन अनुशासनहीन होता है उनका भावी जीवन दुःखपूर्ण होता है क्योंकि वे कर्त्तव्य का पालन नहीं कर पाते । मानव-जीवन में सर्वत्र ही अनुशासन की आवश्यकता होती है । आजकल अनुशासनहीनता छात्रवर्ग के जीवन की एक महती समस्या है । अतः विद्यालयों में प्रविष्ट छात्रों को अपना जीवन अनुशासनयुक्त करना चाहिए और विद्या प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

अनुवाद—अनुशासनस्य शिक्षणमपि छात्रेभ्यः दातव्यम् । येषां छात्राणां जीवनमनुशासनहीनं भवति तेषां भाविजीवनं दुःखपूर्णं जायते यतो न ते कर्तव्यस्य निर्वाहं कर्तुं पारयन्ति । मानवजीवने च सर्वत्रैवानुशासनस्य महत्ता भवति । अनुशासनहीनता अद्यत्वे छात्रवर्गस्य जीवनस्य महती समस्या । अतो विद्यालयेषु प्रविष्टैः छात्रैः स्वीयं जीवनमनुशासनयुक्तं सम्पाद्य विद्याप्राप्त्यै च प्रयत्नः कर्त्तव्यः ।

20

मुनि ने कौए द्वारा ले जाए गए चूहे के बच्चे को देखा । दया करके मुनि ने उसे नीवार के दाने खिलाकर बड़ा किया । एक बार बिल्ली ने उसको खाना चाहा तो मुनि ने उसको भी बिल्ली बना दिया । फिर एक बार कुत्ते से डरते हुए देखकर मुनि ने उसको कुत्ता बना दिया । अन्त में शेर से डरते हुए देखकर मुनि ने उसे शेर बना दिया । शेर बनने पर वह मुनि को ही मारने गया तब मुनि ने कहा—पुनः मूषिको भव । ऐसा कहने पर वह फिर से चूहा बन गया ।

अनुवाद—मुनिः काकेन नीयमानं मूषिकशावकम् अपश्यत् । दयात्मना मुनिना सः नीवार-कणैः संवर्धितः । एकदा विडालः तं खादितुम् ऐच्छत् तदा मुनिः तमपि विडालम् अकरोत् । ततः पुनः एकदा सः कुक्कुरात् भीतम् अवलोक्य तं कुक्कुरं कृतवान् । अन्ततः 'सिंहात् बिभेति' इति दृष्ट्वा मुनिना सः व्याघ्रः कृतः । सिंहो भूत्वा सः मुनिमेव हन्तुं गतः तदा मुनिः उवाच—पुनः मूषिको भव । मुनौ इति उक्तवति सः पुनः मूषिकः जातः ।

21

किसी राजा के चार पुत्र थे जिनमें एक बड़ा दुर्बल था, तथा दूसरे बहुत

शक्तिशाली थे। एक बार राजा ने उस दुर्बल पुत्र को तिरस्कार भाव से देखा। राजा के भाव को जानकर पुत्र ने कहा, "दुर्बल शरीर वाला मनुष्य अच्छा है, पशु-तुल्य बल वाला मल्ल अच्छा नहीं होता। 'एक घोड़ा सौ गधों से अच्छा होता है'—यह हितकारक वचन क्या आपको ज्ञात नहीं।" इसे सुन राजा हँस पड़ा।

अनुवाद—कस्यचित् नृपस्य चत्वारः पुत्राः आसन् येषाम् एकतमः कृशतनुः आसीत्, इतरे च सुशक्तिमन्तः आसन्। अथैकदा स नृपतिः तिरस्कृति-लक्षण-दृशा त श्लक्षण-देहं तनुजम् अपश्यत्। नृप-हेतुं ज्ञात्वा पुत्रोऽवदत्- 'वरं कृश-देहो मानवो, न च पशु तुल्य-बलो मल्लः।' 'वरमेकोऽश्वो न च रासभशतान्यपि' इदं हितवचनं भवतः स्मृतिपथं नायातं किल। इदमाकर्ण्य राजा उपाहसत्।

22

एक महावन में कोई संन्यासी रहता था। एक बार उस देश का राजा उस वन के रास्ते से गुजरा। उस संन्यासी ने न तो उस राजा का पूछताछपूर्वक सत्कार किया तथा न ही उसे आदरपूर्वक देखा। इस कारण उस राजा ने अपने मन्त्री से कहा—मेरी राय में यह संन्यासी साक्षात् पशु है क्योंकि यह शिष्टाचार को भी नहीं जानता। मंत्री ने उसके समीप जाकर कहा कि पास से जाते हुए उस राजा को तुमने आदर-पूर्वक प्रणाम क्यों नहीं किया? तुम मुझे पागल जान पड़ते हो। यह सुनकर उसने उत्तर दिया—जो राजा की कृपा के उत्सुक रहते हैं वे ही राजा की स्तुति करते हैं, उसकी चापलूसी करते हैं और उसके चारों तरफ दुम हिलाते हैं तुम मेरी ओर से राजा को यह सब बता दो।

अनुवाद—एकं महावनं कश्चित् संन्यासी अधिवसति स्म। एकदा तद्देशा-ऽधिपः तद्-वन-मार्गेण गतः। तेन यतिना स भूपतिः भगिति-पूर्वं न सत्कृतः, न ईषद्-अपि साऽदरम् ईक्षितो वा। तस्मात् स नृपः आत्मनः सचिवम् अवदत्— अयं संन्यासी मम मतेन साक्षात् पशुः, यतः सः शिष्टाचाराद् अनभिज्ञः। सचिवः तमुपेत्य उवाच—त्वत्पार्श्वेन गतस्य राज्ञः कथं त्वया सप्रश्रयं प्रणामो न कृतः? अतः त्वं प्रमत्तो मे भासि। इदमाकर्ण्य स प्रत्यवदत्—ये नृप-प्रसादनोत्सुकाः ते एव नृपं स्तुवन्ति, तद्गत-चाटुवचनानि वदन्ति, तं परितः लांगूल-चालनं कुर्वन्ति चेति मद्-वचनात् स राजा वाच्यताम्।

23

निर्धनता से पीड़ित मनुष्य जिस किसी के सामने सहायता के लिए दीन वचन बोलने लगता है किन्तु एक दीन व्यक्ति ने जब एक धनी की मुखमुद्रा देखी तो वह जैसे आया था वैसे ही लौट गया। उसके मित्र ने उससे पूछा कि वह सेठ तुमसे क्या बोला। उसने उत्तर दिया कि 'मेरी इच्छा तो उसके दर्शन से पूरी हो गई क्योंकि कहा जाता है कि विषाद-युक्त मुख वाले लोगों के सामने कभी हाथ नहीं पसारना चाहिए।'

अनुवाद—नैर्धन्येन परितप्तः मनुजः यस्य कस्यापि पुरतः साहाय्यार्थं दीनं वचः ब्रूते, किंतु कश्चिद् दीनजनः यदा कस्यचित् धनिकस्य मुखमुद्रां व्यलोकयत् तदा स

यथाऽऽगतं प्रतिनिवृत्तः। तस्य मित्रेण स संपृष्टः—किं त्वां सः श्रेष्ठी अवदत् इति। स उदतरत् यत् मम कामः तु तस्य दर्शनादेव सफलोऽभवत् यतः उच्यते—'विषण्णवदनानां पुरतो मा कदापि याचध्वम्' इति।

24

एक बार किसी भिखारी ने राजा की उसके व्यभिचार के विषय में निन्दा की। राजा ने उसे कारागार में डाल दिया। उस भिखारी के एक मित्र ने उसे कहा—'तुमने उचित कार्य नहीं किया। राजा की निन्दा करना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है।' तब उस भिखारी ने कहा—'जो सच है वही मैंने कहा है। मुझे मृत्यु से डर नहीं है।'

अनुवाद—एकदा कश्चिद् याचकः नृपं तस्य व्यभिचारम् अन्तरेण अध्यक्षिपत्। स राज्ञा कारागृहे न्यरुध्यत। तस्य याचकस्य एकः सुहृत् तमकथयत्—"अनुपपन्नं कर्म त्वयाऽऽचरितम्। नृपनिन्दा त्वयि न युज्यते।" स भिक्षुः तदा उवाच—"यत्सत्यं तत् मया उदीरितम्। नाऽहं मरणाद् भीतोऽस्मि।"

25

एक बार कोई राजा नौकर के साथ जहाज पर बैठा था। जन्म से अब तक उसने न तो एक बार भी जल-प्रवास किया था, न ही उसे कोई नौका सम्बन्धी ज्ञान था। जहाज पर चढ़े-चढ़े ही उसने मुक्तकण्ठ से रोना शुरू कर दिया। उसका इस रोने से सब लोग डर गए। उस जहाज में बैठे हुए लोगों में एक चतुर डाक्टर था। वह बोला—आप लोगों की आज्ञा से मैं इसे चुप कराता हूँ। उन्होंने कहा यदि आप ऐसा कर देंगे तो आपका हम पर बड़ा उपकार होगा।

अनुवाद—एकदा कश्चित् नृपः दास-द्वितीयः पोतोपविष्टः आसीत्। जन्मनः प्रभृति नैकवारमपि तेन जल-प्रवासः कृतो न वा तस्य किमपि नौर्ज्ञानम् आसीत्। जलयानम् आरूढमात्रः स मुक्तकण्ठं रोदितुम् आरभत। तस्य अनेन आक्रन्दनेन सर्वे त्रस्ताः आसन्। तस्मिन् जलयाने निषण्णानां जनानां मध्ये एकः चतुरः भिषग्वरः आसीत्। सोऽब्रवीत्—भवद्-अनुज्ञया अहं त सान्त्वयामि। तेऽब्रुवन्—यदि भवान् तथा करोति तर्हि अस्मासु महद् अनुग्रहो भवेदिति।

26

कर्त्तव्यपालन जीवन की आधारशिला है। सूर्य निरन्तर प्रकाश देता है। हवा सदा चलती रहती है। सभी लोग अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं। कर्त्तव्य-पालन के द्वारा मनुष्य देश और समाज की उन्नति करता है।

Dutifulness is the foundation stone of life. The sun always gives light. Air is always blowing. All the people fulfil their duties. By doing his duties a man makes progress of his country and society.

अनुवाद—कर्त्तव्यपालनं जीवनस्य आधारशिला। सूर्यः निरन्तरं प्रकाशते।

पवनः सततं वहति। सर्वजनः स्व-स्व-कर्त्तव्यं पालयति। कर्त्तव्यपालनेन मानवः देशं समाजं च उन्नतिपदं नयति।

27

प्राचीनकाल में संस्कृत ही बृहत्तर भारत की राज्यभाषा व लोकभाषा थी। उस समय सब लोग संस्कृत का ही प्रयोग करते थे और उसे ही बोलते थे। ऐसा कोई भारतीय नहीं था जो संस्कृत नहीं जानता था। भारतीय इतिहास के स्वर्णकाल, मौर्य-काल, पुष्यमित्र काल, गुप्त काल तथा भोज के समय में संस्कृत ही राष्ट्रभाषा पद पर सुशोभित थी।

अनुवाद—प्राचीनकाले संस्कृतमेव बृहत्तरभारतस्य राज्यभाषा लोकभाषा चासीत्। तदानीं सर्वे जनाः संस्कृतमेव व्यवहरन्ति वदन्ति च, न तादृशः कोऽपि भारतीयः आसीत्, यः संस्कृतं न जानाति। भारतीयेतिहासस्य स्वर्णकाले, मौर्यकाले, पुष्यमित्र-काले, गुप्तकाले भोजस्य समये च संस्कृतमेव राष्ट्रभाषापदे व्यराजत।

28

भारतीय संस्कृति का मूलभूत तत्त्व वर्णाश्रम व्यवस्था है। इस व्यवस्था के द्वारा मनुष्य अपने-अपने धर्म का पालन करता हुआ पापाचरण से दूर रहकर सब प्रकार से हितकारक कार्य करता हुआ कल्याण को प्राप्त करता है। वर्णाश्रम धर्म के पालन से पारिवारिक समस्याओं का स्वतः ही समाधान हो जाता है।

अनुवाद—वर्णाश्रमव्यवस्था भारतीयसंस्कृतेः मूलभूतं तत्त्वं वर्तते। अनया व्यवस्थया जनः स्वस्वधर्मम् अनुपालयन्, पापाचरणात् विरमन्, सर्वहितावहं कार्यं कुर्वन् कल्याणं लभेत। एवं वर्णाश्रम-धर्मपालनेन पारिवारिकसमस्यानां स्वत एव समाधानं सञ्जायते।

29

प्राचीन काल में राजा शिवि ने कबूतर को बचाने के लिए अपना मांस भी बाज को दे दिया था। महर्षि दधीचि ने भी अपनी हड्डियाँ देवताओं को दे दी थीं। अधिक क्या, अचेतन पदार्थों में भी परोपकार की भावना दिखाई देती है। नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीतीं। वृक्ष फल स्वयं नहीं खाते। इसी तरह बादल भी खेती के अन्न का सेवन नहीं करते। सच है, सज्जनों की समृद्धियाँ दूसरों की भलाई के लिए होती हैं।

अनुवाद—पुरा राजा शिविः कपोतस्य रक्षार्थं स्वमांसमपि श्येनाय दत्त-वान्। महर्षिः दधीचिः अपि स्वास्थीनि देवेभ्यः प्रादात्। किं बहुना, अचेतनेषु पदार्थेषु अपि परोपकारभावना दृश्यते। नद्यः स्वयमेव जलं न पिबन्ति। वृक्षाः स्वयं फलानि न खादन्ति। एवं वारिदाः सस्यं नैव अदन्ति। सत्यमेव इदं वर्तते यत् सतां विभूतयः परोपकाराय भवन्ति।

30

इस संसार में उद्योग के बल पर ही अनेक व्यक्ति महापुरुष बने हैं, भारतीय वीरों ने इसी आधार पर स्वतन्त्रता प्राप्त की है तथा इसी का आश्रय लेकर मनुष्य ने चन्द्रमा के सिर पर संचार किया है। उद्योग के द्वारा दरिद्र व्यक्ति करोड़पति हो गए हैं तथा मन्दबुद्धि व्यक्तियों ने पाणिनि के समान निपुणता प्राप्त की है।

अनुवाद—अस्मिन् संसारे उद्योग-बलेन एव बहवः जनाः महापुरुषाः संजाताः, अमुम् एव आधृत्य भारतीयैः वीरैः स्वतन्त्रता अधिगता, एनमाश्रित्य मानवेन शशिनः शिरसि संचारः कृतः। उद्योगद्वारा दरिद्राः जनाः कोट्यधिपतयः अभूवन् मन्दधियः च जनाः पाणिनिवत् निपुणतां लब्धवन्तः।

31

(*i*) जब स्वाधीनता की इच्छा मन्त्री के हृदय में प्रवेश करती है तो वह राजा को स्वयं ही राज्य-त्याग के लिए बाध्य कर देता है।

(*ii*) उसने परिवार का कार्यभार अपने ज्येष्ठ पुत्र को सौंपा और फिर अपने मित्र तथा सम्बन्धियों से विदा लेकर वन के लिए प्रस्थान किया।

(*iii*) यदि मनुष्य पशुओं के कर्मों का अनुकरण करता है तो मनुष्य और पशु में अन्तर ही क्या हुआ ?

(*iv*) सज्जन से मित्रता के समान इस विश्व में कोई अच्छी वस्तु नहीं है।

अनुवाद—(*i*) यदि स्वाधीनतयाः इच्छा मन्त्रिणः हृदयं प्रविशति तदा स नृपं स्वयमेव राज्यं त्यक्तुं बाध्यं करोति।

(*ii*) स परिवारस्य कार्यभारं स्वज्येष्ठपुत्राय समर्पयत् ततः च स्वमित्राणि बान्धवांश्च आमन्त्र्य वनाय प्रस्थानम् अकरोत्।

(*iii*) यदि नरः पशूनां कर्माणि अनुकरोति तदा नरे पशो च को भेदः ?

(*iv*) सज्जनस्य मैत्रीतुल्यम् अस्मिन् जगति न किमपि शोभनं वस्तु अस्ति।

32

राजा भोज के दर्शन के लिए वह कलिंग देश में आकर एक महीने तक वहाँ रहा पर उसे राजा के दर्शन न हुए। उसका मार्ग का भोजन भी समाप्त हो गया। एक बार राजा शिकार की इच्छा से बाहर निकला। तब कवि ने राजा को देखकर कहा—श्री भोजराज को देखते ही उसी क्षण शत्रु का शस्त्र, कवि का कष्ट तथा मृगनयनी की करधनी भूमि पर गिर पड़ती है। इसे सुनकर राजा ने कवि को एक लाख रुपए दिए। जब राजा शिकार में मस्त थे तब शिकारी के पुत्र ने एक गीत गाया। गीत की मधुरता से प्रसन्न होकर राजा ने गायक को पाँच लाख रुपए दिए।

अनुवाद—राज्ञः भोजस्य दर्शनाय सः कलिङ्गदेशम् उपेत्य मासं यावत् तत्र न्यवसत्, परं सः राजानं नापश्यत्। तस्य पाथेयम् अपि परिसमाप्तम्। एकदा नृपः

मृगयाभावेन बहिर्निर्गतः। तदा कविः राजानं दृष्ट्वा अकथयत्—श्री भोजराजं पश्यन्नेव तत्क्षणं रिपोः शस्त्रं, कवेः कष्टं, मृगीदृशां नीवीबन्धः च भूमौ पतन्ति। तच्छ्रुत्वा राजा कवि लक्षं ददौ। यदा राजा मृगयासक्तः आसीत् तदा कश्चित् व्याध-सुतः एकं गीतम् अगायत्। गीतस्य माधुर्येण प्रसन्नो भूत्वा राजा गायकाय पञ्चलक्षं ददौ।

33

अब जबकि पुल बन चुका, राम तथा उनके भाई के नेतृत्व में बन्दरों की पूरी सेना लंका में प्रवेश कर गई। तत्पश्चात् कई महीनों तक भयानक युद्ध हुआ। अन्त में राक्षसराज रावण को जीत लिया। वह मारा गया तथा सोने से बनी उसकी पूरी राजधानी अधिकार में कर ली गई।

अनुवाद—अधुना यदा सेतुबन्धोऽभवत्, रामस्य, तस्य भ्रातृणां च नेतृत्वे वानराणां समस्तसेना लंकां प्राविशत्। तत्पश्चात् बहुमासं यावत् भयंकरं युद्धम् अभवत्। अन्ते राक्षसराजः रावणः पराजितः। सः मृतः तथा च स्वर्णनिर्मिता तस्य अखिला राजधानी वशम् अधिगता।

34

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे अर्जुन, यह नश्वर शरीर है किन्तु आत्मा अमर है। जैसे पुराने वस्त्रों को छोड़कर मनुष्य नया वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीर्ण शरीर को त्याग कर यह आत्मा नया शरीर धारण करती है, इसलिए मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। श्रीकृष्ण के उपदेश से अर्जुन का मोह दूर हो गया।

अनुवाद—श्रीकृष्णः अर्जुनम् उवाच—हे अर्जुन, इदं शरीरं नश्वरम्, आत्मा च अयम् अमरः अस्ति। यथा जीर्णानि वासांसि विहाय नरः नवानि वस्त्राणि धारयति, तथैव जीर्णं देहं त्यक्त्वा अयम् आत्मा नवं देहं धारयति, अतः मृत्योः न भेतव्यम्। श्रीकृष्णस्य उपदेशेन अर्जुनस्य मोहः नष्टो जातः।

35

रामायण एक आदर्श धार्मिक ग्रन्थ है। इसमें श्रीराम के जीवन की कहानी है। पिता के आज्ञा-पालन के लिए राम ने चौदह वर्षों तक वन में निवास किया। राम के साथ उनकी धर्मपत्नी सीता भी वन में गई। वहाँ रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। राम ने वानरों की सहायता से रावण को मार कर सीता को प्राप्त किया।

अनुवाद—रामायणम् एकः आदर्शः धार्मिकः ग्रन्थोऽस्ति। अस्मिन् श्रीरामस्य जीवनस्य कथा अस्ति। पितुः आज्ञापालनार्थं रामः चतुर्दश वर्षाणि वनेषु न्यवसत्। रामेण सह तस्य धर्मपत्नी सीताऽपि वनम् अगच्छत्। तत्र रावणः सीताम् अपाहरत्। रामः वानराणां साहाय्येन रावणं हत्वा सीताम् प्राप्नोत्।

36

संस्कृत साहित्य के गद्य-लेखकों में महाकवि बाणभट्ट सर्वश्रेष्ठ हैं हर्षचरित

व कादम्बरी ये दोनों उनके अनुपम ग्रन्थ हैं। उनकी शैली में भाव और भाषा का सुन्दर समन्वय है। विषयानुकूल पदावली में बाण सिद्धहस्त हैं। भाषा और शब्दकोष पर उनका असाधारण अधिकार है।

अनुवाद—संस्कृतसाहित्यस्य गद्यलेखकेषु महाकविः बाणभट्टः सर्वश्रेष्ठः अस्ति। हर्षचरितम् कादम्बरी च द्वयमेतत् तस्य अनुपमः ग्रंथः अस्ति। तस्य शैल्यां भावानां भाषायाश्च रम्यं समन्वयम् अस्ति। विषयानुकूलपदचनायां बाणः सिद्धहस्तोऽस्ति। भाषायां शब्दकोषे च तस्य असामान्यः अधिकारः तिष्ठति।

37

पाण्डु की स्त्री पृथा अथवा कुन्ती के नाम से प्रसिद्ध थी। उसके पांच पुत्र थे—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। सभी राजकुमारों में ज्येष्ठ युधिष्ठिर उत्तम राजा के गुणों से युक्त था। यह देखकर भीम प्रसन्न था। उसके पिता महाराज पाण्डु की वन में अकस्मात् मृत्यु हो गई। धृतराष्ट्र ने घोषित किया कि आज से राजकुमार युधिष्ठिर दोनों राज्यों के उत्तराधिकारी होंगे।

अनुवाद—पाण्डोः पत्नी पृथाभिधानेन कुन्तीनाम्ना वा प्रख्याताऽभवत्। तस्य पञ्च पुत्राः आसन्—युधिष्ठिरः, भीमः, अर्जुनः, नकुलः, सहदेवश्च। सर्वेषु राजपुत्रेषु ज्येष्ठः युधिष्ठिरः उत्तमराजगुणैः युक्तः आसीत्। इदं दृष्ट्वा भीमः प्रसन्नः आसीत्। तस्य पिता महाराजः पाण्डोः वने अकस्मात् मरणं जातम्। धृतराष्ट्रः घुष्टवान्—अद्य यावत् राजकुमारः युधिष्ठिरः द्वयोः राज्योः उत्तराधिकारी भविष्यति।

38

हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। इसकी उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत है। इसकी दक्षिण दिशा में समुद्र का किनारा है। इसमें गंगा और यमुना नदियाँ बहती हैं जिनका जल अमृत के तुल्य है। हमें अपने देश का अच्छा नागरिक होना चाहिए।

अनुवाद—अस्माकं देशस्य नाम भारतवर्षम् अस्ति। अस्य उत्तरी सीमा हिमालयः पर्वतः अस्ति। अस्य दक्षिणदिशायां समुद्रतटम् अस्ति। अस्मिन् गङ्गा च यमुना च वहतः ययोः जलम् अमृततुल्यम् अस्ति। अस्माभिःस्वकीय उत्तमैः नागरिकैः देशस्य भवितव्यम्।

39

वाराणसी भारत का बहुत पुराना नगर है। यह न केवल एक विद्यापीठ है, अपितु एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान भी है। प्रतिवर्ष हजारों यात्री इस नगर में आते हैं। यह नगर विदेशी पर्यटकों को भी अपनी तरफ आकर्षित करता है।

अनुवाद—वाराणसी भारतस्य अतिपुरातनं नगरम् अस्ति। इदं न केवलं एकः विद्यापीठः अस्ति, अपितु एकं प्रसिद्धं तीर्थस्थानम् अप्यस्ति। प्रतिवर्षं सहस्रशः यात्रिणः अस्मिन् नगरे आयान्ति। इदं नगरं वैदेशिकान् पर्यटकान् अपि निजं प्रति आकर्षति।

40

इस नाटक ने मेरे सामने यह आदर्श रखा कि सत्य का अनुसरण करना चाहिए। मैं हरिश्चन्द्र की कहानी में पूर्णतया विश्वास करता था। हरिश्चन्द्र और श्रवण मेरे लिए जीवित सत्य हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि मैं पुनः उन नाटकों को देखूं तो पूर्व की भान्ति प्रभावित हो जाऊँगा।

अनुवाद—इदं नाटकं ममाग्रे इमम् आदर्शम् अस्थापयत् यत्सत्यम् अनुसर्तव्यम्। अहं हरिश्चन्द्रस्य आख्याने पूर्णरूपेण विश्वसिमि स्म। हरिश्चन्द्रः श्रवणश्च मदर्थे जीवितं सत्यम् स्तः। मम इयं दृढा धारणा। अस्ति यत् अहं चेत्पुनः ते नाटके द्रक्ष्यामि तदा यथापूर्वं प्रभावितो भविष्यामि।

41

शिमला में मैं एक सुन्दर बँगले में रहता था। वहाँ पर सुन्दर-सुन्दर फूलों से भरा एक बाग था। लेकिन हमारी एक बहुत बड़ी समस्या थी। बाग के बाहर से बन्दरों का रास्ता था जहाँ से बन्दर प्रतिदिन दो बार जाते थे—प्रातःकाल घाटी में उतरते समय और सायंकाल अपने घरों को लौटते समय। जब भी वे वहाँ से गुजरते थे वे फूलों को नष्ट कर जाते थे।

अनुवाद—शिमलानगरे अहं एकस्मिन् रम्ये भवने निवासम् अकरवम्। तत्र रमणीयैः कुसुमैः आपूर्णम् एकम् उद्यानम् आसीत्। परम् अस्माकं सम्मुखम् एका अति-विशाला समस्या आसीत्। उद्यानाद् बहिः वानराणां मार्गम् आसीत् यतः वानराः प्रति दिनं द्विवारम्—प्रातःकाले घाट्याम् अवरोहनसमये, सायंकाले निजगृहाणि प्रत्यागमनकाले गच्छन्ति स्म। यदैव ते ततः यान्ति स्म ते पुष्पाणि विनाशयन्ति स्म।

42

राम एक आदर्श पुरुष थे। पिता की आज्ञा के पालन के लिए उन्होंने चौदह वर्षों तक वनों में निवास किया। उनके साथ उनकी पत्नी सीता और लक्ष्मण भी वन गए। वन में रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। राम ने रावण को मारकर सीता को प्राप्त किया तथा लङ्का का राज्य विभीषण को दे दिया। राम के जीवन की कथा रामायण में है। रामायण एक आदर्श धार्मिक ग्रंथ है।

अनुवाद—रामः एकः आदर्शः पुरुषः आसीत्। पितुः आदेशं पालनार्थं सः चतुर्दश वर्षाणि वनेषु न्यवसत्। तेन सह तस्य पत्नी सीता लक्ष्मणश्चापि वनम् जग्मतुः। वने रावणः सीताम् अपजहार। रामः रावणं हत्वा सीतां प्राप्नोत् लङ्कायाश्च राज्यं विभीषणाय प्रायच्छत्। रामस्य जीवनचरितं रामायणे निबद्धम् अस्ति। रामायणम् एकः आदर्शः धार्मिकः ग्रंथः अस्ति।

43

दिल्ली भारत की राजधानी है। आजकल यहाँ नवम एशियाड खेल हो रहे हैं। विभिन्न देशों से खिलाड़ी यहाँ आए हैं। यह हमारे देश की उन्नति का सूचक है।

अनुवाद—दिल्ली भारतस्य राजधानी अस्ति। अद्यत्वे अत्र नवम-एशियाड-क्रीडाः भवन्ति। विभिन्नदेशानां क्रीडकाः अत्र आगताः सन्ति। इदम् अस्माकं देशस्य उन्नतेः सूचकम् अस्ति।

44

महाकवि कालिदास संस्कृत कवियों में सर्वोत्कृष्ट हैं। इन्होंने सात ग्रंथों की रचना की। इनका अभिज्ञानशाकुन्तल संस्कृत नाटकों में सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसमें राजा दुष्यन्त का शकुन्तला के साथ प्रेम वर्णित है। कालिदास के ग्रंथों का संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उज्जयिनी में प्रतिवर्ष कालिदास-समारोह आयोजित होता है।

अनुवाद—महाकविः कालिदासः संस्कृतकविषु सर्वोत्कृष्टः अस्ति। तेन सप्त ग्रंथाः रचिताः। तेन रचितम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् संस्कृतनाटकेषु सर्वाधिकं लोकप्रियम् अस्ति। कालिदासस्य ग्रंथाः संसारस्य अनेकभाषासु अनूदिताः सन्ति। उज्जयिन्यां प्रतिवर्षं कालिदाससमारोहः आयोज्यते।

45

भारतवर्ष में बहुत-सी नदियाँ हैं। गङ्गा सब नदियों में श्रेष्ठ है। गङ्गास्नान करने के लिए बहुत दूर से लोग आते हैं। गङ्गा जल की बड़ी महिमा है। इससे अनेक रोग दूर हो जाते हैं। इसीलिए गङ्गा को देवता माना जाता है।

अनुवाद—भारतवर्षे नैकाः नद्यः सन्ति। गङ्गा सर्वासु नदीषु श्रेष्ठा अभिवर्तते। गङ्गास्नानाय दूरात् जनाः आगच्छन्ति। गङ्गाजलस्य अतीव महिमा अस्ति। अनेन बहवः रोगाः अपयान्ति। अनेनैव गङ्गा देवता मन्यते।

46

किसी जंगल में एक साधु रहता था। वह प्रतिदिन भिक्षा के लिए नगर जाता था। एक दिन वह भिक्षा के लिए एक घर गया जहाँ एक स्त्री रहती थी। क्रोधवश उसने विष मिलाकर एक रोटी उस साधु को दी। वह उसे घर लेकर चला गया। दूसरे दिन उस स्त्री का बेटा किसी नगर से वापिस आ रहा था। वह भूखा था, अतएव साधु की कुटी पर जाकर उसने भोजन माँगा। साधु ने उसे वही रोटी दे दी। खाने के बाद वह मर गया। जो जैसा करता है, वह वैसा पाता है।

अनुवाद—कस्मिश्चिद् वने एकः साधुः प्रतिवसति स्म। सः प्रतिदिनं भिक्षार्थं नगरं गच्छति स्म। एकदा सः भिक्षार्थं एकं गृहम् अगच्छत् यत्र एका स्त्री अवसत्। क्रोधात् सा विषाक्ताम् एकां रोटिकां तस्मै साधवे अयच्छत्। सः नीत्वा अगच्छत्। अन्यस्मिन् दिने तस्याः स्त्रियाः पुत्रः कस्माच्चित् नगरात् प्रत्यागच्छतिस्म। सः बुभुक्षितः आसीत्। अतः एव साधोः कुटीरं गत्वा सः भोजनम् अयाचत्। साधुः तस्मै तामेव रोटिकां प्रायच्छत्। भक्षणोपरान्तं सः मृतः। यः यथा करोति सः तथैव फलम् आप्नोति।

अभ्यास
(परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न)

प्रश्न—निम्नलिखिताः गद्यांशाः संस्कृतभाषयाऽनूद्यन्ताम् :

निम्नलिखित गद्यांशों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

Translate the following passages into Sanskrit :

(क) सत्यवान् की मृत्यु......कोई वर माँगो। (अभ्यास क्रम सं० 8)
(ख) हे सीते ! मनुष्यों के लिए......सनातन धर्म है। (अभ्यास क्रम सं० 1)
(ग) जब कौरवों और पाण्डवों......प्रसिद्ध है। (अभ्यास क्र० 4)
(घ) एक बार हर्ष ने......पिता के पास पहुँचा। (अभ्यास क्र० 2)
(ङ) किसी वन में एक पेड़......निरर्थक नहीं जाती। (अभ्यास क्र० 7)
(च) अभिमानी तथा क्रुद्ध......राजा की नहीं। (अभ्यास क्र० 3)
(छ) कर्त्तव्य-पालन......उन्नति करता है। (अभ्यास क्र० 16)
(ज) भगवान् बुद्ध सत्य की......पाठ सीखा। (अभ्यास क्र० 6)
(झ) ज्ञानियों में श्रेष्ठ......जानते हैं। (अभ्यास क्र० 5)
(ञ) अब जबकि पुल बन चुका......अधिकार में कर ली।
(ट) श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा......मोह दूर हो गया।
(ठ) रामायण एक आदर्श......सीता को प्राप्त किया।
(ड) संस्कृत साहित्य के गद्य लेखकों में......अधिकार है।
(ढ) पाण्डु की स्त्री......राज्यों के उत्तराधिकारी होंगे।
(ण) हमारे देश का नाम भारतवर्ष है......होना चाहिए।
(त) शिमला में मैं एक सुन्दर......रहता था।
(थ) राम एक आदर्श पुरुष थे......ग्रन्थ है।
(द) दिल्ली भारत की राजधानी है......सूचक है।
(ध) महाकवि कालिदास संस्कृत कवियों में......होता है।
(न) भारतवर्ष में बहुत-सी नदियाँ हैं......माना जाता है।
(प) किसी जंगल में एक साधु......वैसा पाता है।
(फ) बालक का मन कच्ची मिट्टी के समान होता है। कुम्हार अपने चाक के सहारे कच्ची मिट्टी को मनोवांछित रूप देता है। इसी प्रकार शिक्षक शिक्षा के द्वारा बालक के भविष्य का निर्माण करता है। बालक के मन में यह भावना भर देनी चाहिए कि मैं महान् हूँ और अवसर प्राप्त होने पर अपनी शक्तियों का पूरा-पूरा विकास कर सकता हूँ।

—०—

6

पत्र-लेखन
(LETTER WRITING)

विषय-निरूपण के साथ-साथ निजी भावों के प्रदर्शन के लिए पत्र-लेखन एक सशक्त माध्यम है। संस्कृत में पत्र-लेखन की अति प्राचीन परम्परा है। प्राचीन शैली के पत्र आधुनिक शैली के पत्रों से सर्वथा भिन्न होते थे। प्राचीन शैली के पत्रों का प्रारम्भ प्रायः 'स्वस्ति' शब्द से होता था। तदुपरान्त जहाँ से पत्र लिखा गया है, जिसने पत्र लिखा है, जहाँ पर पत्र भेजना है तथा जिसको पत्र लिखना है—इन सब बातों का एक ही वाक्य में उल्लेख रहता था। जैसे—कुरुक्षेत्र के देवेन्द्रमोहन दिल्ली निवासी अपने पुत्र सुरेन्द्रमोहन को पत्र लिखेंगे तो उसका प्रारम्भ इस प्रकार रहेगा—

स्वस्ति। कुरुक्षेत्रात् दिल्लीनगरनिवासिनं चिरंजीविनम् आयुष्मन्तं सुरेन्द्रमोहनं देवेन्द्रमोहनः सस्नेहमाशीःसहस्रपूर्वकं वार्तयति यथा—

तदुपरान्त पत्र का विषयकथन होता था। अन्त में इति शब्द से पत्र को समाप्त कर दिया जाता था।

किन्तु आजकल हिन्दी व अंग्रेजी के पत्रों की भाँति ही संस्कृत के पत्रों को लिखा जाने लगा है। इसमें निम्नलिखित बातों का व्यवहार होता है—

(1) सर्वप्रथम कागज के दाहिनी ओर स्थान तथा उसके नीचे तिथि का निर्देश होता है। जैसे—चण्डीगढ़ात्, रामपुरतः, लक्ष्मणपुरतः, हरिद्वारात्।

चण्डीगढ़ात्,	रामपुरतः,	लक्ष्मणपुरतः,	हरिद्वारात्।
20-1-85	18-2-85	1-3-85	5-2-85

अब तो हिन्दी के समान ही अपना पूर्ण पता इस स्थान पर लिखने की परम्परा संस्कृत में भी हो गई है। जैसे—

113, नवयुवकछात्रावास,
हिन्दूकॉलेज,
सोनीपतनगरात्।
5-1-1985

इत्यादि।

(2) तदनन्तर पत्र के बाईं ओर जिसको पत्र लिखा जाता है उसे सम्बोधन करते हुए नमस्ते, नमस्कारः, प्रणामः, स्वस्ति आदि लिखे जाते हैं। जैसे—

पुत्र के लिए—
प्रिय पुत्र सुरेश !

शतं शुभानि भूयांसु:
अथवा सस्नेहमाशीः।

छोटे भाई को—
प्रियभ्रातृवर मानो !
सस्नेहं नमः ।

मित्र को—
प्रिय मित्र रमेश !
अथवा प्रिय सुहृद् रमेश !
सस्नेहं नमस्ते ।

पूज्य पिता को—
श्रीमत्सु सत्र भवतां पितृवर्याणां
चरणारविन्देषु सादरं प्रणामाः ।
पूज्यपादपितः !
सादरं भूयोभूयो नमोनमः ।

प्रधानाचार्य आदि का पूरा परिचय लिखकर नीचे 'मान्यवर !' सविनयं निवेद्यते····से प्रार्थना-पत्र प्रारम्भ कर दिया जाता है। व्यावहारिक (व्यापारी) पत्रों में 'श्रीमन् !' से सम्बोधन करके पत्र का विषय प्रारम्भ कर दिया जाता है। विषयकथन के बाद अन्त में भवदीयः, भावत्कः आदि शब्दों के साथ अपना नाम लिखना होता है। जैसे—

पिता पुत्र के लिए—त्वदीयः शुभचिन्तकः
पुत्र पिता के लिए—भवदाज्ञाकारी सूनुः
मित्र मित्र के लिए—भवद्बन्धुः, स्नेहांकितः
भगिनी भाई के लिए—भवदीया स्नेहाधीना भगिनी ।
प्रधानाचार्य आदि के लिए—श्रीमतामाज्ञाकारी शिष्यः। श्रीमतां वशंवदः।
प्रकाशक आदि के लिए—भवदीयः या भवदीया ।

व्यावहारिक पत्रों में पत्र की समाप्ति पर बाईं ओर तिथि लिख दी जाती है।

पत्र में प्रायः पचास शब्द होने चाहियें। आठ-दस वाक्यों में विषयपूर्ण हो जाना चाहिए ।

1. (विषयः—छात्रावासजीवनविषये पुत्रस्य पितरं प्रति पत्रम्)

स्थाननाम·········।
तिथिः·········

पूजनीयपाद पितः !
सादरं भूयोभूयो नमोनमः ।

अहं गृहात् प्रस्थाय देहलीमध्ये यानात् अवतीर्य रिक्शायानेन छात्रावासं सुखेन प्राप्तः । छात्रावासस्य पर्यवेक्षकः स्वकक्षे एव आसीत् अतस्तस्य निर्देशेन मया स्वावासकक्षं लब्धम्। तत्र सर्वाणि वस्तूनि यथावत् मन्दं मन्दं निवेश्य अहं विगत-चिन्तो जातः। अस्मिन् कक्षे वायोः प्रकाशस्य च आगमाय वातायनानि तिष्ठन्ति ।

Saurabh Rastogi

मया भित्तिषु महापुरुषाणां चित्राणि प्रतिलम्भ्य कक्षं शोभान्वितम् कृतम्। अत्र पानाशनयोः सुप्रबन्धः। प्रांगणे वयस्यैः समं यदाकदाचित् स्थित्वा गोष्ठीसुखम् अनुभवामि। वयं कदाचित् गेयपदानि गायन्तः, शिष्ट-हास्यपरमभिनयं कुर्वन्तः, अन्योन्यं सुखयन्तः सुखेन कालम् अतिवाहयामः। तत्रभवता मम मनाग् अपि चिन्ता न कार्या।

मातृपादयोः प्रणामः, भ्रातृणां भगिनीनां च कृते सस्नेहसंश्लेषः। अस्तु।

भवदीयो विनतो बालः,

बलवीरः।

2. (विषयः—स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सववर्णनपरं पत्रं मित्रस्य मित्रं प्रति)

छात्रावासः.........।

तिथिः.........

प्रियमित्र देव !

सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। तव पत्रं लब्धम् आसीत्। परं निजविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवे अहं रममाण आसम्। इदानीं तत् सम्पन्नम्। तस्य च विवरणम् तव प्रसादाय लिखामि। तस्मिन् अवसरे वधूरिव अस्माकं विद्यालयः भूषितः। इतस्ततः मार्गेषु विवर्णा ध्वजा एव ध्वजाः दोधूयन्ते स्म। सर्वत्र चाकचक्यम् आसीत्। अध्यक्ष-महोदयस्य तुमुलैः शंखध्वनिभिः, विगुलवैण्डवाद्यैश्च स्वागतम् अभूत्। स च मालाभिः भृतः। वार्षिकोत्सवावसरे क्रियमाणे हवने तेन सादरं आहुतिः अर्पिता। तस्मिन् मण्डपं प्राप्ते सर्वे सभ्याः प्रत्युत्थिताः। वेदि-स्थानात् बालैः सस्वरं समवेता एका स्वागत-गीतिका गीता। वीररसाचिता एका कविता एकया कन्यया पठिता। डिण्डिमशब्देन समम् एकम् आकर्षकं नृत्यं जातम्। हास्यरसोद्भावकम् एकं रूपकम् अभिनीतं जातम्। प्राचार्येण विद्यालयविवरणं प्रस्तुतम्। अध्यक्षमहोदयेन कलासु प्रवीणेभ्यः क्रीडासु च सुस्थितिवद्भ्यो बालेभ्यः विविधानि पारितोषिकानि वितीर्णानि, पञ्चसहस्रमितं च धनं दानरूपेण दत्तम्। विद्यालयप्रधानेन तं प्रति निजं कार्तज्ञम् प्रकटितम्। ततश्च समुचितजलपानोर्ध्वं सर्वं सुसम्पन्नं जातम्। लोकश्च प्रसन्नः स्वां स्वां दिशाम् अभ्ययात्। अस्तु।

गृहे सर्वेभ्यो मम प्रणामाः।

सस्नेहो भवन्मित्रम्,

धर्मपालः।

3. (विषय--पुस्तकप्रेषणार्थं पुस्तकप्रकाशकं प्रति पत्रम्)

26, गीता-छात्रावासः,
पटेलमार्गः,
नवदिल्ली।
तिथिः.........

श्री लक्ष्मी पब्लिकेशंज,
बारादरी, देहली।

श्रीमन्!

नमस्कारः।

सेवायाम् इदं निवेदनं यत् अहम् अधस्तनानि कानिचित् पुस्तकानि क्रेतुं इच्छामि यानि मन्ये भवत्सकाशात् सुलभानि। कृपया भवता तानि यथानिर्देशं मम सविधे अचिरात् प्रदेयशुल्कपारशलद्वारेण (वी० पी० पी०) प्रेषणीयानि।

पुस्तकनाम	लेखकनाम	प्रति
1. संस्कृत-व्याकरणम्	डा० परमानन्दगुप्तः	एका
2. भोजप्रबन्धः	डा० परमानन्दगुप्तः	एका
3. अनुवाद-रचना	प्रा० वेदप्रकाश वेदालंकारः	एका
4. अलंकारसर्वस्वम्	प्रा० वेदप्रकाशः	एका

पूर्वतः सधन्यवादम्,

भवदीयो विश्वस्तः,
धर्मप्रकाशः।

4. (विषयः—प्राचार्यमहोदयाय अनुपस्थितिवशात् क्षमायाचनापत्रम्)

श्री प्राचार्यमहोदयः,
गीता उच्चतर विद्यालयः,
कुरुक्षेत्रम्।

श्रीमन्!

अहं गते सप्ताहे पञ्चमतिथौ गृहस्य अनिवार्यकार्यवशात् विद्यालयात् अवकाशम् अनादाय अनुपस्थित आसम्। तेनाऽहं द्विरूप्यकशुल्कदण्डेन दण्डितोऽस्मि। अहं कदापि विनाऽवकाशम् अनुपस्थितो न तिष्ठामि। अयं प्रथम एवावसरः। तस्मात् कृपया तस्मिन् दिने मम अनुपस्थितिः भवता क्षन्तव्या इति निवेदनम्।

भवदीयः शिष्यः,
वेदपालः,
अष्टमी कक्षा,
(क्रमांकः—20)।

5. (विषयः—"राष्ट्रीयं प्रेम जीवन-सर्वस्वम्" इत्यधिकृत्य विदेशगतं मित्रं प्रति पत्रम्)

दयानन्दद्वारः,

अजमेर।

तिथिः.........

प्रिय मित्र रमाकान्त !

सप्रेम नमोनमः।

तव कुशलपत्रं प्राप्तम्। धन्यवादः।

तत्र अमेरिका इति नाम्नि विदेशे स्थितत्वाऽपि त्वया अन्यैः भारतीयैः सह संघटनां कृत्वा समयात् समयं गोष्ठीक्रियते इति वृत्तं अति सुखावहम्। मित्र! यत्र देशे जन्म गृहीतम्, यत्र शैशवं यापितम्, यत्र धूलौ बाल्यसुलभाः लीलाः कृताः यत्र तारुण्यं प्राप्तम्, यत्र विद्याज्ञानकणैः आत्मा संवर्धितः तया स्वदेशभूम्या सह अनुरागः सत्यं जीवनसर्वस्वम्। तस्याः कणैरनुरागोपचयः स्वाभाविकः। तस्या राष्ट्रियैः सह अव्याजं प्रेम स्वतः सिद्धम्। यथा यथा च नरः स्वदेशात् दूरतरं याति तथा तथा तस्य तद्देशीयैः सह प्रच्छन्नरागः स्फुटतरो भवति। रागात् मनुष्यः अवशो जायते। तद् युक्तमेव युष्माकं तत्र समितिं कृत्वा उपस्थानम्। निजराष्ट्रस्य निष्ठापूर्वकं गुणगानञ्च। अयं राग एव जीवनसर्वस्वम्। अनेन कियान् सन्तोषो जायते इति को नाम वर्णयेत्? अस्तु, युष्माकं शुभम् इच्छन्।

भवदीयं प्रियमित्रं,

अनुरागः।

6. (विषयः—पितृनिधनात् मित्रं प्रति मित्रस्य पत्रम्)

छात्रावासः।

तिथि.........

प्रिय मित्र सुरेश !

सप्रेम नमोनमः।

मान्यस्य तव पितृपादस्य निधनविषयकं पत्रम् उपगतम्। तत् पठित्वा यो मयि वज्रपात इवाऽभूत् तस्य का कथा! न जाने त्वया कथमिव हृदये पाषाणं निधाय तद् वृत्तं स्वहस्तेन अंकितं स्यात्। मित्र! सत्यं, अपूर्वेयं घटना। इदानीमपि स ते पितृपादः मम चक्षुषोरग्रे तिष्ठतीव, चलतीव, वदतीव, वात्सल्यञ्च प्रदर्शयतीव इति कथमहं "स स्वर्गतः" इति विश्वासं कुर्याम्। परं "सत्यं गतः" इति मत्वा निर्दयो विप्रयोगः सर्वथा सोढव्य एव। का गतिः! भवन्मातुः साम्प्रतं या दशा स्यात् तां को नाम वर्णयितुं पारयेत्! शिशूनां क्रन्दनं कस्य न हृदयं क्रकच इव विदारयेत्! निर्दयं हि दैवम्। परम् अत्र का गतिः! आत्मानमपि अन्याश्चापि समाश्वासय। यानि पितृपादस्य अनवद्यानि कर्माणि तानि अनुसर, कर्त्तव्यमुखश्च तिष्ठ। प्रलापैः रोदनैश्च

किं सिध्यति ? भगवान् तस्मै सद्गतिं दद्यात् युष्मभ्यञ्च दुःखसहनक्षमताम्। मित्र ! अहम् अचिरादेव त्वां द्रक्ष्यामि । अस्तु ।

शोकोपहतो भवन्मित्रम्,
धर्मव्रतः ।

7. (विषयः—दीपमालाविषये मित्रं प्रति पत्रम्)

केशवनिकेतनम्,
यमुनानगरम् ।
तिथिः.........

प्रियमित्र दिनेश !

सप्रेम नमोनमः ।

तव मधुरं पत्रं लब्धम् आसीत् । ततो दीपमालापर्व उपस्थितम् । इदानीं त्वां दीपमालाविषये लिखामि । मित्र ! कुटुम्बमध्ये स्थित्वा मया सहर्षं दीपमाला मानिता । अस्माकं गृहस्य अन्तः बहिश्च प्रकाशस्य पुञ्ज एव पुञ्ज उद्गतः आसीत् । क्वचिद् वलभा (बल्ब) एव वलभा विविधरूपा विविधाकाराश्च, क्वचिन् मोमवर्त्तिका एव मोमवर्त्तिकाः सामान्याश्च सुगन्धापूर्णाश्च, क्वचित् तैलदीपा एव तैलदीपाः क्वचिच्च गर्भधाः एव गर्भधाः (गरबड़े) इति काचन अपूर्वा एव प्रकाश-सम्पत् पर्यभिलक्षिताऽभवत् । वीथीमध्ये बहुविधानां स्फोटानां विस्फोटनम् महत् कुतुहलम् अजनयत् । बमरूपा विस्फोटास्तु भीतिं प्रसारयन्तः रणोत्सवमिव प्रथयन्ति स्म । अमावस्यारात्रीः प्रकाशरात्रिरिव अदृश्यत् । विविधानि मिष्टान्नानि स्वयम् अपि अस्माभिः यथाकामं खादितानि, वत्सलानां मित्राणां गृहेषु च परिवेषितानि । श्रीमतो रामचन्द्रस्य अयोध्यानिवर्त्तने प्रारब्धा इयं दीपमाला अद्यापि हिन्दुगृहेषु अपूर्वेण उत्साहेन मान्यते इति कोऽत्र संशयः। मन्ये भवताऽपि ससमारोहं दीपमाला परिजनैः सह मानिता भवेत् । मित्र ! इयं दीपमाला युष्माकं सर्वेषां हिताय कल्पेत । अस्तु ।

पत्रोत्तरं देयम् ।

सस्नेहो भवन्मित्रम्,
आलोककुमारः ।

8. (विषयः—पितुः पदोन्नतिकारणात् पत्रं मित्रं प्रति)

60, अलकापुरी,
लक्ष्मणपुरम् ।
तिथिः.........

प्रिय मित्र नरेश !

सप्रेम नमोनमः ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । मित्र ! त्वम् इदं विदित्वा प्रसन्नो भविष्यसि यन् मम पूज्यः पितृमहोदयः महाविद्यालये चिराय सेवाकार्यं कुर्वन् साम्प्रतं तस्यैव प्राचार्यपदं आरोहितः तिष्ठति । पितृमहाभागस्य सुनिष्ठया कृतानां सेवानां कारणात् सानुमत्ता-

(मीनियारिटि), कारणात्, लोकप्रियताकारणात्, स्वशिक्षाविषयस्य परमनैपुण्य-कारणात् च तेन इदं स्पृहणीयं पदं लब्धम् इति सर्वेऽपि प्राध्यापकाः छात्राश्च तत्प्रशंसा-भाजः तिष्ठन्ति। अस्माकं गृहे पर्वकाले इव अनेके जनाः आयान्ति, आशिषश्च आयुष्याय कुर्वन्ति। अयं कालः अस्माकं हर्षस्य पराकाष्ठायाः काल इति न मे वाग् वा लेखनी वा वर्णयितुं समर्था। अस्तु; सर्वेभ्यः सादरं नमोनमः। पत्रोत्तरं देयम्।

भवदीयः प्रियसुहृत्,
प्रकाशदेवः।

9. **(विषयः—आचार्याय सद्वृत्तप्रमाणपत्रार्थम् पत्रम्)**

6, पटेल नगर,
यमुनानगरम्।
तिथिः.........

मान्य महानुभाव !

सादरं नमोनमः।

सेवायाम् इदं निवेदनं यत् मया अस्मिन् एव वर्षे भवतां विद्यालयात् प्रावेशिकी परीक्षा द्वितीयश्रेण्याम् उत्तीर्णा। मम विद्यालयस्य-क्रपाङ्कः दशम्याः कक्षायाः त्रिंशत् इति अभूत्। मया पादकन्दुकक्रीडायां सदा प्रमुखो भागो गृहीतः। मम आचरणं विशुद्धं लोकप्रियञ्च आसीत्। इदानीम् अहं काञ्चन सेवां लब्धुं यत्नवान् अस्मि। कृपया यथाशीघ्रम् मम सद्वृत्तप्रमाणपत्रं मम परिचयेन प्रेषणीयम्।

सबहुमानम्,

भवदीयः प्रियः शिष्यः,
वासुदेवः।

10. **(विषयः—विद्यालयस्य पर्यटनकार्यक्रमे अनुमतिहेतोः पितरं प्रति पत्रम्)**

छात्रावासः।
तिथिः.........

पूज्यपाद पितृमहोदय !

सादरं नमोनमः।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु। सेवायाम् इदं निवेदनं यत् अग्रिममासे विद्यालयस्य पञ्चदश अनध्यायदिवसेषु पञ्चदशच्छात्राः संभूय पर्वतेषु पर्यटनं कुर्युः इति निश्चितं जातम्। पर्यटनप्रदेशश्च शिवालयस्य (शिमला) पर्वतमण्डलस्थानानि। तत्र पद्भ्याम् एव मुख्यतः पर्यटनं भविष्यति। क्वचित् क्वचित् यानेन चापि। व्ययार्थं मम समीपे पर्याप्तं धनं विद्यते अतः एतदर्थम् अहं तत्रभवताम् अनुमतिं याचे। एको वरिष्ठः प्राध्यापकः अस्माभिः संगतो भविष्यति तेन न काऽपि चिन्ता कार्या। कृपया अनुज्ञा-नातु तत्रभवान्।

गृहे सर्वेभ्यो नमोनमः।

भवदीयः प्रियस्सुतः,
सत्यप्रकाशः।

11. (विषयः—अध्ययनोपेक्षावशात् कनिष्ठभ्रातरं प्रति पत्रम्)

छात्रावासः।
तिथिः.........

प्रियभानो !

सप्रेम आशिषः।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु।

पितृपादस्य पत्रं प्राप्तम्। तेन सहैव विद्यालयात् त्वया ये अंकाः प्राप्ताः तेषां विवरणपत्रम् अपि प्राप्तम्। तत् पठित्वा दुःखं जातम्। तव सर्वेषु अपि विषयेषु हीनाः अंकाः। तत् कथम्? त्वम् अरोगः तिष्ठसि ततोऽपि हीना अंका इति आश्चर्यकरम्। मन्ये त्वं नियमेन न प्रवर्त्तसे, समयञ्च व्यर्थम् अतिवाहयसि। त्वया समयेन एव सर्वं कर्त्तव्यम्। पठनस्य समये पठनं, खेलनस्य समये खेलनं, विश्रामस्य समये विश्रामश्च कर्त्तव्यः। मनसा पठनीयम्। ये पठन्ति ते उच्चैः पदं, सुखं, धनं यशश्च लभन्ते। समयो व्यर्थकार्येषु न नाशनीयः। नियमस्य पालनं सततं कुरु ततः उच्चैः अंकान् प्राप्स्यसि। अस्तु, किंचित् कालोर्ध्वम् अहं पत्रेण सूचनीयः का तव समयपालनात् उन्नतिः इति। आदरणीयाभ्यां पितृभ्यां सप्रेम नमोनमः।

भवदीयो भ्राता,
यज्ञप्रियः।

12. (विषयः—मित्राय विवाहस्य निमन्त्रणपत्रम्)

5, धर्मनगर,
अम्बाला छावनी।
तिथिः.........

प्रियमित्र देश !

सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

मित्र ! अहम् इदं प्रसन्नतापूर्वकं ज्ञापयामि यत् मम विवाहः अग्रिममासस्य पञ्चम्यां तिथौ निश्चितो जातः। वरयात्रा च इतः अमृतसरं गमिष्यति। अहं त्वां प्रेम्णा पूर्वत एव ज्ञापयामि येन त्वम् अत्र त्रिचतुर्दिनानि पूर्वत एव प्राप्तः स्याः। त्वया अवश्यम् अत्र आगन्तव्यं वर्त्तते। नाऽत्र कस्याऽपि मिषस्य अवकाशो देयः। तव स्निग्धां संगतिं साह्यञ्च अहं कामये।

आदरणीयाभ्यां पितृभ्यां सस्नेहं नमोनमः।

अस्तु, तव पत्रोत्तरं प्रतीक्षमाणः

भवन्मित्रम्,
ध्रुवदेवः।

13. (विषयः—मैट्रिकपरीक्षोपरान्तं भगिनीं प्रति पत्रम्)

40, रघुनाथपुरी,
यमुनानगरम् ।
तिथिः.........

मान्ये भगिनि !

सादरं नमोनमः ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

भवदीयं पत्रम् प्राप्तम् । प्रावेशिकीपरीक्षायां सफलतायां भवद्वर्धापनपत्रकारणात् अनेके धन्यवादाः । इदानीम् अहं किं कर्त्तुम् इच्छामि इति भवत्या पृष्टं तद् भगिनि ! इदानीम् अहं पठितुं न इच्छामि यतो हि पठित्वाऽपि शीघ्रम् अर्थसिद्धिर्न दृश्यते । निजगृहस्य आर्थिकदशाम् उन्नेतुम् अहम् इच्छामि तच्च कस्यचित् शिल्पस्य शिक्षया ततश्च अभ्यासेन एव सम्भवं, नान्यथा । अहं विद्युत-शिल्पं शिक्षित्वा द्वयोः वर्षयोः उपरान्तं स्वतन्त्र-व्यवसायं कर्तुम् इच्छामि येन शीघ्रं अर्थसिद्धिः स्यात् । आदरणीयस्य पितृपादस्य अपि अत्र सम्मतिः । अस्तु, आवुत्ताय नमोनमः ।

ससम्मानं भवद्भ्राता,
धर्मवीरः ।

14. (विषयः—विवाहप्रस्तावस्य निषेधाय पित्रे पत्रम्)

10, आनन्दपुर,
सहारनपुर ।
तिथि.........

आदणीय पितृमहोदय,

सादरं नमोनमः ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

सेवायाम् इदं निवेदनं यद् भवता निजपत्रे यः विवाहप्रस्तावः मम समक्षं उपस्थापितः स मे न अभिमतः । तत्र कारणञ्च इदम्—स परिवारः धनेन अति सम्पन्नः, न च वयं तथा । तत्र तेषां बहवः सेवकाः ये दिवानिशं तेषां कुटुम्बिनां सेवां कुर्वन्ति । तेन च तत्र लोकः कर्मणि प्रायेण अनभ्यस्तः सुकुमारवृत्तिश्च तिष्ठति । तस्मात् तेषां सा कन्या अपि तादृशी एव भविष्यति । अस्माकं तु श्रमप्रधाने गृहे सर्वेऽपि स्वस्वकर्मणि अभ्यस्ताः, न च तस्मात् कोऽपि तथा सुकुमारवृत्तिः । तत् सा कन्या श्रमप्रधाने अस्माकं गृहे कथमिव चरिष्यति ? तेन ममायं विवाहप्रस्तावो नाभिमतः । मन्ये भवान् इदं युक्तियुक्तम् अस्वीकरणं मंस्यते । अस्तु पूज्यमात्रे नमः । भ्रातृभ्यो भगिनीभ्यश्च स्नेहः ।

भवदीयः प्रियः पुत्रः,
बलदेवः ।

15. (विषयः—परीक्षाप्रश्नपत्रसाधनविषये पितरं प्रति पत्रम्)

7, उत्तम छात्रावासः,
देहरादून।
तिथिः.........

आदरणीय पितृपाद !

सादरं नमोनमः।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु।

पूज्य पितः ! इदानीम् एव सम्पन्नायां नवमश्रेणीपरीक्षायां मया यद् यद् आचरितं तत् तत् भवत्-समक्षं उपन्यस्यामि। मया सावधानतया सज्जा कृता आसीत् तेन मम व्याकुलता न तथा आसीत्। परम् पुनरपि परीक्षाकालः कं न क्षोभयति ! मया संस्कृतस्य पत्रे व्याकरणांशः तु सम्यक् साधितः परं अनुवादांशो न तथा। इंगलिशपत्रे पुस्तकाधारितप्रश्नाः सम्यक् साधिताः, न परं शब्दैः वाक्य-रचना। प्रस्तावः सम्यक् लिखितः। ज्यामितिपत्रे न तथा संतोषः यथा बीजगणित-मध्ये। हिन्दीपत्रे सर्वं सम्यक् साधितम्। स्यान्नाम किंचित् अहं द्वितीयश्रेणीं प्राप्स्यामि इति मे मनः करोति। अस्तु, भवता चिन्ता न कार्या। अहम् अधिकतरं श्रमं पठने करिष्यामि।

आदरणीयायै मात्रे नमः। बालेभ्यः स्नेहः।

भवदीयः प्रियपुत्रः,
धर्मपालः।

16. (विषयः—कालघटिकां जन्मदिनोत्सवे लब्ध्वा पितृव्यं प्रति पत्रम्)

9, छात्रावासः,
भरतपुर।
तिथिः.........

आदरणीय पितृव्य,

सादरं नमोनमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

मम जन्मदिनोत्सवे भवद्भिः सर्वैरपि यः हर्षप्रकर्षः प्रकटितः तं स्मृत्वा स्मृत्वा अहम् अति सुखी भवामि। भवता मम कृते कालघटिका उपहारः दत्तः स च मे अति रुच्यः। समयस्य पालनाय घटिका मम सहायतां करिष्यति। मम अस्या अपेक्षा आसीत्। इदानीम् अहं अधिकतरं सर्वेषु दैनिककार्येषु नियमितो भविष्यामि। तेन च शरीरस्य ज्ञानस्य च पुष्टये अधिकं प्रयत्नं करिष्यामि। भवान् मम हृदयान्तस्तलात् उद्गतान् धन्यवादान् स्वीकरोतु। अहं सदा भवतां कृपादृष्टिं कामये।

पूज्यपितृव्यायै नमः। बन्धुभ्यः स्नेहः।

भवदीयः पुत्रः,
आनन्दकुमारः।

17. (विषयः—शुल्कदण्डक्षमार्थं प्राचार्यं प्रति पत्रम्)

राष्ट्रियविद्यालयः,
करनाल।
तिथिः………

श्री प्राचार्य महोदय !

सादरं नमोनमः।

निवेदनं इदं यत् गते दिवसे यदा अहं विद्यालयं प्राप्तः तदा मम समीपे अकस्मादेव प्रत्यभिज्ञानपत्रं (Identity Card) न आसीत्। ततोऽहं विद्यालयस्य शरीरशिक्षाप्रमुखेन निगृहीतः। भवता च तदवलम्ब्य अहं पञ्चरुप्यकशुल्कदण्डेन दण्डितः। मम समीपे सदैव प्रत्यभिज्ञानपत्रं गुटिकायां तिष्ठति स्म। परं ह्यः नववस्त्रपरिधानात् तत् गृहे एव विस्मृतम्। नाहं प्रकृत्या प्रमादी तेन प्रथमोऽयं मम दोषः क्षन्तव्यः शुल्कदण्डञ्च निरस्तं करणीयम् इति मे निवेदनम्।

भवदाज्ञाकारी शिष्यः,
गौतमः
12, क्रमांकः
दशमी श्रेणी।

18. (विषयः—विद्यालयात् दिनद्वयावकाशार्थं प्राचार्यं प्रति पत्रम्)

पूज्यप्राचार्यमहोदय !

सादरं नमोनमः।

निवेदनम् इदं यत् अस्य मासस्य तृतीयचतुर्थतिथ्योः मम भ्रातुः विवाहः स्थिरः। तस्मात् अहं तयोः तिथ्योः अवकाशं याचामि। अतः कृपया दिनद्वयस्य अवकाशः मह्यं देय इति प्रार्थना।

भवदीयो विनीतः शिष्यः,
युगराजः
10, क्रमांकः
अष्टमी कक्षा।

19. (विषयः—राष्ट्र-सेवा-शिविर-वृत्तान्तं भगिनीं प्रति)

10, छात्रावासः,
लक्ष्मणपुर।
तिथिः ……

आदरणीये भगिनि !

सादरं नमोनमः।

भवत्पत्रं प्राप्तम् । धन्यवादः ।

भगिनि ! वयं ह्य एव राष्ट्रसेवाशिविरात् निवृत्ताः । समीपस्थे जयपुरग्रामे इदं शिविरम् आयोजितम् अभवत् । अस्मिन् ग्रामे हिन्दवश्च मुस्लिमाश्च वसन्ति । तत्र वयं द्वादशछात्राः गताः । शिविराध्यक्षः अस्माकं संस्कृताध्यापक आसीत् । ग्रामः सामान्याकार एव । वयं यत्र कुद्दालान्, क्षुरप्रान्, करण्डान् च आदाय गताः । तत्र इतस्ततो वीथीषु गर्ता आसन् । ते अस्माभिः दूरतो मृत्तिकां खात्वा करण्डान् भृत्वा नीत्वा पूरिताः । क्वचित् क्वचित् इष्टकान् योजयित्वा मार्गाः सुगमाः कृताः । अत्र दक्षिण-भागे दरिद्राणां वसतिः । तत्र अवकरस्य उच्चया अस्माभिः दूरीकृताः, स्थानानानि शोधितानि च । सायं वयं ईश्वरप्रार्थनोध्वँ गीतानि गायामः स्म तत्र च बालाः, युवानः वृद्धाश्च उपस्थिता भवन्ति स्म । अस्माभिः सप्तसु एव दिवसेषु ग्रामस्य कायाकल्पः कृत इति ते अस्मान् बहु प्रशंसन्ति स्म । वयमपि "परिश्रमः प्रार्थनाकल्पः" "Work is worship" इति मत्वा तत् तत् सर्वं सहर्षं कृतवन्तः । अन्तिमदिने अस्माकं सम्माने ग्रामीणैः शुद्धं सारवत् च भोजनं दत्तम् । डिण्डिमनादश्च सुचिरं कारितः । तत ऊर्ध्वं वयं ततो निवृत्ताः । अस्तु ।

पूज्याय आवुत्ताय नमोनमः ।

भवदीयः प्रियभ्राता,
नरेन्द्रः ।

20. (विषयः—धनलिप्सा दुःखदायिनी इति विषये मित्रं प्रति पत्रम्)

8, प्रेमनगर,
करनाल ।
तिथिः........

प्रियमित्र जगदीश !

सप्रेम नमोनमः ।

तव पत्रं प्राप्तम् । धन्यवादः ।

तव मानसिकं कष्टं ज्ञात्वा अहमपि चिन्तापरो जातः । त्वम् अर्थलाभाय दिवानिशं चेष्टमानः तिष्ठसि । यद्यपि तव निजः विस्तृतः आवासोऽस्ति यत्र फलवृक्षाः, शाकार्थं भूमिश्च तिष्ठति । तव मासिक आयोऽपि त्रिसहस्रं वर्तते । पुनरपि दिवानिशं कथं धनार्जने व्यापृतोऽसि ? न त्वम् अधमर्णः । पुत्रास्ते कर्मकुशला आज्ञापराश्च । तदपि उत्तरोत्तरं कर्मवृद्धये चेष्टमानस्त्वं व्याकुलस्तिष्ठसि । लोभस्तु निरन्तो दुःखदायी च । सन्तोषं किंचिद् भज । तदैव त्वं शान्तः स्वस्थश्च स्थास्यसि । नान्यथा । इदानीं तव पुत्रा अपि अर्जयन्ति इत्यतः सन्तोषो विधेयः । अर्थसंयमं कुरु । अन्यथा स्वास्थ्यहानेः आशंका । अस्तु, किमधिकं बुद्धिमत्सु ? आदरणीयभगिन्यै नमोनमः । प्रिय-पुत्रेभ्यः स्नेहः ।

भवदीयः विश्वस्तः सुहृत्,
कमलाकान्तः ।

21. (विषयः—उद्योगप्रदर्शिनीविषये भ्रात्रे पत्रम्)

छात्रावासः,
मध्यमार्गः,
दिल्ली।
तिथिः.........

आदरणीय भ्रातः !

सप्रेम नमोनमः।

तव पत्रं प्राप्तम्, धन्यवादः।

गतमासे अत्र एका उद्योगप्रदर्शिनी आयोजिता अभवत्। ताम् द्रष्टुं बहवो जनाः प्रतिदिनम् आगच्छन्। वयमपि छात्राः संभूय तत्र वारद्वयं अगच्छाम। तत्र अनेके कक्षा आसन्। पृथक्-पृथक् कक्षेषु पृथक्-पृथक् दर्शनीया उद्योगा आयोजिता आसन्। ग्रामोद्योगानाम् तत्र प्रधानता आसीत्। एकस्मिन् कक्षे तैलनिष्कासनाय कोल्हू-यन्त्राणाम् प्रदर्शनम् आसीत्। शक्त्या प्रचलताम् प्रपीडनकानाम् तत्र प्रदर्शनम् आसीत्। तन्तुभिः वस्त्रनिर्माणाय तुरीवेमादीनाम् प्रदर्शनम् शक्तिचालितवस्त्रयन्त्राणाम् च प्रदर्शनम् अक्रियत्। अन्यत्र उपानत्-निर्माणस्य प्राचीनः, यन्त्रशक्त्याऽर्वाचीन च विधिः प्रदर्शितः अभवत्। एकत्र पुरातनहलानाम्, सहैव च आधुनिकहलानाम् प्रदर्शनम् कृतमास्त। मुद्रणयन्त्राणाम् एकस्मिन् कक्षे प्रदर्शनम् आसीत्। एकत्र कर्गलनिर्माण-विधिः अन्यत्र च पात्राणाम् निर्माणस्य कक्षः अतिष्ठत्। इत्यमेव काष्ठासननिर्माणोद्योगश्च अभवत्। एते उद्योगा धनार्जनाय अल्पधनविनियोगेन स्वावलम्बतया स्वतन्त्रता-जीविकामार्गं बोधयन्ति इति श्लाघ्याश्च लाभकराश्च। अस्तु। पितृभ्यां नमोनमः।

भवदीयः प्रियो भ्राता,
हरीशः।

22. (विषयः—विद्यागौरवविषये भगिनीं प्रति पत्रम्)

30, अलकापुरी,
कानपुर।
तिथिः.........

स्नेहमयि भगिनि !

सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

तव पत्रं लब्धम्। वृत्तञ्च ज्ञातम्। पठने प्रवृत्तिः कथं न अस्ति ? कथं विरागो जायते पठनात् ? इदं तु नोचितम्। पश्य, विद्यालाभात् नरः विद्वान् जायते। विद्वान् च सर्वत्र यशो लभते धनञ्च। अपठितस्य किं जीवनम् ? अपठितः केवल शरीरेण श्रमं कर्त्तुं शक्नोति। परं तेन समाजे गौरवस्थानं न लभते। विद्वान् विचाराणाम् प्रसारणात् समाजस्य नेता भवति परम् अविद्वान् तु अनुयाता एव तिष्ठति। पठितः विद्याकारणात्

सर्वत्र पूज्यते न तु तथा अपठितः। तत् भगिनि ! विचारशीला भव। समयं मानय। पठने च अप्रमत्ता तिष्ठ। यदि त्वं पठिष्यसि अहं तुभ्यं बहूनि रुचिकराणि वस्तूनि दास्यामि। अस्तु। सर्वे त्वाम् स्नेहेन अभ्युक्षन्ति।

सस्नेही भवदीयो भ्राता,
सत्येशः।

23. (विषयः—क्रीडादिवससमारोहस्य वर्णनपरं मित्रं प्रति पत्रम्)

छात्रावासः,
बिजनौर।
तिथिः.........

प्रिय मित्र रमेश ?

सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

तव स्निग्धं पत्रं लब्धम्। धन्यवादः। अस्माकं विद्यालये परह्य एव क्रीडादिवसः मानितोऽभवत्। तत्र विद्यालयस्य छात्रा अपूर्वेण उत्साहेन विविधासु क्रीडासु भागग्रहम् अकुर्वन्। प्रधावनप्रतियोगितायाम् पञ्चदश छात्रा अभूवन्। अन्ते तु दश एव छात्राः क्षेत्रप्रतियोगितायाम् अवशिष्टा अतिष्ठन्। कबड्डीप्रतियोगितायाम् कैश्चित् कलात्मकविधिना क्रीडित्वा दर्शकानाम् मनांसि हृतानि। मल्लयुद्धे विश्वमित्रः निजप्रतिद्वन्द्विनम् अतिरिच्य स्थितः। स च अपूर्वाणि लाघवानि अदर्शयत्। फलप्रतियोगितायाम् कन्यासु अपूर्वम् औत्सुक्यम् आसीत्। कन्यकाः पुनः पुनः फलानि दन्तैः ग्रहीतुं चेष्टमाना अतर्कितं दृश्यं उपास्थापयन्। द्विचक्रिकाप्रतियोगितायां एकस्तु क्षेत्रे एव मूर्च्छितः पतितः। मन्दचालप्रतियोगितायाम् अपूर्वस्य धैर्यस्य संयमस्य च प्रदर्शनं दृष्टम्। संगीतमयासनप्रतियोगितायाम् अवर्णनीयं कौतूहलं आसीत्। सर्वे तद् दृष्ट्वा अति मोदमानाः गताः। अस्तु। कदाचित् अत्रापि आगन्तव्यम्।

भवदीयः प्रियमित्रम्,
आज्ञापालः।

24. (विषयः—स्वाध्यायप्रगतिविषयकं भ्रात्रे पत्रम्)

1, छात्रावासः,
दिल्ली।
तिथिः.........

आदरणीय भ्रातः ?

सप्रेम नमोनमः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

भवत्पत्रं प्राप्तम्। धन्यवादः।

यथा भवान् मां लिखति अद्य अहं भवन्तं स्वाध्यायविषये लिखामि।

अहम् आदरणीयस्य पितृमहोदयस्य, भगिन्याः, भवत्पत्रैश्च प्रेरणाम् लब्ध्वा

इदानीं हृदयेन पठने संलग्नोऽस्मि। मया प्रमादः त्यक्तः। अहं सर्वं कालम् विभाज्य सर्वेषु पाठ्यविषयेषु दत्तावधानोऽस्मि। प्रातः प्रातराशात् ऊर्ध्वं संस्कृतपाठस्य आवृत्तिं करोमि। अनुवादं लिखामि। स्मरणीयं स्मरामि च। ततः नागरिकशास्त्रं (Civics) पठामि, लिखामि च। रात्रौ भोजनात् ऊर्ध्वं आंग्लभाषां, हिन्दीभाषां च पठामि। इतिहासे नाधिकं श्रमम् अपेक्षते। स तु विद्यालये एव स्मर्यते। इदानीं मया गुरुजनवचनात् प्रतिविषयं अग्रिमपाठा अपि पूर्वं एव वाच्यन्ते विचार्यन्ते च। अहं स्वयम् अनुभवामि यत् अहं स्वाध्यायम् अधीयन् प्रगतिपरो भवामि। भवता इदानीं चिन्ता न कार्या। अस्तु। मातृपितृभ्यां नमोनमः।

भवदीयः प्रियो भ्राता,
साधुरामः।

25. (विषयः—शुल्क-क्षमा-प्रार्थना-पत्रम्)

श्रीमन्तः मान्याः प्रधानाचार्यमहोदयाः,
रामजस-उच्चतर-माध्यमिक-विद्यालयः,
दिल्ली।

मान्यवर,

तत्रभवताम् सेवायाम् सविनयम् निवेदनं 'यत् मम पिता प्रारम्भिकपाठशालायाम् अध्यापकः। पञ्चाशदधिकद्विशतपरिमिते मासिके वेतने परिवारस्य चतुर्णाम् सदस्यानां पालनपोषणं करणीयम् अतिकठिनम्। विद्यालयस्य शिक्षाशुल्कस्य प्रदानेन तु तत् कठिनतरं भवति। उच्चतरं शिक्षां प्राप्य धनोपार्जनयोग्यम् आत्मानं कर्तुं मे बलवती इच्छा वर्तते। यया प्रेरितोऽहं कठिन-परिश्रमेण अध्ययनं कुर्वन् गतवर्षे नवमकक्षायाः परीक्षां प्रथम-श्रेण्याम् उत्तीर्णवान्। धनाभावेन कदाचित् मदध्ययने व्याघातः न स्यात्। अतः मम प्रार्थना यत् शिक्षा-शुल्क-प्रदानात् मां मोचयित्वा अनुगृह्णन्तु अत्रभवन्तः।

श्रीमतां वशंवदः,
पार्थसारथिः।
दशमकक्षायाः छात्रः।

दिनांक—8-4-85

26. (विषयः—विदेशस्थाय पत्रमित्राय मैत्री-सम्बन्ध-स्थापना-विषयकं पत्रम्)

10, आनन्दपुर,
अम्बाला छावनी।
तिथिः.........

महाभाग,

निवेदनं इदं यत् हिन्दुस्थान-समाचारपत्रात् मया भवन् नाम ज्ञातं परिचयश्च लब्धः। यथा भवान् विदेशस्थः पत्रमित्रतां इच्छति तथैव अहमपि इच्छामि। यथा भवान् इंगलिश-साहित्यरसिकः तथैव अहमपि अत्र भारते वसन् संस्कृतसाहित्यरसिकः। यथा भवान् आयुषा प्रौढः तथैव अहमपि प्रौढः। यथा भवान्

घनाय सविशेषं महत्त्वं न ददाति, अहमपि तथैव विचारयामि। भवान् प्रबुद्ध-प्रकाशित-अन्तःकरणानां जनानां संगतिं कामयते। अहञ्चापि तत्स्वभाव एव। अहम् अनेकैः प्रकारैः भवता सह अनुगुणः। तत एव अहं भवता सह पत्रमित्रतां कर्त्तुं प्रवृत्तः।

कृपया निज-व्यक्ति-विषये, निजरुचिविषये, निजपरिवारविषये च समयात् समयं उदारतया लिखनीयं यथा आवयोः मित्रता परस्पर-पत्राचारेण उत्तरोत्तरं वर्धेत।

भवतां, परिवारस्य च स्वास्थ्यं समृद्धिं च कामयमानः

भवतां सुहृत्,
दिवाकरः।

27. (विषयः—स्वमातुलं विदेशात् आत्मागमन-सूचकं पत्रम्)

विदेह-भवन,
चौड़ी बाजार,
लुधियाना।
तिथिः.........

मान्य मातुल !

सादरं नमोनमः।

भवान् इदं ज्ञात्वा प्रसन्नो भविष्यति यत् अहं अस्मिन् एव सप्ताहे स्काटलैण्डतः भारतं प्राप्तोऽस्मि। अहं अत्र एक एव आगतोऽस्मि। यात्रा-व्ययाधिक्य-कारणात्, शीतर्त्तु-कारणाच् च न अन्यः कोऽपि मया सह आयातः। चिराय सुदूर-प्रवासात् अन्तर्हृदये उत्सुकता-उद्भवो भवति स्म स्वबन्धून् द्रष्टुम्। तेनैव अन्यैः अविदित एव अहम् अत्र प्राप्तोऽस्मि।

मां लब्ध्वा मातापितरौ अति प्रसन्नौ जातौ। भगिन्यः अपारां प्रसन्नतां प्रकटयन्ति। लघुभ्रातरः मम संगं एव न त्यजन्ति। सखायः स्नेहेन आपूर्णा दृश्यन्ते।

निवर्त्तनात् पूर्वं अहं भवद्-दर्शनाय अवश्यं भवत्-आवासं प्राप्स्यामि। मम आदरणीया मातुलानी कीदृशी? बालनां कः समाचारः? मान्यायै मातुलान्यै प्रणामाः। बालेभ्यः स्वस्ति।

पत्रोत्तर-प्रतीक्षापरः।

भवतां वत्सलः,
प्रभातकुमारः।

28. (विषयः—परीक्षासाफल्यात् मित्राय वर्धापन-पत्रम्)

सावित्री-सदन,
माडल टाउन,
पानीपत।
तिथिः.........

प्रिय प्रमोद !

सस्नेहं नमोनमः।

तव परीक्षासफलता-पत्रं अद्यैव लब्धम्। तव सफलतां ज्ञात्वा मम महान् सन्तोषः, प्रसन्नता च। यद्यपि त्वं आकस्मिकज्वरवशात् चिराय कष्टं गतः, तथापि परीक्षायां द्वितीयां श्रेणीं लब्ध्वा उत्तीर्णवान् इति सत्यं प्रमोदकरः। त्वं मम च मम पारिवारिकजनस्य च साधुवादान् अर्हसि। तव सफलतापत्रं लब्ध्वा अचिरमेव मिष्टान्नं आनाय्य मया तस्य वितरणं गृहे च बहिश्च कृतम्।

मित्र ! येषु विषयेषु त्वया हीना अंकाः प्राप्ताः तेषु उत्तरवर्त्तिन्यां परीक्षायां अधिकान् अंकान् प्राप्तुं सततं सावधानस्तिष्ठ। तथा यतस्व यथा स्वास्थ्यं च पठनञ्च निरन्तरं समबलं एव तिष्ठेत्। एकः एकस्य कारणात् हीनो न स्यात्।

पत्रस्यान्ते अहं ते पुनरपि भूयोभूयः वर्धापनं कामये। मातापितृभ्यां सादरं नमोनमः।

तव स्निग्धमित्रम्,
आकाशदीपः।

29. **(विषयः—कन्या-शिक्षा-महत्त्व-बोधन-पुरस्सरं महाविद्यालये शिक्षा-लाभाय कन्याया मातरं प्रति पत्रम्)**

क्रान्ति-कुटीर,
दरियागंज,
दिल्ली।
तिथिः.........

मम सातिशयमान्यमातः !

भूयो भूयो वन्दे।

अत्र कुशलं तत्रास्तु।

निवेदनं इदं यत् आगामिनि शिक्षासत्रे अहं विद्यालयं प्रविश्य पठेयं इति मम मनसि पुनः पुनः जायते। मातः ! कन्यकाभिः भविष्यज् जीवने गृहस्य भारः, समाजस्य भारः, राष्ट्रस्य च भारः वहनीयो भवति यथा पुरुषैः। यथा एकस्मिन् योक्त्रे द्वौ वृषभौ भवतः तथैव गृहस्थयोक्त्रे स्त्रीपुरुषौ भवतः। सुपठितस्य बहुज्ञस्य पुरुषस्य इव स्त्री अपि सुपठिता बहुज्ञा यदि भवति तत् युगलं शोभते नान्यथा। सम्यक् पठिता बहुज्ञा स्त्री न केवलं गृहस्य भूषणं, समाजस्य, राष्ट्रस्य चापि भूषणम्। तस्मात् महाविद्यालये शिक्षार्थं प्रवेशाय अहं भवदनुमतिम् इच्छामि। कतिपयदिनोर्ध्वं अहं भवत्-समीपे प्राप्स्यामि ततश्च निजं इष्टं अधिकाधिकैः तर्कैः समर्थयिष्यामि। अस्तु ! गृहे भ्रातरः भगिन्यश्च मम वचनात् प्रेम्णा सभाजनीयाः।

भवत्प्रिया दुहिता,
आशा।

30. (विषयः—विदेशस्थं मित्रं प्रति भारतर्त्तु-विषयकं पत्रम्)

प्रयाग-भवन,
महाराणा प्रताप मार्ग,
झाँसी ।
तिथिः.........

प्रिय डेविडपाल !

स्निग्धस्निग्धा नमस्काराः ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

तव पत्रं प्राप्तम् । धन्यवादाः । त्वया भारतदेशस्य काश्चन विशेषताः पृष्टाः । तत्र ऋतुविषयकविशेषताम् अद्य अहं अस्मिन् पत्रे लिखामि ।

मित्र ! अस्माकं देशे षड् ऋतवः प्रतिवर्षं चक्ररूपेण भ्रमन्ति । प्रत्येकं ऋतुः द्वाभ्यां द्वाभ्यां मासाभ्यां तिष्ठति । यथा नटा दर्शकाणां मनोरञ्जनाय वेद्याम् आयान्ति यान्ति च तद्वत् प्रकृतेः वेद्यां एते ऋतवः वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर-नामानः आयान्ति च यान्ति च । एभिः द्वयोः द्वयोः मासयोः कृते भूमौ निजा निजा विचित्रता पर्यवतिष्ठते । भवतां देशे तु न तथा यथा अत्र । ऋतूनां यः उदारतया समयात् समयं भारते अवतारः तथा अन्येषु देशेषु पूर्णतया न । यदा भवान् अस्माकं देशं प्राप्य एकवर्षाय अत्र वासं करिष्यति तदा मम कथनस्य सत्यता प्रमाणिता भविष्यति । अस्तु । निजपारिवारिका मद्वचनेन आदरेण प्रेम्णा च सभाजनीयाः । काचन सेवा सूचनीया ।

भवन् मित्रम्,
प्रदीपकुमारः ।

31. (विषयः —मित्राय भगिनीविवाहस्य निमन्त्रणपत्रम्)

938, सेक्टर 4,
अरबन एस्टेट,
गुरुग्रामः,
तिथिः.........

प्रियमित्र राहुल !

सप्रेम नमोनमः ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

इदं प्रीतिदायकं वृत्तं भवन्तं सूचयित्वा अहम् अतीव आनन्दम् अनुभवामि यत् मम भगिन्याः विवाहः अग्रिममासस्य दशम्यां तारिकायां, बुधवासरे, निश्चितः जातः । वरयात्रा लक्ष्मणपुरात् आगमिष्यति । अहं त्वाम् प्रेमपूर्वकं पूर्वतः एव ज्ञापयामि येन त्वम् अत्र त्रिचतुर्दिनानि पूर्वतः एव प्राप्तः स्याः । भवता पितृभ्यां सह अत्र अवश्यमेव

आगन्तव्यम् । भवतां स्निग्धां सङ्गतिं साहाय्यं च अहं कामये । आदरणीयाभ्यां पितृभ्यां सस्नेहं नमोनमः ।

तव पत्रोत्तरं प्रतीक्षमाणः

भवत्सुहृद्,
प्रियव्रतः

32. (विषयः—पित्रे रक्तदानशिविरविषयकं पत्रम्)

परीक्षाभवनम्,
तिथिः.........

पूज्य पितृमहोदय,

चरणवन्दना !

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

अद्याहं भवन्तं निवेदयामि यद् अस्माकं विद्यालये गतसप्ताहे रक्तदान-शिविरम् आयोजितम् । अस्माकं कक्षाप्रमुखः अध्यापकः श्रीमान् रामचन्द्रः शिविरस्य प्रमुखः आयोजकः आसीत् । सः प्रथमं स्वरक्तं प्रायच्छत् । तदनन्तरम् दशमकक्षायाः पञ्च छात्राः एतस्मिन् शुभकार्ये अग्रेसराः अभवन् । तेषाम् उत्साहं दृष्ट्वा मम मनसि अपि भावना सञ्जाता तथा च मयाऽपि स्वरक्तम् प्रदत्तम् । आशासे यद् भवान् मम एतां भावनां दृष्ट्वा प्रसन्नो भविष्यति । अहं पूर्णतया सकुशलोऽस्मि । चिन्तया अलम् ।

भवदाज्ञाकारी,
क ख ग ।

33. (विषयः—मित्राय एशियाडक्रीडाविषयकं पत्रम्)

परीक्षासदनम्,
तिथिः.........

प्रियसुहृद् राजवीर,

सस्नेहं नमस्कारः ।

भवान् सम्यक् जानाति एव यद् कतिपयवर्षपूर्वं भारतदेशे नवम-एशियाड क्रीडा-महोत्सवः सम्पन्नः आसीत्, तत्र च एकविंशतिः क्रीडाः क्रीडिताः । तासु क्रीडासु अश्वारोहणधावनप्रतियोगिता मह्यम् अतिशयरुचिकरा आसीत् । भारतदेशः एतस्यां क्रीडायां त्रीन् स्वर्णपदकान् एकं कांस्यपदकम् एकं च रजतपदकमपि जितवान् । भारतीयाः अश्वारोहिणः अतीव उत्साहवन्तः आसन् ते च वायुना सह आकाशे उड्डयमानाः प्रतीयन्ते स्म । अद्यापि अहं तद् दृश्यं अधुनैव घटमानम् इव अनुभवामि । पत्रोत्तरे भवान् अपि स्वरुचिकरक्रीडाप्रतियोगितायाः विषये लिखतु ।

पितृभ्यां सादरं नमः !

तव अभिन्नहृदयः,
क ख ग ।

34. (विषयः—मित्राय जन्मदिवसविषयकं पत्रम्)

परीक्षाभवनम्,
तिथिः.........

प्रिय ललित !

सस्नेहं नमस्कारः ।

यद्यपि वार्षिकपरीक्षायां व्यस्ततया भवता मम जन्मदिवसोत्सवस्य आनन्दः न लब्धः, तथापि आशासे यत् तस्य वर्णनं पठित्वा अपि भवान् कमपि आनन्दम् अवश्यमेव लप्स्यते । केकक्न्तनस्य आधुनिकरीतिं विहाय यज्ञहोमादिकस्य भारतीयसरणिम् अवलम्ब्य अयमुत्सवः मानितः। पुरोहितमहोदयेन आशीर्वचसा ममोपरि सर्वेषाम् आगन्तुकानां पक्षतः शुभकामना प्रदत्ता। तदनन्तरं हास्यरसपूर्णम् एकलाभिनयम् दृष्ट्वा सर्वे अमन्दम् आनन्दम् अन्वभवन् इत्यलम् ।

विस्तरेण तु परस्परं मिलित्वा बोधयिष्यामि । इति ।

भवदीयमित्रम्,
क ख ग ।

34. (विषयः—पित्रे परीक्षावर्णनविषयकं पत्रम्)

परीक्षाभवनम्,
तिथिः.........

पूज्य पितृमहोदय !

सादरं प्रणामाः !

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

भवदीयं पत्रम् अद्यैव लब्धम् । भवान् मम परीक्षाविषये ज्ञातुम् अतीव आतुरोऽस्ति । अद्य मया गणितविषये सर्वे प्रश्नाः सम्यक् समाहिताः इति विज्ञाय भवान् अतीव प्रसन्नो भविष्यति । आशासे यदहम् अन्यविषयेष्वपि प्रश्नानां सन्तोषप्रदानि उत्तराणि दास्यामि । भवताम् आशीर्वादेन अहं कक्षायां प्रथमं स्थानं लप्स्ये, प्रथमश्रेण्यां च तु नूनं सफलो भविष्यामि । न काऽपिचिन्ता भवद्भिः करणीया ।

मातृचरणयोः मम प्रणामाः सन्तु !

भवदाज्ञाकारी पुत्रः,
क ख ग ।

अभ्यास

(परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न)

1. स्वाध्ययन-प्रगति-विषयकं पत्रं पञ्चाशच्छब्दपरिमितं ज्येष्ठमात्रे निवेदयत ।
2. 'राष्ट्रीय प्रेम एव जीवने सर्वस्वम्' इति विषयभभिलक्ष्य विदेशगतं मित्रम् संस्कृतभाषया एकं पत्रं लिखत ।

अथवा

स्वविद्यालये आयोजितं क्रीडादिवससमारोहम् वर्णयन् स्वमित्रम् प्रति संस्कृतभाषया एकं पत्रम् लिखत।

3. (*i*) स्वपितुः पदोन्नतिसमाचारमाकर्ण्य यः आनन्दः अनुभूतः, तस्य वर्णनम् पत्रमाध्यमेन एकवाक्येन विधीयताम् पत्रम् मित्रस्य समीपे प्रेषणीयम्।

(*ii*) निम्नलिखित महानुभावसम्बोधने कीदृक् शब्दप्रयोगः कर्त्तव्यः ?—
राष्ट्रपतिः पितामहः, जिलाधीशः।

(*iii*) प्रधानाचार्याय शुल्कक्षमार्थम् प्रार्थनापत्रमेकं लिखत।

4. अधोलिखितेषु एकं विषयमधिकृत्य स्वभगिनीं संस्कृतभाषया पत्रम् लिखतः—

(*i*) विद्यायाः गौरवम्; (*ii*) धनस्य लिप्सा सर्वदैव दुःखदायिनी; (*iii*) उद्योगप्रदर्शनी; (*iv*) राष्ट्रसेवाशिविरः।

5. अनुपस्थितिक्षमाविषयकपत्रम् पञ्चाशच्छब्दपरिमितम् प्राचार्यमहोदयाय निवेदयत।

6. विद्यालयतः अवकाशं ग्रहीतुं संस्कृतभाष्या पत्रमेकं लिखत।

अथवा

दीपावलीमहोत्सवमाश्रित्य स्वमित्रम् प्रति संस्कृतभाषया पत्रमेकं लिखित।

7. कतिपयपुस्तकप्रेषणार्थं कमपि पुस्तकप्रकाशकं पञ्चाशच्छब्दपरिमितं पत्रम् संस्कृतभाषया लिखत।

8. छात्रावासजीवनविषयमधिकृत्य स्वपितरं प्रति संस्कृतभाषया पत्रमेकं लिखत।

अथवा

स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः वर्णनपरं स्वमित्रम् प्रति संस्कृतभाषया पत्रमेक लिखत।

9. स्वपित्रे परीक्षाशुल्कप्रदानाय पञ्चाशद्-रूप्यक-प्रेषणार्थं पत्रम् लिखत।

10. स्वमातुलं पितृव्यं वा विदेशात् आत्मागमनसूचनां दातुं एकं पत्रम् लिखत।

11. कन्यानां शिक्षायाः महत्त्वमुपदर्शयन् स्वमात्रे महाविद्यालये स्वशिक्षाग्रहण-सम्मतिप्राप्त्यर्थं पत्रम् लिखत।

12. मित्राय परीक्षासाफल्यमुद्दिश्य वर्धापनपत्रम् लिखत।

13. अपरिचिताय पत्रमित्राय (Penfriend) मैत्रीसम्बन्धम् स्थापयितुं स्वाभिलाषं दर्शयन् पत्रम् लिखत।

14. विदेशस्थितं निजमित्रं भारतदेशस्य ऋतूनां विषये संस्कृतभाषया एकं पत्रं लिखतं।

विदेश में रहने वाले अपने मित्र को भारत की ऋतुओं के विषय में संस्कृत में एक पत्र लिखो।

Write in Sanskrit a letter to your friend in foreign country describing him various seasons of India.

15. स्वपरीक्षाविषये पितरं प्रति पञ्चाशच्छब्दपरिमितं पत्रं लिखन्तु ।
अपनी परीक्षा के विषय में पिता जी को पचास शब्दों में पत्र लिखिए ।
Write a letter to your father describing your examination in not more than fifty words.

16. अवकाशाय प्राचार्यमहोदयं प्रार्थनापत्रमेकं पञ्चाशच्छब्दपरिमितं लिखन्तु ।

17. विद्यालय में आयोजित रक्तदान शिविर के विषय में संस्कृत में अपने पिता जी को तीस शब्दों में पत्र लिखिए ।

18. अपनी बहिन के विवाह के अवसर पर अपने मित्र को संस्कृत में निमन्त्रण-पत्र लिखिए ।

19. एशियाड खेल प्रतियोगिताओं में अपनी रुचि की प्रतियोगिता के विषय में संस्कृत में तीस शब्दों में अपने मित्र को पत्र लिखिए ।

20. अपने जन्मदिवस के उत्सव के विषय में अपने मित्र को तीस शब्दों में पत्र लिखिए ।

—o—

7

परिशिष्ट

(व्यावहारिक शब्दकोष)

अँगीठी—हसन्ती
अंगूर—द्राक्षा, मृद्वीका
अञ्जीर—अञ्जीरम्
अखरोट—अक्षोटम्
अचार—सन्धितम्
अण्डरवीयर—अर्धोरुकम्
अदरक—आर्द्रकम्
अनार—दाडिमम्
अभ्रक—अभ्रकम्
अमचूर—आम्रचूर्णम्
अमरूद—अमृतफलम्, दृढ़बीजम्
अरहर—आढकी
अलमारी—मञ्जूषा
आँवला—आमलकी
आक—अर्कः
आडू—आर्द्रालुः
आढत—अभिकरणम्
आरामकुर्सी—सुखासन्दिका
आलू—आलुः
आलू बुखारा—आलुकम्
इन्फलुएंजा—शीतज्वरः
इमली—तिन्तिडीकम्
इलायची—एला
उडद—माषः
उबटन—उद्वर्तनम्
ऊँट—उष्ट्रः
ऊखल—उलूखलम्
ऊनी—राङ्कवम्
एजेण्ट—अभिकर्ता
एरंड—एरण्डः
ओढनी—प्रच्छदपटः
ओवरकोट—बृहतिका
कंगन—कङ्कणम्
कंघी—प्रसाधनी
कंठा—कण्ठाभरणम्
कधा—स्कन्धः
ककड़ी—कर्कटिका
कचालू—पक्वालुः
कचौड़ी—पिष्टिका
कटहल—पनसः
कटोरा—कटोरम्
कटोरी—कटोरा
कड़ा—कटकः
कद्दू—कूष्माण्डः
कनफूल—कर्णपूरः
कनेर—कर्णिकारः
कप—चषकः
कब्ज—अजीर्णः
कमरख—कर्मरक्षम्
कमीशन—शुल्कम्
कमीशन एजेण्ट—शुल्काजीवः
करेला—कारवेल्लः
करौंदा—करमर्दकः
कलम—कलमः
कलमी आम—राजाम्रम्
कलाकन्द—कलाकन्दः
काँच का गिलास—काचकंसः
कुंडल—कुण्डलम्
कापी—संचिका
कॉफी—कफघ्नी

काटून—उपहासचित्रम्
कील—कील:
कुतिया—शुनी
कुत्ता—श्वन्
कुप्पी—कुतू:
कुम्हार—कुलाल:
कुर्ता—कञ्चुक:
कुलफी—कुलपी
कुली—भारवाह:
कूड़ा—अवकर:
केकड़ा - कुलीर:
केतली—कन्दु:
केन्सर—विद्रधि:
केला—कदलीफलम्
केवड़ा—केतकी
कैंची—कर्तरी
कै—वमथु:
कोट—प्रावार:
कोतवाल—कोटपाल:
कोल्हू—रसयन्त्रम्
कोहनी—कफोणि:
कलर्क—करणिक:
खजूर—खर्जूर:
खप्पर—खर्पर:
खरबूजा—खर्बुजम्
खस्ता पूरी—शष्कुली
खाँसी—कास:
खाट—खट्वा
खाद—खाद्यम्
खिचड़ी—कृशर:
खिरनी—क्षीरिका
खीर—पायसम्
खील—लाजा:
खुमानी—क्षुमानी
खूँटी—नागदन्तक:
खैर—खदिर:
गंडासा—तोमर:
गगरी—गर्गरी
गजक—गजक:
गञ्जा—खल्वाट:
गडरिया—अजाजीव:
गद्दा—तूलसंस्तर:
गली—वीथिका
गाजर—गृञ्जनम्
गिरहकट—ग्रन्थिभेदक:
गिलास—कंस:
गिलोय—अमृतवल्लरी
गुझिया—संयाव:
गुलाब—स्थलपद्मम्
गूलर—उदुम्बरम्
गेंद—कन्दुक:
गेहूँ—गोधूम:
गोबर—गोमयम्
गोभी—गोजिह्वा
घाटी—अद्रिद्रोणी
घी—आज्यम्
घुंघुरू—किंकिणी
घेवर—घृतपूर:
घोंसला—कुलाय:
चकवा—चक्रवाक:
चकोतरा—मधुकर्कटी
चचेरा भाई—पितृव्यपुत्र:
चटकनी—कील:
चटनी—अवलेह:
चपत—चपेट:
चपरासी—लेखहारक:
चप्पल—पादुका
चबूतरा—चत्वरम्
चमचा—दर्वी
चमेली—मालती

चम्पा—चम्पकः
चम्मच—चमसः
चाकू - छुरिका, लवित्रम्
चाचा—पितृव्यः
चाय—चायम्
चावल—व्रीहिः
चिमटा—संदंशः
चिरौंजी—प्रियालम्
चिलमची—हस्तधावनी
चीड़—भद्रदारुः
चीनी—सिता
चील—चिल्लः
चुंगी—शुल्कः
चुगलखोर—द्विजिह्वः
चुन्नी - प्रच्छदपटः
चूल्हा—चुल्ली
चेचक—शीतला
चूड़ी—काचवलयम्
छज्जा—वलभी
छत—छदिः
छाता—आतपत्रम्
छुहारा—क्षुधाहरम्
छेनी—वृश्चनः
जमाई—जामातृ
जलेबी—कुण्डली
जस्त—यशदम्
जामुन—जम्बुः
जार—काचघटी
जिगर—यकृत्
जीजा—आवुत्तः
जीरा—जीरकः
जुकाम—प्रतिश्यायः
जुलाहा—तन्तुवायः
जूता—उपानह्
जूही—यूथिका

जौ—यवः
ज्वार—यवनालः
झाड़ू—मार्जनी
टकसाल—टङ्कशालः
टमाटर—रक्ताङ्गः
टब—द्रोणी
टाफी—गुल्यः
टिण्डा—टिण्डिशः
टिड्डी—शलभः
टीका—ललाटिका
टीन—त्रपु
टेलर—सौचिकः
ट्रैक्टर—खनियन्त्रम्
डबल रोटी—अभ्यूषः
डस्टर—मार्जकः
डाएबिटीज़—मधुमेहः
डाकगाड़ी—द्राक्यानम्
डाक्टर—भिषग्वरः
ड्राईक्लीनर—निर्णेजकः
ढोलक—ढोलकः
तकिया—उपधानम्
ततैया—वरटा
तन्दूर—कन्दुः
तपेदिक—राजयक्ष्मन्
तबला—मुरजः
तरबूज—तर्बुजम्
तवा—ऋजीषम्
तसला—घिषणा
तश्तरी—शरावः
तिजोरी—लोहमञ्जूषा
तिपाई—त्रिपादिका
तिमंजला—त्रिभूमिकः
तितली—प्लीहा
तुरही—तूर्यम्
तेन्दुआ—तरक्षुः

तेली—तैलकारः
तोप—शतघ्नी
तोरी—जालिनी
थाना—रक्षिस्थानम्
थाली—स्थालिका
दराँती—दात्रम्
दरी—आस्तरणम्
दर्जी—सौचिकः
दलाल—शुल्काजीवः
दहीबड़ा—दधिवरकः
दातुन—दन्तधावनी
दालमोठ—दालमुद्गः
दुनई—द्वितयी
दुकान—आपणः
दुकानदार—आपणिकः
देवर—देवरः
देवरानी—यातृ
देहली—देहली
धतूरा—धत्तूरः
धमुंश—क्रोटिशः
धूप—आतपः
धोती—अधोवस्त्रम्
धोबी—रजकः
नाइलोन—नवलीनकम्
नाती—नप्तृ
नारंगी—नारङ्गम्
नाशपाती—अमृतफलम्
नींबू—जम्बीरम्
नीम—निम्बः
पकौड़ी—पक्ववटिका
पटरा—लोष्ठभेदनः
पतीली—स्थाली
पाउडर—चूर्णकम्
पैंट—आप्रपदीनम्
पेन्सिल—तूलिका
बाल्टी—उदञ्चनम्
बिस्कुट—पिष्टकः
बेसन—चणकचूर्णम्
बैंकिंग—कुसीदवृत्तिः
बैडमिण्टन—पत्रिक्रीड़ा
बाजूबन्द—केयूरम्
ब्लेड—क्षुरकम्
ब्रुश—वर्तिका, रोममार्जनी
भाला—प्रासः
भिण्डी—भिण्डकः
भूसा—तुषः
मण्डी—महाहट्टः
मक्खन—नवनीतम्
मलाई—सन्तानिका
मसूर—मसूरः
मालपूआ—अपूपः
मिस्सा आटा—मिश्रचूर्णम्
मुसम्मी—मातुलुङ्गः
मूँछ—श्मश्रु
मूली—मूलकम्
मेंहदी—मेन्धिका
मेज—फलकम्
मोतीझारा—मन्थरज्वरः
मौसी—मातृष्वसृ
रजाई—नीशारः
रजिस्टर—पञ्जिका
रजिस्ट्रार—प्रस्तोतृ
रबड़—घर्षकः
रबड़ी—कूर्चिका
रसोई—रसवती
रूई—तूलः
रैकेट—काष्ठपरिष्करः
रोटी—रोटिका
लंच—सग्धिः, सहभोजः
लपसी—यवागूः

लहसुन—लशुनम्
लाख—जतुः
लिपस्टिक—ओष्ठरञ्जनम्
लीची—लीचिका
लोई—रल्लकः
लोटा—करकः
लोबिया—वन-मुद्गः
लोमड़ी—लोमशा
लौकी—अलाबूः
वकील—प्राड्विवाकः
वालीबाल—क्षेपकन्दुकः
शक्कर—शर्करा
शामियाना—चन्द्रातपः
शलगम—श्वेतकन्दः
शीशम—शिंशपा
शेरवानी—प्रावारकम्
शहतूत—तूतम्
सन्तरा—नारङ्गम्
सरकार—सर्वकारः
सलवार—स्यूतवरः
सलाद—शदः
साबुन—फेनिलम्
सामान—पण्यः
सामकिए—श्यामाकः
साहूकार—कुसीदकः
सिंघाड़ा—शृङ्गाटकम्
सिगरट—तमाखुवर्तिका
सिलाई मशीन—स्यूतियन्त्रम्
सीढ़ी—निःश्रेणी
सीमेण्ट—अश्मचूर्णम्
सीसा—सीसम्
सुराही—भृङ्गारः
सुपारी—पूगम्
सूती—कार्पासम्
सूद—कुसीदम्
सेक्रेटरी—सचिवः
सेम—सिम्बा
सोंठ—शुण्ठी
सोफा—पर्यङ्कः
सौंफ—मधुरा
सौदा—पण्यः
स्टूल—संवेशः
स्टेनलैस स्टील—निष्कलङ्कायसः
स्टेशन—यानावतारः
स्टेशन—यानावरोधस्थानम्
स्टोव—उद्ध्मानम्
स्लेट—अश्मपट्टिका
हंसुली—ग्रैवेयकम्
हथौड़ी—अयोघनः
हल्दी—हरिद्रा
हलुआ—लप्सिका
हलवाई—कान्दविकः
हॉकी—यष्टिक्रीडा
हाथीवान्—हस्तिपकः
हारसिंगार—शेफालिका
हिम, ओस—अवश्यायः, हिमम्
हिसाब—संख्यानम्
हींग—हिंगुः
हुक्का—धूम्रनलिका
हैजा—विषूचिका
हौज—आहावः

—o—